सम्पर्क प्रकाशन

मकान न. 130 131, सेक्टर 12 हनुमानगढ़ नगर 335512 (राज.)

# मुळकना मिलख
# मोवणी धरती

अमर नाथ कश्यप

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
रै आर्थिक सहयोग सूं प्रकाशित

मूल्य पच्चीस रुपये
संस्करण 1988
आवरण स्वामी अमित
वितरक प्रज्ञा भारती प्रकाशन पोकर क्वार्टर्स रानी बाजार बीकानेर
प्रकाशक सम्पर्क प्रकाशन मकान नं 130-131 सेक्टर 12
हनुमानगढ़ संगम 335 512 (राज )
मुद्रक साँखला प्रिंटर्स सुगन निवास चंदन सागर बीकानेर

MULKATA MINAKH MOVNI DHARTI (Rajasthani)
by Amarnath Kashyap Price 25/

# रचना सारू

बचपण सू इ घूमणे फिरणे रो चाव उमाव रयो। स'र र बगीचे सू शुरू हू'र नैडे कनै री हवेल्या, मंदिर, स्मारक गढ महल, संग्रहालय आद निरखण री शौक जाग्यो। अध्यापन अर रोवरिंग सू जुडया पछ देशाटन स्थाई वृत्ति बणगी। दव योग अर परस्थित्या इस्सी बणती रई क राष्ट्र रा उल्लेख जोग एतिहासिक अर सांस्कृतिक क्षेत्र ई नई प्रकृति रा अनुपम सुरम्य स्थळा र पदल भ्रमण अर ट्रेकिंग आद र व्यापक कार्यक्रमा र निरतर आयोजन रा मौका सुलभ हुता रया।

स्वानुभूत ज्ञान प्राप्ति रो भ्रमण सू आछो कोई दूजो स्रोत नी हूव। आखे मानखे न एक सूत्र मैं बाधणे, दूजा देशा अर धर्मा र बीच सामजस्य बणावणे अर प्रेम भाव री थापणा करण में भी यात्रावा महत्वपूर्ण भूमिका निभाव। स्यात इण कारण सू ई उपनिषदा सामान्य आदमी ने चरवेति चरवेति रो मत्र दियो। दुनिया र लागा न भौगोलिक, एतिहासिक, सांस्कृतिक अर धार्मिक ज्ञान देवण मैं भ्रमणशील विभूतिया रो स्मरण जाग योगदान रयो है। परिव्राजक महावीर अर गौतम, चीनी अध्येता, फाइयान अर मेगस्थनीज, प्रख्यात नाविक कोलम्बस अर वास्कोडिगामा, शोधकर्ता राहुल, सन्यासी भदत आनन्द अर साहित्यकार अज्ञेय प्रभत यात्रिया र भारी ऋण सू उऋण हूणा कद सम्भव है ? म्हारो निजी अनुभव है क खुली दीठ सू परतख देख्या तथ्य जीवन जगत रा न जाणे कित्ता अणजाण्या अणदेख्या रहस्या सू परत दर परत आवरण उठा'र इसान न सत्य रा दर्शन कराव है।

यात्रा रो पाथेय है मौज मस्ती, निर्भय विचरण अर अमिट जिज्ञासा सू ज्ञान अर्जित करणे री तीव्र लालसा। आ वृत्ति 'लागी छूटे ना' है। एक'र इण

रो आस्वाद जागग्यो तो दो चार महिना बाद निश्चित हू'र बठ नी सक। मन प्रयटन खातर उछाळा खाण लाग। देशाटन रो आणन्द 'गूगे रो गुड' ही है। इण ताईं तो कईज-'सब ठाठ पड्यो र जावेलो, जद लाद चलैलो बिणजारो।'

इण पुस्तक रो उद्देश्य आपणे सुरगे देश री नसर्गिक शोभा, पावन सस्कृति अर कलात्मक समृद्धि रो ववित्यपूण सरूप पाठका सामै राख'र उणा मैं आपरी माटी अर मानखे सू जुडण री तडफ जगाणो है। आ ललक इवलग पदा हूगी तो भ्रमणार्थी ने खुद तो देश अर सस्कृति र बारे मैं बौत कुछ सीखणे समझणे रो मौको तो मिलसी ही, दूजा लोगा न भी उण अनुभूत अर यथाथ ग्यान रो लाभ पूचसी। इण विनम्र अर मगल प्रयास मैं पुस्तक कित्ती कामयाब हुई है इ रो मूल्यांकन तो पाठका र ई हाथ है।

राजस्थानी भाषा म यात्रा विषयक लेख तो यदा कदा देखणे म आव पण इन विधा में एकळ पुस्तकाकार रूप मैं प्रस्तुत करणे रो ओ लघु प्रयास आपणे साहित्य री श्री वृद्धि ताईं भळ प्रेरक हू सक्यो तो मैं रचना न कृताथ मान सू।

—अमरनाथ कश्यप

# विगत

# धरती रो सुरग--काश्मीर

धरती र सुरग अर सिरज्ठी र सिणगार काश्मीर ने देखण रो उमाव किण न नी हुव। भारत र सिरमौर इण भू खण्ड री बरफ सू ढक्योडी चादी बरणा पवत चोटया कळ कळ निणाद सू बहती उछाळ खाती'र छोटा मोटा भाटा पत्थरा सू अठखेल्या करती नदया चारू मेर हरियाळी सू मडयोडी ऊची नीची घाटया झर झर झरता झरणा बगा बहता वाहळा अर जीवन री ऊचाई री घोषणा करता सीधा तण्या खडया देवदार चिनार अर चीड रा विरखा सू रू ब रू होणे री कल्पना सू घणे हरख अर आणद र भावा रो निपजणो सोभाविक ही है। जक ठौड री प्राकृतिक शोभा रा दरसण करण न भारत ई नद समूळ ससार रा घुमक्कड तरसता रवे, बिण रै साक्षात्कार खातर रवाना हुती बेळा दिल मे हरख री हिलोरा चालण लागी।

31 मई 1985 ने पठन कोट सू श्री नगर ताई बस सू रवाना हुया। औ सगळा मारग 400 किलोमीटर र अदाज है। जम्मू ताइ रो 108 कि मी रो मारग सपाट है। पठान काट स्यू ई चिनाव नदी सू निकळयोडी केई नहरा सडक र साथ साथ बवे। रास्ते मे बरसाती वाहळा माथ केई बडा बडा पुळ भी आव। लखनपुर मैं चूगी चौकी है जठ यात्रा कर देणो पडे। अठ सू थोडी चढाई भी सरू हुव। सडक र डावे कानी एक चोखो शिव मदिर दीस। कोई भी दोरी मुहिम सू पला मिदर देवला री थापना भारत री परम्परा र मुजीब है। सौभाग्य सू ई दिन आकाश मे बादळ वाइ छायोडी ही इण कारण यात्रा भळ घणी सोवणी बणगी ही। जम्मू ताइ री दा घण्टा री सवारी बात करता इ पूरी हुती लागी। मोटर ट्रास पोट अर परिवहन री दीठ सू जम्मू एक बडो केन्द्र है। अठ सू हिमाचल, पजाब कश्मीर आद जगावा खातर हजारू गाड्या

पी सक। कश्मीर जावणिया केई यात्री अठ भी रुक। कुद सू आगे बटोट नाम री जाग्या है। अठ रा प्राकृतिक सौदय बेजाड है। औ स्थान खासो ठडो है। यूथ होस्टल अर दूजा होटला म ठ'रण री चाखी व्यवस्था है। अठ सलाणी रात्री पडाव कर। बटोट मैं श्री नगर मारग मे कश्मीर री परसिध अर ऊँची पीर पजाल पहाडया है। आ परवत शृखळा जम्मू ने कश्मीर सू अळगी करण आळी भीत दाइ है। इ म ही बनिहाल परबत माथ जवाहर सुरग बणाई गई है। इ दुतरफा सुरग री लम्बाई 2½ मील है। भारत र तक्नीकी ज्ञान रो सुदर नमूनो इ ने क सका हा। इ र निरमाण सू कश्मीर रा 21 कि मी रस्तो कम हुग्यो अर राज मारग भी समूळ साल ताई खुल्लो रण लाग ग्या। सुरग पार कर्या पछ कश्मीर घाटी सर हुव। आगं र आखरी 2 घटा री यात्रा समतळ मारग मैं हुव।

बनिहाल सू 21 मील दूर अपरमडा नाम रो स्थान है जठ सू 8 मील री दूरी माथ वरीनाग रो स्रोत है। औ स्रोत ही कश्मीर री झेलम नदी रो निकास है। मुगल बादशाह जाहगीर र हुक्म सू हैदर नाम र इजीनियर 1612 ई म इण र चारूमेर एक अष्ट कोण तलाब बणवायो। औ ताळाव बीच मैं 56 फुट ऊडो है। घणी गहराई र कारण इण रो पाणी गैरे नीळे रग रो दीस। तळाब र बुण पर सिला माथ फारसी रो शेर लिख्योडो है। जिक रो मतळब है 'धरती माथ जदी कठ ई सुरग है तो वो अठेई ही है अठेई है, अठई है।' ताळाब र चौभीतें मे एक छाटो शिवाळय है। बारले पासे आछो बाग है जिण मैं गुलाब री फूटरी क्यार्‍या है। वेरी नाग सू पाछो ऊपर मुडा आणो पड। अठ सू सडक रो एक मारग अणत नाग हुतो पहल गाव जाव अर दूजो अवन्ती पुर अर पामपुर हुतो श्री नगर पूग। इ दूज मारग सू म्है श्री नगर पूग्या। यूथ हास्टल मैं आगूच आरक्षण हो बठ जा ठरया। लगातार 14 घटा री यात्रा सू थाक्योडा सगळा साथो यात्री पडता पाण इ सूग्या अर दूज दिन सूरज ऊग्या पछ घणी ताळ सू उठ सक्या।

1 जून री दापहरी म भोजन अर विश्राम र बाद तीज पौर चार वज्या परसिद्ध आदि शकराचाय र मिंदर रा दशन ताइ टुर्‍या। मिंदर

नगर सू उतराद म हजार पुट ऊचे डूगर माथे वण्योडो है। म्है केंद्रिय बजार, सचिवालय लाल चौक हुता हुया झेलम दरियाव र दूज छेडे पूग्या। सचिवालय माथ तिरग री जाग्या कश्मीर राज्य रो धण्डो लाग्योडो देख'र मन मैं खिन्नता हुई क आजादी मिल्या र इत्ता दिन उपरात भी समूळे भारत रो एक ध्वज औंजू भी नी हो सक्या है। सविधान मैं भी इण रो अळायदो स्तर वण्योडो है। झेलम र पार आगे मील डेढ मील रो रास्तो चाल'र पाछा पवत री पगडडी र मारग मू चढाई आरम्भ कीनी। आ चढाई सीधी ऊभी चढाई है जक सू दूरी थाडी हूणे पर भी ताण पड। ऊपर दा मिंदर है। एक शिवजी रो शिवालय है जिण मैं अष्टधात रा विशाल शिव लिंग स्थापित है। बगल मैं नड ही आदि शकराचाय री प्रतिमा आळो एक छाटो मिंदर है। कवत है क अठ ई आदि शकर अर बौद्ध पडित मडन मिश्र रो शास्त्राथ हुयो। जक मैं मिश्र न हरा र बौद्ध धम री जाग्या फेर हिन्दू धरम रा धण्डो गवर आखे भारत मैं फहरायो। शकराचाय री टकरी सू समूळी श्री नगर, सप दाई बळखावती झेलम शिकरा अर हाउस बोटा सू भरयोडी डल भील अर चार चिनारा रो अनूठो निजारो दीख। सिझ्या सात बज्या मिंदर र लारला सडक सू पाछा ऊतरया अर डल झील माथ पूग र नहरू पाक र मनचीत निजारे रो आणद लियो। रात र नौ बज्या पाछे होस्टल पूग्या। हाथ खाणो बणावत खात ग्यारह बजग्या। स थाक'र चूर होग्याहा पण पलड इ दिन र कायक्रम अर प्रकृति र साबणे रूप रा दशन कर म्हे सब थार निवासी घणा आणदित उत्प्रेरित हुया।

दि 2 जून न बस स्टड सू परसिध टनमग ताइ रवाना हुया। औ स्थान श्रीनगर सू 40 कि मी दूर है। अठ बस सू उतर र आगे गुलमग तातर पदल टुरया। अठ सू गुलमग ५ कि मी है। पहाडी चढाई खडी अर दोरी है पण सुस्ताणे वास्ते कोई बठयो नइ। राष्ट्र भक्ति रा गीत गाता रास्ता कटता देर नी लागी। 10 बज्या टनमग सू चाल्या हा 12 सू पला ई गुलमग पूगग्या। अठै एक ऊँची चटटान माथ महारानी मिंदर बण्योडो है। कन ई ठठे पाणी रो

क्षरणा वव। दोपहर रा भोजन अठ ई करयो। गुलमग रा मारग हर्यो भर्यो अर अनेक क्षरणा आळौ है। गुलमग में घरती माथ दूब अर फूला री पटया सी बिछयाडी ही। ओ स्थान अपणे नाम र मुजीव पुपप वाटिका दाई ही लाग। सरद्या अर बसत में तो इण री सोभा देखता ई वण। इण ठौड गोल्फ रा कई वडा वडा मदान है। आख ससार रा मानीता गोल्फ खिलाडी अठ भेळा हुव। हर साल केई वार अठ टूरनामेट हुव। अठ टूरिस्ट दफ्तर, यूथ हास्टल अर ठरण खातर केई आछा होटल है। गुलमग सू खिलनमग 6 कि मी है। आग री चढाई तो टगमग–गुलमग मारग सू भी घणी दोरी है। खिलनमग ऊची ऊची बरफ सू ढक्योडी पाहडया मू घिरयोडी है। जून जुलाई र गर्मी र मौसम में भी अठ बरफ रव। इण वरफ माथ स्लेजिग आदि तिसळण रा खेल गरम्या म चालता रव। खिलनमग री ऊचाई 11500 फुट है। अठ हमेशा ठडी अर तीखी पौन वैहती रव। परसिध अमरनाथ गुफा ने छाड र आ जाग्या कश्मीर र स सू ऊचा दरानीय स्थाना में प्रमुख है। अठ सवारी वास्ते टट्टू भी मिल। स्लजिग री जाग्या ताइ पूगण में टट्टू री सवारी रो आण द लियो। बरफ सू खल्ता वडा बूढा भी अठ आपर वचपण री याद ताजा करता दीस। दापहरी बाद 3 30 बज्या पाछा बईर हुया। सात मील री उतराई डेढ घटे सू भी कम में तय कर ली। 6 वज्या बस में बठया अर 7 ताई पाछा श्रीनगर यूथ हास्टल मे पूगग्या। थोडी ताळ विसराम र पछ भोजन वणा खा र अमीरा कदल, बादशाह चौक लाल चौक आद मुख्य बाजारा री घुमाई करण वास्त नीसरया। रात में 11 बज्या वापस आ'र सा सवया। मदान र समतळ इलाकें मे जदी इतरो घूमणा हुव ता थाक'र चूर हो जाता। पण पयटन रो उमाव अर देखण री जिज्ञासा र कारण इसी थकाण नी हुई। गुलमग री शोभा अर सुदरता री छाप ओजू भी एकात क्षणा मे मन में ताजगी अर फुरती रो सचार कर।

दि 3 जून न श्रीनगर र ससार परसिध बगीचा–निशात, शालीमार, चश्मेशाही अर हरवन न देखण रा कायक्रम राख्यो। दायू वखत रो भोजन

साथ ले र 10 बज्या बस सू चश्मेशाही वास्त निक्ल्या। यूथ होस्टल सू औ बाग 8 कि मी दूर है। मारग डलझील रै सारे सार चाले। सिकारा अर वडा बडा हाउस बोटा री सजी सवरी कतारा न देखता जो नई धाप। तिस्सी आखा टल मैं तिरता वामा चप्पू चलावता सलाण्या अर तेज रफ्तार सू दौडती मोटर बोटा र मनभावते निजारा न दिल मैं उतारण खातर ललचावती रवे। 15 मिन्टा मैं ई चश्मेशाही पूगग्या। भात भात र गुलाब र पुष्पा रो सातरो बगीचो है। मुगल गवरनर अली मदन ईन 1632 मैं बणवाया। कैव है क अठै शीतळ जळ रो झरणो पुराणै समय मैं वहतो हो पण आज वो रुकग्यो। करीब एक घटा अठ रुक र निशात बाग खातर रवाना हुया। निशात चश्मेशाही सू 3 कि मी की दूरी माथ है। जहागीर की बेगम नूरजहा र भाई आसफ खा इण रा निरमाण करायो। एक डूगर री ढाळ माथ दस चबूतरा पर चूडी उतार रूप सू औ बणायो गयो है। पहाड सू पाणी र झरणै नै नहर दाइ चबूतरे दर चबूतरे बीचो बीच निकाळ र डल झील म मिला दियो है। मुगल बगीचा मैं औ सगळा सू बडो कुदरती निजारा अर पेडा री हरियावळ सू भरयो पूरयो है। चरी खुमाणी, ग्लास, आडू अर बागू गासा जिसा रसाला सू सिगळो बाग लदयो रव। बाग मैं माळी ताजा फल बेचता रव। फूला री सुन्दर क्यारया अर झाडा री तरास काट'र लाइण सू सजायोडी वणगत सू बाग री सोभा म चार चाद लग्या दीख है। इण स्थान रा डढ घटा आणन्द ल र अर दोपहर रो भाजन अठई जीम'र गोठ रो लूठो आणन्द लेवता लवता 2 बजे र नड शालीमार बगीचे ताइ बईर हुया। औ बगीचो निशात सू 3 कि मी दूरी पर बण्योडो है। इण न निज मैं आप बादशाह जहागीर बणवायो हो। फूटरा पुष्पा अर रूखा री कतारा मनभावणी सोभा आळी है। बाग र बीचा बीच काळे मकराणे री बारादरी बण्योडी है, जिक र चारू मेर फवारा री कतारा निजारे की सोभा न दूणी करती दीस। बाग र पिछवाडे डूगर की आड म चारू कानी सोवणी वेल्या, फूल अर वनस्पति अर सामै लम्बी चोडी गरे पाणी आळी झील बाग न घणो मनमोवणो वणा देव है। प्रकृति रो खुल्लो कुदरती रगरूप इन्सान री कलापूण साज

सजावट सू और भी खिलतो निखरतो लाग। श्रीनगर रा लोग भी गरम्या रै दिना मैं इण सैं बागा मे घणी मात्रा मे सर ताई आवै है। साल भर वेसी सर्दी अर बरफ पडन र कारण एक तर सू अ लोग आपरै घरा टापरा म कद सा हू जाव है। इण लागा वास्ते भी आ मौसम घूमण फिरण री हुव। सैंकडा री सरया मैं पेशावरी सलवार कमीज परया टावर टावरी, माथ पर रेशमी स्काफ बाध्या, ढीला चोगानुमा कुर्ता व सलवार पर्‌याडी महिलावा चाय रा थरमोस अर नाश्ते पाणी रो सामान ल'र अठ गोठ मनावता निजर आव। अ नमकीन चाय पीव। इसान अर प्रकृति दोनू माथ अठ ठाकरजी री घणी किरपा है। अठ जिसा खूबसूरत मानखो अर कुदरत आख ससार मे इ ठौड ई देखणे मे आव है।

सिझ्या 4 वज्या हरवन ताइ रवाना हुया। हरवन शालीमार सू 5 कि मी आगो है। पहाडा र विच भेळे हुवण आळे पाणी न पाळ सू बाध'र झील रा रूप दे दियो है। बाध री भीत मैं पाणी र निकास खातर लो रा फाटक बणायाडा है जिण सू जरूरत मुजीब पाणी रोक्यो अर निकाळ्या जा सक है। इण झील सू ई श्रीनगर सर न पीणे रा पाणी मिळ। सुरक्षा री दीठ सू इण स्थान रा फोटा लेवणो मना है। चारू मर पहाडा सू घिरया हुण कारण झील रो निजारो अर डूगर माथ ऊचा सीधा तण्या खडा पेडा रो उणियारो पाणी मैं झावतो दीस। झील र सामै एक छाटो सा सातरो बागीचो भी बणा दियो है। सनाण्या र बठण ताइ बीच बीच मे लक्डी री बैचा भी बिछायोडी है। अठ सू पाछा घिरता डल झील माथ भळ आ र रुक्या। हरियावळ घाट्या अर चारू पास डूगरा सू घिर्‌योडी गरे नीले जळ री फूटरी आभा आळी डल श्री नगर रो सिणगार ही जाणो। 5 मील लम्बी अर $2\frac{1}{2}$ मील चौडी आ झील आपर नाम र मुजीव है। कश्मीरी भाषा मे डल रो मतळव पाणी री मोक-ळायत है। बताव क झील केई ठाड 80 फुट ताइ ऊडी है। इण झील मे हर वखत सज्या सवरया हजारू हाउस बोट अर सिकारा तिरता रवे जका इटली र वनिस नगर ज्यू श्रीनगर री सोभा न चार चाद लगती दरसाव। डल झील

री एक विशेषता आ है के इण म केई तिरता टापू भी है। इण टापुआ म सती नीपज पण अ टापू झील म धीम धीम सिरकता अर झूलता रव। सिञ्या पड़या इण म नगरीबल नाम रै टापू माथै थित नेहरू पाक भन मोवणा रोशनी म झिलमिल करतो जगमगातो गीत। हाउस बोटा री हजारू मन्मि राशाया सिगळ दृश्य न माहन वणा देव है। रोशनी रा रंगीन निजारा रूपाळा बगीचा, माय आधुनिक साज सजावट रो होटल, बगीचे मे बठण सातर पत्थर माथ नक्काशी र चोस काम री चौकया अर बैंचा री सुविधा हूण सू हररोज हजारू टूरिस्ट घूमण फिरण अर नौका विहार रो मजा लेवण न अठ आव। नहरू पाक सू अन्दाजन 2 कि मी दूर डल झील र एक दूज टापू र चारू कूणा माय चिनार का चार पड है। इणी कारण टापू न ई चार चिनार कव। सिकार सू अठ पूगीजे। जल क्रीडा रा आनन्द अर आप डाड चला'र दूजा सिकारा सू आम निकळण री होडाहोड मे घणा मजो आव। वय प्राप्त मा'टियार भी थाडी देर खातर भोळा निश्छळ टाबरा सरीसो बरताव करण लागग्या। 2 घटा ताई वाटिंग अर एक घटे साण नहरू पाक म सुदर निजारा रा दर्शन अवलोकण करणे रे उपरात रात्रि 10 बज्या होस्टल पूग्या अर भोजनादि र बाद विश्राम लीयो।

दि 4 जून न दिनुगै 8 बजा बस पकड र पहल गाव ताई रवाना हुया। मारग मैं पामपुर री बस्ती आव। अठ केसर री खेती हुव। केसर निपजणे रो समय नवम्बर रो महिनो है। बताव क केसर रा मिजर 2 या 3 डिगरी तापमान माथ अकुर। बस सू ई केसर र खेता री क्यारा दीसै। सगळ वातावरण म केसर री सुगध वाफर। पामपुर सू 18 कि मी आग अवन्ति पुर है। अठ प्राचीन काल र विशाल मिंदरा रा अवशेष है। इण खण्डरा री खुदाई रो लूठो काम बा री श्रेष्टता रो गुण गावतो जाण पड। अ मिंदर कश्मीर र राजा अवन्तिवमन (853 888 ई) र समय रा है पण भारत री पुराणी स्थापत्य कला रे वडपण रा जीता जागता नमूना है। अवन्तिपुर सू 22 मील आग अच्छावला नाम रो फूटरो बगीचो है। राजा अक्ष (426

486 ई ) कश्मीर मे राज करता हा । वा र नाम सू ई आ वस्ती वज । मुगल वादशाह शाहजहा री बेटी 1640 ई मै इण ठाम औ वगीचो वणवायो। अपुठै डूगरी सू एक यरणो वहतो इण वगीचे मैं आवै । इण झरणे न एक छोटी नहर रो रूप दे दियो है। बीच बीच मैं फवारा रो उछाळ भरतो निजारो देखणे मैं आव है । पाणी रो वाहळो, फुनडा भरी क्यार्‌या, रसाल सू लद्‌या विरख अर कटया सवरया झाडा र कारण वाग रो रूप घणो निलरयोडो लाग । अठ सू 10 मील री दूरी पर कोकर नाग रो सुदर झर्‌णो है । पश्चिम दिशा री पहाडी सू पाच छ धारा मैं तेज वैहतो झरणो फूट अर आग चाल'र मिल र एक छोटी नदी दाइ ववण लाग जाव । इण र चौतरफे फल्यो वगीचो स्वास्थ बढाणे आळो है । इण वास्ते कोकरनाग चोखो शिविर स्थल गिणीज । गर्मी री रत मे सलानी अठ तम्बुआ मैं रवे । श्री नगर जावण खातर कोकर नाग सू पाछो अनत नाग आणो पड । अनत नाग श्री नगर सू 34 मील दूर है । अठ दो चरना है । एक ठड पाणी रो अर दूजो गधक रै गरम पाणी रो । ठेडे पाणी रो स्रोत एक तलाब मै पड जक रो निजारो मावणा है । तळाब मैं छोटी बडी केई तरा री मछल्या तिरती रैवे है । इण ठाम शिव, राधा किसन लछमीनाथ अर दुर्गा माता रा केई मिंदर है । अनूठोपण औ हे क किसन जी री मूरती अठ गौर वरणा है । गधक र झरण सू अठै कुष्ठ रोग रो इलाज हुवे । झरणे र एडे छेडे चिनार रा विरख है । विरखा री ठडी छाव मैं लोग कम्पिग रा आण द उठाव । अनत नाग सू 2 मील दूर मातण्ड तीरथ है जठ 5 वी शताब्दी मैं राम दित्य रा वणवायाडा चासा सूय मिंदर है । 8 वी सदी मैं ललितादित्य इण रो जीर्णोधार करायो । परसिध तीरथ अमर नाथ रा यात्री इण स्थान न बौत पवित्र मान है अर अठ र तळाब मै स्नान कर है । बड तीरथा दाई अठ रा पण्डा वस ठहरता पाण बईया लिया आपणे आपणे जिजमाना रा पता ठिकाणा पूछता अर लिखता दीस है । जे केई यात्री रा पुरखा माय सू कोई पले कदेई अमर नाथ री याता गयोडो हुव ता वारा नाम तिथ्या सन सवत समत लिखयोडा इणा मै मिल जाव। इण पण्डा री यादास्त वौत तगडी हुव है । मिंदर र सामो साम एक प्राइमरी स्कूल है । वस र पुगता

ड् स्कूल रा धुड माटी गू भरयोडा भाळा अर गवोत्री टावर याम्या न अळग सू इचरज मू देखण न ऊभा होयग्या। म्हार बुलाणे पर दो टावर भाग भाग' र पाणी री बेतळी नळ गू राजी राजी भर ल्याया। अद ताइ क्लास री घटा नइ बाजी स टावर याम्या र अेडे छेडे मडराता रया।

2 वज्या र नडे लीदर नदी र सार मार पहलगाव कानी भाग बढया। लीदर रो बहाव खासो तेज है अर पाट घणा चौडा है। बदरीनाथ मारग मैं अलकनन्दा अर मदाकिनी जिया कद तेज अर कद धीमी गति सू बव, उण भात ही लीदर भी कद ता गभीर अर कद चपल गति सू बवे। श्री नगर सू 16 मील दूर लीदर र पूर्वी घाट माथ समुद्र री सतह सू 6000 फुट री ऊचाई पर चार मेर ऊचा अर बरफ सू ढक्या पहाडा सू घिरयो पहलगाव एक घणो आछो छोटो सो कस्बो है। बरफीली चोटया सू नीसरती ठडी हवाया र कारण जून र महिन मैं भी अठ रो मौसम बोत सुहावणो हो। कश्मीर र देखण जोग अर स्वास्थ वधक स्थाना मैं पहल गाव रो ई पलो नम्बर है। दूर दूर ताई ऊचा घणा दरखत अर बरफ सू ढकयोडी पवत चोटया न देखता जी नई धाप। खासी देर लीदर न किनार कुदरती निजारा रो आणन्द लेणे र पाछे कस्बे र बाजार मैं आया। बाजार म अखरोट बिदाम अर मेवा री खासी दुकाना है। लकडी री कारीगरी रो सजावटी सामान गरम कपडा अर ऊनी वस्त्रा री दूकाना ई वेसी है। सलान्या खातर घुडसवारी रा टटटू भी अठ किराये मिल। पहलगाव मैं यूथ हास्टल, रेल्वे रेस्ट हाउस अर छोटा वडा पचासू हाटल ह। चाय नास्ते रा ढाबा अर होटल भी बोत है। पहनगाव सू इ अमरनाथ री आखी दुनिया मैं मशहूर यात्रा वास्त चदन वाडी शेष नाग अर पच तरणी हो र रस्तो जाव। टूरिष्ट हट अर तम्बू आद भी अठ किराये मिल। यात्री अठ सू तारसार, कोल्हाई री परसिध ग्लेशिअर आद जगावा री यात्रा्वा न भी टुर। इ ताइ कुली टटटू अर डाडा आद री भी अठ समूळी व्यवस्था है। टूरिस्ट बगले मैं रात ने विसराम करयो। नव वज्या रात तक अठ खासी ठड ह जाव अर बजार दूकाना अर

हाटला न बढा दवे। आगले दिन भोर मैं छ बज्या पाछा पठान कोट ताइ रवाना हुया। इण भात एक हफ्ते री अनूठी यात्रा रै उपरात आपणे घरा सातर पूठा चाल्या। पण आज ताइ भी जद जद इण यात्रा रो चितराम निजारा घूमें धरती रै परतख सुरग रो चित्र सिनेमा री रील दाई आख्या सामै घूम जाव है। कश्मीर सरीखो दूजो फूटरो स्थान भारत तो कइ दुनिया री दूजी ठौड भी कम ही दीखण मैं आव।

# देवतावा री घाटी-कुल्लू मनाली

प्राकृतिक सौं दय मैं काश्मीर सू टक्कर लेणें वाळी जदी भारत मे कोई दूजी जाग्या है तो वा है कुल्लू घाटी। चारू मेरे ऊंचा पहाडा सू घिरयोडी देवदार अर चीड र दररता सू भरी अर अणजाणी दूरया सू उछाळा ल'र वहती आवती व्यास नदी र सारे सार छोटी वडी वस्तया म मीला ताइ फल्याणी शात अर सुरगी इसी ठोड कठ कठई देखण न मिल। कुल्लू घाटी रो रूप भिनख्या र जीवण काल दाइ मौसम मुजीब बदळतो रवै। गरमी हुव या बिरखा अठ र पहाडा री शोभा देखण जोग हुव। बसत र महिना मैं घाटी रा वगीचा सेव चरी अर आलू बुखारा सू लद्या रग बिरगा दीस तो बिरया म घाटी सफेद मटमैला अर काळा बादळा री रम्मत री चौक बण जाव। सितम्बर अक्टूबर मैं देवदार अर फर रा रूखा री पत्या कसूवळ अर सोनालिया रगा सू भर जाव। मतलब औ क बारू मास अठ र दश्या मैं सुपन सी ताजगी रव।

कुल्लू चडीगढ सू 277 कि मी दूरी माथ बस्यो सलाण्या रो सुरग है। दूजा हिल स्टेशना दाइ भीड भडाके हाके अर गन्दगी रा परभाव औजू अठ नइ है। बस सू बिलासपुर सुदरनगर अर मडी हू'र जाणो पड। मडी हिमाचल प्रदेश रा एक चोखा सुदर पहाडी कस्बो है। अठ उत्तराद सू ब र आणें आळी उहल अर पूरब कानी सू आवण आळी व्यास रा सोवणो सगम है। मडी सू दो सडका फट। एक जोगेन्दर नगर हू र धरमशाळा जाव। दूजी कुल्लू मनाली हू र राहताग दर्रे नीकळ। रोहताग र पार भारत री सीमा रा अतिम क्षेत्र लाहौल स्पीती आद है। सम्पूरण मारग टेढो मेढो घेरदार है।

एक कानी ऊंचा डूगर है तो दूज कानी मदी मू आगे सगळे मारग में व्याम सड़क र सारे सार बव। नदी में जळ प्रवाह रा निजारा पळ पळ बदळता दीस। कठई ता इण रा पाट सासो चौड़ो है ता कठैई छोटो अर मरडो है कठई गभीर गजन सुणीजे ता कठइ शात अर नीरव बहाव दीसै। मदी मू म्यामो आग लरजी नाम री जाग्या सू करीब 30 35 किलो मीटर दूर कुल्लू सू पला उण र दिखणाद में मुतर गाव है। इण ठाम सू करीब 25 कि मी मार्थ मणिकरण वस्ती है जठ गरम पाणी रा चस्मा है। जमीन फाड़'र बुदबुद करतो इतो गरम पाणी अठ नीसर क इण में एक सग हाथ नी घाल्यो जा सक। बद्रीनाथ दाइ अठ नो ज पतील में चावळ माग र ऊपर सू बी... मूह बद कर'र इण उकळते जळ में टर देव ता चावळ आपै पक जाव। अठ सिक्खा री एक सुदर गुरुद्वारा भी बण्योड़ा है जक में जातरूया न ठहण जातर आवास अर जीमण ताइ भोजन निबरचा मिलै। जातरी आपरी मन्या माफ चाव तो चढ़ाप में या दान माफ मन माफिक राशि अर्पित कर सकै। कुल्लू री एक दूजो करिश्मो अठ देवण नै और मिल। अठै ... में गरम पाणी इ पाणी रा चस्मा है ता डेमा रै मार मार 10 15 फुट नीचै पावती गगा रा हिम शीतल जळ बव। मणिकरण मैं छोटी-सी वस्ती है। ... 40 50 घर हुमी। म मकान ... रा ... है ... सू बण्या पाणा माथ ऊभा मन्या है। ... रै नीव पाणी वैता रैव। घग र लार घणी बनस्पत्या सू लदया ऊचा ... री ... है। पावती गगा मुतर वाला जठ माह सब उप ठाम म ... पूर ... रा पूतरी पुळ है। अठ पारवती गगा रो ... ठठाळ जाणो ... विराट ... ... मैं हर मा ... आव मन में रोमाच हुण लाग है। कुल्लू जाण वाळा पर्यटका नै आ स्थान जरूर देखणो चाहिजै। पाछो मुतर आ र मनी मारग सू कुल्लू आणा पडै। ... कुल्लू पुगण में करीब 13 घटा रो समय लाग। जे मणिकरण पार्ड रव ता रात्रि पडाव गुरुद्वार म कर र ... दिन और म करीब ... कुल्लू पुग मक है। ... मणिकरण म गर्मी विसराम ताई ...

देवतावा री घाटी-कुल्लू मनाली

आगले दिन उगता ई जल्दी वर्दर हू'र 7 वज्या कुल्लू पूगग्या। राजकीय विश्राम गृह चौक में ई बस स्टैंड र सार ई है। इण में आवास सार ठरण री व्यवस्था करी।

कुल्लू 20 25 हजार री एक छोटी वस्ती है। अठ जिले मुख्यालय रो दफ्तर है। एक माध्यमिक महाविद्यालय भी अठ है जक में आसपास रै पाहड़ा क्षेत्रा रा बालक भी पढणन आव। अठ रो बाजार छोटो सो है। कुल 100 125 दूकाना हुसी। पण लाव कलावा अर दस्तकारी री दीठ सू अ खासी सम्पन्न है। अठ काफी तादाद मैं कुल्लू टोपी अर कुसारी कव जकी टाप्या बण। पगा मैं परण रा केई तरा रा जूता अर पगरख्या भी बणाई ज। पट्टू नमदा गुदमा पट्टी अर कसीदाकारी रा लूठो काम हुव। अमै केई सहकारी सस्थावा भी इण उद्योगा न बढायो देवण खातर बणगी है। शहद, फल अर फळा र रस री बिक्री भी चाखी मात्रा मैं हुय। कुल्लू रा सेव तो आसे ससार मैं प्रसिद्ध है। कुल्लू र अमरी अर डिलीसियस सवा रो तो देश सू बार निर्यात भी हुव अर विदेशी मुद्रा री कमाई हुव। कस्ब र बीचाबीच धालपुर रो बडो विशाल हर्यो भरयो मैदान है। इण मैदान मैं ई कुल्लू रा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति रा सामाजिक सास्कृतिक त्यौहार हुव। अठ रै लोगा न नत्य सगीत रो खूब शौक है। थाडा बरस पला ताइ तो लोक नत्या मैं लुगाया आम तौर सू अर खुलेपण सू भाग लेती हो। पण आजादी पछ गलत सामाजिक बधना अर रुकावटा र कारण अमै इण री जाग्या छोटा मोटा स्थानीय नतक मण्डल बणग्या है जिण मैं एक परिवार रा या आपस र मित्र परिवारा रा लोग लुगाया भाग लेव। अणजाण अपरिचित याग्या न भी नत्य मैं आपणै साथ लेणै मैं इण लोगा नै घणो हरख हुव। कुल्लू री स्त्रिया बोत मेहनती अर लगनशील हुव। खेता बागा अर घर रा घणखरो काम लुगाया ही कर। पुरुष वग तो प्राय चावळ सू घर बणायोडी लुगरी नाम री दारू पीता अर हुक्के न गुडगुडावता घर या दूकाना मैं बठा दीस। इण लुगरी री आ विशेषता भी बताइजै क इण सू मस्ती तो आव पण दूजो शराब दाइ आक्रामक

उत्तेजना या उन्माद इण सूं नी हुवै। अठै रै बाजार में दस्तकारी री जिंसां बणती अर बिकती भी दिखाई पड़ै। देश री दूजी ठौड़ां सूं अठै रै नारी जीवन में सहजता अर उन्मुक्तता बेसी दरसण में आवै। अठै रो आम आदमी सरल अर धरम परायण है। धोखा धड़ी अर चोरी जारी री घटनावां भी बौत कम सुणन में आवै।

कुल्लू रै दशहरा रो मेळो अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति रो मेळो मानीजै। सगळा हिमाचल अर देश रा दूजा प्रान्तां रा लोगां अर विदेशां रा सैकड़ूं हजारूं कलाप्रेमी भी इण नै देखण नै आवै। हिमाचल सरकार 1967 सूं कुल्लू रै दशहरा नै राजकीय त्यौहार रै रूप में मनावै। 1970 में रूमानिया री नृतक मण्डली पैली बार इण में शामिल हुई। ज्यां पाछै तो अनेक देशां रा कलाकार इण उत्सव में भाग लेवण तांई बराबर अठै आवै। अन्तर्राष्ट्रीय भाईचारे अर सद्भाव रो इण सूं आछो और कोई रास्तो नी हुवै। हिमाचली महिलावां चाव सूं चाला रंग बिरंगा गाभा, चांदी रा बहू भांत गहणा अर रेशमी रूमाल माथै बांध रै हरख उमाव सूं इण में भाग लेवै। कुल्लू घाटी में मिनख जरी री पट्टी वाळी लाल गाढ टोपी पैरै। आ मखमल सूं बण्याड़ी हुवै। अठै रा लोग दूजा पहाड़ी लोगां दाईं भोळा भाळा अर मीठा बोलण वाळा हुवै। ठेठ ग्रामीण आंचल रा लोग तो घणा शर्मीला अर संकोची हुवै। आ बात साची है कै जठै रै माणस पर कुदरत रो प्रभाव घणो है अर जठै सभ्य रवायत आळी समाज व्यवस्था रा दरसण नी हुया है वठै रा लोग सहज सरल खुशी अर तनावहीन स्वाभाविक जीवन जीवै है।

कुल्लू रै दशहरा रा दो आयाम है। एक तो इण रो धार्मिक अर आस्तिक स्वरूप अर दूजो इण रो सांस्कृतिक आयोजन। दशहरा साथै धार्मिक आस्था उमाव अर महिमा सूं [illegible] क्षेत्र प्रेरित होवै। सम्पूर्ण कुल्लू घाटी में छोटी-बड़ी पहाड़ियां रा गांव आप आपरै गांव देवतावां री मूरत्यां नै रथां अर पालकियां में अठा रै कुल्लू रै परसिद्ध रघुनाथजी रै मिन्दर में होता



देवतावां री पालकी-कुल्लू में

ढमाका अर सुरह्या री आवाज र बीच पावन हरजस गावता लाव। चारू दिसावा सू लोग नद्या र मानिंद उमडता कुल्लू र अथाह मानव समुद्र मैं मिलता दीस। पुराणे दिना मैं ठौड ठौड सू 360 देवता घाटी मैं आवता पण आज आ री गण्या 80 र अेडे गड रयगी है। इण अवसर पर रघुनाथ मन्दिर सू ठाकुरजी री प्रतिमा री रथ यात्रा नीसर। घाटी र देवतावा मैं बिजली महादेव रे मंदिर रो खासो महत्त्व है। घणी ऊचाई माथ पहाड री ऊची चोटी माथ वण्योडे इण मंदिर पर बिरखा मैं हर साल एक दो बार बिजली शिवलिंग माथ पड अर लिंग रा किरचा किरचा टूट टूट'र बिखर जाव। इणा न भेळा कर र पुजारी माखन अर सत्तू स आ न पाछा जोड'र मूर्ति री भळ प्रतिष्ठा कर। इण भांति फेर औ चक्कर चालतो रव।

इण उत्सव आयोजन र कारण कुल्लू देवतावा री घाटी नाम स जाणी ज। पण घाटी रा रवणिया आम लोग ई इणा देवतावा री साची सामथ न जाण। अ देवता स्वभाव अर आदता मैं मिनखा सू इ सगडे बदलते सुभाव आळा हुव। ब बिगड ता बिरखा सू सगळी घाटया न पाणी सू तिरिया मिरिया कर देव अर गाव गळया मैं आणा जाणो बद हू जाव। ब हरख तो नील आभ न खुली उजळी धूप री चमक अर उष्मा सू मानखे अर वनस्पति न चमका देव। ब चाव तो बरफ माथ सूरज री झिलमिल किरणा स सोनलिया आभा री चमक छिटका देवै। ब रिसाणा हुव तो नदी नाळा रो पाणी पूळा मकाना मवेश्या न ई नइ मानते तक न डूबो देव। ब शात हुव तो धीमा गीत गाता वादळिया ठडी पौन री लहरा बिखेरता सबनै हरखाता किया घाटी ऊपर सू आइस्ता आइस्ता निकळ जाव—औ सब कुल्लू घाटी रा देवता ई जाण।

दशराव रो त्यौहार कुल्लू र विशाल धालपुर मैदान म मनाईज। साय समय सू प्रारम्भ हू र प्राय सम्पूर्ण रात्रि नृत्य सगीत रो सुरगो कायक्रम चालतो रव। मैदान मैं इ एक उचो विशाल चबूतरो वण्योडो है जिण माथ

सकड् कलाकार एक साथ आपरो कायक्रम पश कर सक। खासा ऊंचो हूणे सू लाखू लोगा र दखणे मैं भी कोई अडचन नी आव। लोक नृत्य अर संगीत री वतरणी ववती सी लाग। वास्तव मैं इण उत्सव नै देखणो अनूठो अनुभव है जक न आज तक भी मैं भूल नी सक्या हूँ।

कुल्लू री प्राकृतिक शोभा जित्ती मोवणी ह अठं र मानखे अर विशेष रूप सू अठ री नारी जाति ने भी उतणो ही फुटरापो कुदरत र वरदान रूप मैं मिल्यो है। स्यात ओ ई कारण ही क पाण्डव आपरे बनवास र दिना मैं जद अठ निवास कियो तो भीम अठं री हिडिम्बा नाम री स्त्री सू मोह करण लाग्यो। हिडिम्बा री मदद सू भीम एक आदमखोर राक्स रो अत करयो। इण ठाम ई हिडिम्बा सू भीम र घटात्कच नाम र पुत्र रो जन्म हुयो, जको बाद मैं महाभारत र परम जूझारू वीरा मैं गिणीज्यो। पहाड री परिश्रमी अर कमठ मातावा ईं इसी वीर प्रसविणी ह सक आ वात आज भी प्रमाणित है। देश री सना म उत्सग री भावना सू ओत प्रोत हा'र मातभूमि री सेवा करण वाळा गढवाली कुमायुनी गोरखा, डोगरा आद पहाडी रणबाकुरा न आखी दुनिया मैं कुण जाण कोनी।

कुल्लू र दशन भ्रमण रै बाद मनाळी खातर बस सू रवाना हुया। कुल्लू मनाली मारग माय करीब आधे रास्ते मैं नगर नाम रो छोटो अर सुदर पहाडी कस्बो आव। अठ एक छोटो सो पुराणो गढ भी बण्योडो है। आजादी सू पला ओ स्यान दस पुरता ताई कुल्लू रै राजावा री राजधानी रई ही। उण वेला पहाडी गावा री तुलना मैं राजधानी री वस्ती हूण कारण इण रो ओ नाम पडयो हुसी। गढ रो निरमाण राजा सिद्धसिंह करायो। नगर री प्राकृतिक सुदरता इत्ती मोवणी है क प्रसिद्ध रूसी चित्रकार रौरिक अठ ई आपरो स्थाई निवास वणा लियो। उणा रै विश्व विख्यात चित्रा री आर्ट गैलरी नगर मैं ई है। केई चित्र तो अत्यन्त विशाल अर इत्सा कलात्मक है क अनमोल गिणीज। हिमालय आदि काल सू अणगिणत विद्वाना दार्शनिका, तत्वविदा, कवि अर मनीषिया न आपरे कानी आकर्षित करतो रयो है।

कपिल अर कणाद नारद अर व्यास, वशिष्ट अर अगस्त्य हैलरी अर रोरिक देश विदेश रा न जाणे कतरा विशिष्ट व्यक्ति अर कलाकार जीवन भर हिमालय सू सुद आप ई प्रेरणा लेता नी रैया है कलि आगत री मानव पीढ़्या न प्रेरणा रा अनुपम सदेश भी देवता रया है। रोरिक गलरी रा बेजोड चित्र निरख र उत्तराद दिशा म मनाली कानी रवाना हुया।

नगर सू 28 किलो मीटर कुल्लू घाटी रो सबसू सुन्दर अर नायाब कस्बो मनाली है। इण न पहाडा री राणी कव। अठ री नसर्गिक शोभा माथ रीझ'र देस विदेस रा मोकळा पयटक कुदरत र अचरज पूण निजरा रो आणन्द लेवणन अठ ढूक। देश रा प्रधान मत्री जवहार लाल नेहरू आपरे काय काल मैं दो बार अर श्रीमती इद्रा गाधी एक बार छुन्टा मनावणने अर भागम भाग व्यस्त जीवन सू आराम अर शाति पावणन इण नात सुरगी जाग्या आ र ठैरया हा। मनाली मैं सेव अर खुशबू दार प्लम सू लदया बागीचा दूर-ताई फल्योडा दीस। व्यास नदी रो कळकळ प्रवाह ऊचा बरफ सू ढकया पहाड, सीधा सादा भोळा मिनख अर सगळ वातवरण मे एकात नीरवता इण ठाम न अलौकिक सुन्दर अर सौम्य बणा देव है। कल्लू ताई आवता घाटी खासी चौडी हू जाव पण मनाली मैं आ र सकडी बण जाव। मनाळी मैं हिडिम्बा देवी रो ढगरी मिदर इतिहास अर स्थापत्य दोनो दीठ सू बौत महत्वपूण है। मदिर देवदार री लकडी सू बण्योडो है। बडा बडा शहतीरा सू पगोडा री शली री चार तल्ला छत मैं ओ मदिर निर्मित है। मदिर र कनै देवदार रा इसा विशाल अर प्राचीन रूख है जका री उमर हजार साल बताव। मनाली रो बाजार छोटो हुता थका भी सोवणो है। बस्ती र बीच मैं टूरिस्ट बगलो है अर वीरे सामै खुलो चौडो मैदान है। मनाळो र बाजार मैं सौ एक दूकान हूसी। खाणे पीणे रा होटल अर कलाकारी व दस्तकारी री जिसा री दूकाना वेसी है। बीकानेर रे गगाशहर कस्बे रो एक व्यापारी अठ होटल खोल राखी है। आपरे देश अर क्षेत्र र म्हा लोगा सू मिल र वीन घणो हरख हुयो।

मनाली मैं चायपाणी र बाद वशिष्ट आश्रम देखण ने पुग्या। आश्रम मनाली सू 2 कि मी उत्तर में स्थित है। अठ ताई सडक री रास्तो है। ई जाग्या पिरामिड रै आकार रा वशिष्ट ऋषि रै नाम पर एक जूणा मंदिर है। अठ भी गरम पाणी रा स्रोत है। गंधक युक्त इण रै जळ मैं स्नान करणे सू चरम रोग मिटै। इण कारण अठ खासी तादाद मैं चरम रोगी स्नान खातर पूग। श्रद्धालु दान दातावा खात माथ 5 6 स्नान घर बणवा दिया है। दिन भर खासा माथ आण जाणे वाळा रो मळो सो मड्या रवे। आस पास रा हर्‌या भर्‌या वातावरण आश्रम री सुंदरता न ओर वधावै। वशिष्ट सू 5 मील दूर उत्तर पूर्व मैं कोठी नाम री जाग्या है। अठ ताई भी सडक पूग। आग पदल ट्रकिंग आरंभ सू सलानी रोहतांग दर्रे री चढाई वर। रोहतांग पवत री चढाई घौत दोरी है। दर्रे री जाग्या भी इण पवत री ऊंचाई दस हजार फुट र नेडे हैं। मई जून री गरमी रै दिना मैं भी ओ परवत बरफ री मोटी तह सू ढक्या रव। अति सकडी पहाडी पगडंडी सू बहणो पड। पगडंडी पर ऊपर री बरफ र कारण तिसलण हू जाव जव सू चढाई करत वगत नीचे गहरा खाडा मैं पडण रा डर लागता रव। म्हारै साथ्या मैं भी एक सज्जन डर र एक जा या बठग्या हा। हिम्मत बधाणे अर हाथ झाल'र चालणे सू नीठ आग जावण ताई राजी हुया। रोहतांग दर्रे र पार लाहौल आद जावण आळी पक्की सडक रो रास्तो भी है। पण आ दिना भी इण सडक माथे 10 12 फुट ऊंची बरफ जम्याडी ही। नेई जाग्या सेना रा बुलडोजर बरफ हटाणे रे काम म लगायोडा हा। रोहतांग दर्रे री सबसू उच्ची जाग्या एक पहाडी तडके चाय काफी री दुकान एक तम्बू मैं लगा राखी ही। ऊंचाई घणी हुणे सू अठ ठंड घौत तज ही अर हवा चालणे सू घाय सबन कम्पकपी छूटण लागगी। तम्बू मैं बठ र काफी पीण सू शरीर मे थोडी उष्मा अर फुर्ती आइ। दर्रे र सामण पहाडी ढलान माथ बरफ जम्योडी हुणे सू वडी उमर रा लोग भी टाबरा ज्यू बरफ पर तिसळन री क्रिडा रो आणंद लेवण लागग्या। रोहतांग परवत सू राहित प्रपात रो निजारो भी फूटरो दीस। रास्ता मैं जकी गंधक

अर किन्नर जात्या रो उल्लेख है उण रो निवास स्पिती अर किन्नौर रोहताग र दूज पास है। आज भी अठै रा लोग वीत सुदर अर लोक नत्य आद मैं प्रवीण है। प्राचीन समय मैं देव लोक अर देव जात्या र नाम सू प्रसिद्ध आ भूमि साच ही देवतावा री घाटी है। इण पावन भूमी रा दर्शन कर म्हे सब असीम आनन्द मैं निमग्न हुयग्या। यात्रा री स्मृति आज भी सगळा नै हुरख सू विभोर कर देवे है।

# दूध अर शहद री घाटी

प्राकृतिक सुषमा री दांठ सू भारत पर कुदरत री जित्ती किरपा है उत्ती शायद ही कोई दूज एक्ल देश माथ होसी। पवतराज हिमालय री विहगम शोभा तो जगत विख्यात है। हिमालय आपरे विविध रूपा मे प्रकृति प्रेमिया न सदा आर्कापत अर प्रेरित कियो है। काकेसस सू कराकुरम ताई फली साढे तीन हजार कि मी लम्बी पवत शृखलावा म नद्या, हरी भरी घाटया, स्रोता री तो गिणती ही काई है। बडा बडा हिमनद, अगम्य पवत शिखर अर अविस्मरणीय अलौकिक दश्या री भी कमी नही है। इण सु दर पवता री घाटया मे अनक सुन्दर बस्तिया अर वाद्या वस्योडी है। हिमाचल प्रदेश र उत्तर पश्चिमी भाग मे इसी ही एक अनिन्द्य सौदय री जाग्या है चम्बा पवतीय क्षेत्र। जिके न दुधारू पशुआ री बोहतायत अर घणे जगळात मे खूब शहद हूण रै कारण दूध अर शहद री घाटी भी बोल। इण क्षेत्र र प्राचीन मदिरा अर धार्मिक स्थला, झीला, नदिया अर नसर्गिक स्थाना री यात्रा ताइ मित्रा साग भ्रमण रो कायक्रम बणा र रेल मारग सू पठानकोट पूग्या।

पठानकोट सू बस द्वारा डलहौजी खातर प्रात 6 30 पर रवाना हुआ। रात्रि पठानकोट र आरक्षित विश्राम घर मे बिताई ही। प्राय पाच छ घटा लगातार बिरखा र वाद भोर मे मौसम खुलग्यो हो। बिरखा पछै पहाडा रो निजारो अर रूप सौदय मे और निखार आयग्यो। सगळे रस्ते बादळबाई रैयी अर हवा मे शीतलता अर मिट्टी री सोधी सुवास सू चित्त उल्लास सू भर्‌यो हो। आड तिरछ घेरदार पहाडी मारग मे चाकल, धारा,

दुनरा आद वरस्या म टहरता 80 कि मो गे दूरी 4 घटा गू राई वसा म पूरी पर 11 वज्या गू पला डलहौजी पूगग्या। समुद्र तट गू 2036 मीटर ऊंचाई पर पाच पहाडधा पर वसो आ शात ऐकात अर अनाम गौन्य गू युत्त नगरी साच ही पहाडा री राणी कलायण जाग है। केई मामला म दूजी नगरया सू आ घणी आछी है। धौळाधार पवत माळा र वारले ढाल माथ वसी इण नगरी म घणी वनस्पति सुन्यावणा शीतल वातावरण अर गर सपाट रा अनुपम सुदर प्राकृतिक स्थल है। अठ प्रत्यच पहाडी र बीचाबीच वस्ती है अर गोलाई म चारू मर चक्कर काटती सडक है। इण वसावट गू भी डलहौजी री सुदरता वढगी है। वस स्टड र कनई सुदर वाजार है, एक स्केटिंग हाल है जक रो फश लकडी रौ वण्याडो है। अठ किराय रा पहिय आळा जूता स्केटस मिल। आने प रर युवा खिलाडी अनक करतब करता हवा मैं तिरता सा लाग। इण क्रिडा न देखणे म आनन्द आव। इण पहाडी पर एक चौराह रा नाम जी पी आ क्वायर है। अठ भी चाखो छाटो सा वाजार है। अठ ऊनी वस्त्र घौत आछा अर सस्ता मिल। म्हारे मासू केई जणा ऊनी शाल खरीद्या। इण चौराह सू दो कि मी दूर अजीतसिंह सडक सू पचपुला नाम री जाग्या पूग्या। इण स्थान पर ऊचाई सू पडण आळो वडा झरणो है जक रो दुग्ध धवळ जळ केई धारावा मैं बहतो आकषक लाग। अठ तीन मेर पहाडधा रो घेरा होणे सू प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त सुरम्य दीख। इण झरने र पाणी म सब जणा स्नान रो आनन्द उठायो। पचपुला पर शहीद भगतसिंह र चाचा अजीतसिंह री समाधि वा री याद म वणवायाडी है। अजीत सिंह भी आजादी री लडाई म आपरो बलिदान दियो। अठरो दृश्य थोडे अश मैं देरादून र प्रसिद्ध सहस्रधारा नामक जाग्या सू मिळ। ओ स्थान गोष्ठी अर सर सपाटे री आदश जाग्या है। जी पी ओ चौराहे सू साढे आठ कि मी दूर काला टोप नाम री पिकनिक री जाग्या है। सघन जगळ री वनस्पति र वीच अठ सूरज री किरणा भी मुश्किल सू पूग अर दिन मैं भी अधेरो रेवे इण कारण ही इरो ओ नाम पडयो है। सिंझा ताई घूम धाम र वापस यूथ हास्टल र आपणे आवास मैं पाछा पूग्या। भोजन उपरात वाजार

मैं घूमण नं गया। बातचीत सू मालूम हुयो कि डळहौजी 5 स्क्वायर मील र घेरे मैं बस्यो है। इण री पाचू पहाड्या रा नाम इण भात है---बलून, क्थलोग, पोत्रियन, टेहरा अर बक्रोता जिका री ऊंचाई 5000 फिट सू लगा'र 7800 फिट ताई है। ऊंची पहाडया सू डलहौजी र आस पास री घाट्या रो दश्य मन मोवणो लाग। अठ सू रावी अर व्यास ई नइ खासी दूरी पर आकाश साफ हूणे सू चिनाब नदी भी बहती दीख। डलहौजी बौत साफ सुथरी जगह भी है। सैलान्या री तावड तोड भीड भी अठ नी है अर दूजा पहडा सू आ कम खर्चीली भी है।

आगले दिन सुबह 7 बज्या हिमाचल र आछे सोवणे सरगाह खजिहार वास्त पदल रवाना हुया। डलहौजी सू खजिहार 22 कि मी दूर है। सम्पूण मारग चढाई उतराई आळो है। पगडडी र मारग र कई जाग्या पक्की सडक भी रस्ते मे मिले। मारग मैं देवदार अर चिनार रा घणा वृक्ष तो ह ही मक्डू तरह रा दूजा पेड भी मिल। चीड फरास, सफेदो, धोक, टीमरू, बट, पिलखण आदि विशाल वृक्षा सू हर्यो भर्यो औ पदल रास्तो दुनिया र वेहतरीन पदाति यात्रा मारगा माय सू एक गिणीज। पीठ माथ पिट्ठू अर हाथ मैं लाठी थाम्या अलमस्त लोगा री टोळी साग दीन दुनिया न भूल र मौज मैं गाता बठता, खाता थवा इण वेळा सब ठाठ धरयो रह जाव लो जद लाद चल लो बिणजारो पक्तियो रो अथ स्वानुभूति सू ई समझ सक्या। करीब 5 घटा मैं 12 बज्या र नजीक जद खजिहार पुग्या तो लाग्यो क कुदरत र सबसू चोखे बगीच मैं पूगग्या। चारू मेर चादी री सी बफ सू ढक्या पवत शिखर। वा र ऊपर अणगिणत रगा रूपा मैं बादळा रो मडाव। पवत री घाटया री केई परता मैं सिलसिलेवार एक रग अर एक ऊंचाई रा चिनार रा हुवा मैं झूमता मचळता हर्या वृक्ष, बीच मे प्यालेनुमा ढलवा लम्बा चौडो विशाल दूब मण्डित सपाट मदान, मदान र ठीक बीचोबीच एक छोटी सुदर आकपक झील अर झील मैं तरतो गपू दाई एक स्थल खण्ड। सब कुछ इतणो नियोजित अर कलात्मक ढग सू कुदरती बण्योडो है क अचरज सू यात्री भी तुलसीदास जी

र शबदा मैं क्वण लाग केशव क्ही न जाय का वहिय रम रेख विन लिखा चितरे समुझि मनहि मन रहिय।' वास्तव मैं आ आलौकिक रचना क्या लौकिक रचनाकारा र बळ बूते री वात है? रोरिक जिसा जग विख्यात चित्रकार इण हिमालय री जिण रहस्यमय चेतन सत्ता सू उत्प्रेरित हुया। उण री वास्तविक झलक देख'र मन मस्तक आदर अर नमण सू झुक्यो। खजि हार मैं शिव रो एक छोटो मदिर राजकीय गेस्ट हाउस अर दा चार ग्रामीण दूकाना है। लोग भोळा आत्मीय अर धमप्राण है। बस सू वापस 7 वज्या ताई डलहौजी जा ढूक्या। अगले दिन प्रात चम्बा रो कायक्रम बणायो।

चम्बा डलहौजी सू 50 कि मी र लगभग है। नदी, झरना, झीला मदिरा आद री दीठ सू वडो रमणीक स्थान है। ब्यास नदी र ठीक पूर्वी तट माथ एक मील री चौडी पटटी माथ वस्यो चम्बा नगर खूब सुदर दीख। नदी सू उपर वस्ती र बीच एक विशाल मदान है। चम्बा रा स उत्सव त्यौहार आयोजन इण मदान मैं हुवै। मैदान र दूज पास सडक सू पर सरकारी कार्यालय आद अर आ र लार सुदर राजमहल। वाजू मैं इटर कालेज बाजार, अठ रा प्रसिद्ध मदिर अर खपरल अर लक्डी री ढलवा छात आळा पहाडी मकान। बनी खेत जका उलहौजी सू आठ कि मी आग है, सू देवदार र पेडा रो घणो जगळ अर बीच बीच मैं ब्यास नदी ठेठ चम्बा तक साथ साथ पूग। चम्बा मैं म्है आय समाज मदिर मैं रुक्या। विपता इ चम्बा रा प्राचीन मदिर है। इणा मैं केई तो दवसी शताब्दी रा बण्योडा है। आ मैं लक्ष्मी नारायण मन्दिर अर हरिराय मदिर स मैं जूणा है। आ मदिर र पत्थरा पर खुदाई अर उभरयाडो नक्काशी रो आछो काम है। इण मदिरा रै स्थापत्य सू चम्बा र गौरव पूण अतीत री जाण कारी मिल।

चम्बा रो भूरीसिह सग्रहालय भी सलाण्या र आकषण रो केन्द्र है। चम्बा री सास्कृतिक धरावर अठ सुरक्षित अर सग्रहीत है। कागडा अर बसोहली शली रा चित्रा रो अमूल्य सग्रह अठ है। कागडा शली रा पिक्चर पोस्टकाड अठ बिक भी है। हस्त कला सम्बधी सामग्री भी अठ प्रदशनी दाइ

राखीज़। प्राचीन जीवन शली री प्रामाणिक जाणकारी आ चित्रा सू मिल। रीति रिवाज, वस्त्र परिधान, धार्मिक आयोजन, अलकार, वाहन आद भात भात र सब विपया रा चित्र है।

चम्पा मैं म्हा लोगा न एक विशेप त्यौहार—न देखणे रो मौका मिल्यो। उण दिन अठ मिंजर रो मेळो लाग्योडो हो। इण मेळे रो सम्बन्ध खेती अर उपज सू है। दूजा प्रदेशा दाई अठ रा खेतिहर भी मजिर र त्यौहार माथ नत्य सगीत अर दूजा सास्कृतिक आयोजन बडी धूम धाम सू करै। चम्बा र आसपास र गावा रा पहाडी लोग रग बिरगा पारम्पारिक वस्त्र पर'र हजारू री सख्या मै अठ पूच। एक बडो ऊचो चबूतरो कलाकारा र बठण अर काय क्रम प्रसरण ताइ मदान मै बण्यो है। मदान मे दिन म विशाल मेळो भी लागे जिक मैं हिमाचल सरकार री तरफ सू विकास कार्या री अनक विभागा री प्रदशण्या भी हुव। रात मैं रगीन रोशण्या री व्यवस्था हुव।

इण मैं भाग लेवण वास्त हिमाचल प्रदेश रा रेडियो कलाकार ई नई पजाब अर दिल्ली हरियाणा रा भी कलाकार आव। कलाकार लोग प्राय अगरखे नुमा चोगा अर सकडो पजामो परे अर माथे माथ व रेशमी रूमाल बाधे। इण रूमाल रो नाम भी चम्बा रूमाल' ई है। रात्रि म गीत, भजन, ऐकाकी प्रहसन, कव्वाली, नत्य, वाद्य सगीत आद रो कायक्रम 6 बज्या शुरू हुयो जो प्राय 4 बजा ताई लगातार चालतो रयो अर हजारू लोग बी न-देखण सुणण रो आणद उठायो। कायक्रम री भाषा हिन्दी ही थी। पहाडी जीवन अर लोक सस्कृति रा अनेक रूप देखण न मिल्या। ओ अनूठो आयोजन आज तक याद है। हालाकि आगली भोर मैं ही धमशाला वास्ते रवाना हूणो हो पण आयोजन रा आनन्द अत तक लेणे रो लोभ नी छोड सक्या।

दूजे दिन बस सू धमशाला ताई चाल्या। चम्बा सू धमशाला 150 कि मी दूर है। धम शाला धौलाधार पवत शृखला मैं ई स्थित है। ओ कागडा जिले रो छोटो पण सुदर प्राकृतिक पहाडी सरगाह है। इणन बस्या 125 बरस हुया है, पण 1905 मैं अठ भीषण भूचाल आयो अर इ न प्राय दुबारा ई

बसायो है। आ भी शात ऐकात पहाडी जाग्या है। समुद्र तल सू 1800 मी ऊंची है। धमशाला रा दो हिस्सा है–'अपर धमशाला' अर 'लोवर धमशाला' लोवर सू अपर हिस्सो एक कि मी दूर है। लोवर री ऊंचाई 1350 मी है। सरकारी दफ्तर अर दुकाना निचले हिस्से मैं इ बेसी है। काट रोड सू दोनू हिस्सा जुडया है। ऊपरी हिस्से सू नीचले ताई बीमैं केई जाग्या पगोथिया रा रास्ता बणायोडा है। अपर धमशाला र पीठ कानी धौळाधार पवत री ऊभी खडी चट्टान है। अठ भी देवदार, चिनार चीड आद रा घना जगल है। धौलाधार री केई चोटया करीब छ महीना बरफ सू ढकी रव। ऊचाई सू कागडा घाटी अर ब्यास नदी रो भी मोवणो हृश्य दीख। धमशाला रै मक्लोड गज नामक स्थान पर दलाई लम्मा रो भव्य मठ है। तिव्वत पर चीन रै कब्जे रै बाद बौद्ध धम रा सर्वोच्च गुर भारत मैं शरण मागी अर वाने धमशाला म वसा दियो गयो। अठै भागसू नाथ रो मदिर अर एक सुदर झरणो भी है। झरणे रो पाणी कुड मैं भेळो हुव। अठ स्नान अर मदिर दशन री घणी धार्मिक मानता है। फरसथ गज र जगळ मैं सँट जान रो गिरजाघर है। इण मैं लाड एलगिन री कब्रगाह है। धमशाला र छावनी क्षेत्र कन डल नाम री सुदर बडो झील है। अठ सितम्बर महिन मैं गद्दी जाति अर अन्य पहाडी लोगा रो प्रसिद्ध वार्षिक भेळो ला। । शात सुदर अर स्वास्थ वधक पहाडा मैं धमशाला रो महत्वपूण स्थान है। धमशाला मैं ठहरया कोनी। रात्रि विश्राम कागडा मैं कियो।

कागडा धमशाला सू 26 कि मी दूर है। औ कद पुराणो रजवाडो हो। जिण र सरक्षण मैं शिल्प स्थापत्य, अर चित्रकला रो आछो विकास हुयो। चित्रकला री अठ री विशिष्ट शली न कागडा चित्र शली कव। मध्य काल मैं अठ बौत सम्पन्न मदिर हा। केई मुसलमान शासका अठ र मदिर रा रत्नाभूषण लूटण ताई इण क्षेत्र पर सनिक आक्रमण भी कर्‌यो। अठ अम्बा जी रो एक प्रसिद्ध मदिर व्रिजेश्वारी देवी मदिर नाम सू बज। सफेद सगमरमर रो भव्य मदिर है अर देवी री भावपूण प्रतिभा है। मदिर रो चौक विशाल

है। मंदिर री परिक्रमा रा आहता भी विशाल है अर लाल पत्थर स बण्यो है। मंदिर र कनै साम ई धमशाला है, बो मैं आवास कियो। सुबह चामुंडा मंदिर रा दर्शन कर्‌या। कनै ही सुदर शीतळ झरणो ववे। वां मैं स्नान करया। ठंडा जल काटतो सो लाग्यो, जाणे खून जम जासी। दशन भ्रमण ताई कांगडा र ध्वस्त पुराणे किल मैं भी गया। कवे कै 18 वी सदी मैं अठ र राजा ससार चंद कटोच र समय कांगडा खासो उ नति करी। उण बेळा ई अठ ललित कलावां री भी विकास हुयो। राजा र गद्दी जाति री एक गडेरिया युवती सू प्रेम कहाणी रा गीत तो कांगडा मैं आज ताई गाईज। कांगडा री ऊंचाई कम है पण हरियाळी अर वनस्पति री कमी नी है अर घाटी सुदर है।

कांगडा सू बस द्वारा ज्वालामुखी रोड 27 कि मि दूर है। अठ सू पश्चिम कानी 7-8 कि मी दूर ज्वालामुखी रा परसिध मंदिर है। आजकल मंदिर र सामैं केई धमशालावा अर दूजा छोटा मोटा अनेक मंदिर बणग्या है। सम्पूण पंजाब, हिमाचल हरियाणा अर जम्मू क्षेत्र मैं ज्वालामुखी री घणी मानता हूणे सू अठ सैकड यात्री रोज आव। अठ केई धमशालावा बोत बडी अर आधुनिक ढग री बण्योडी है। अग्रवाल धमशाला मैं एक साथ कई हजार आदम्या र ठहरण री व्यवस्था है। अठ कमरा री सख्या भी 300 नेडे है। न्हामदा अर हाल अर प्रागण इण सू अलायदा है। इण धमशाला मैं ई म्हे रुक्या। मंदिर री पीठ कानी पश्चिम म पवत है। दर असल इण पवत री चट्टाना सू ई केई जाग्या अग्नि री ज्वाला निकळ। मंदिर दो तरला म बण्यो है। दायू मैं आनि ज्वाला आप बरस भर निकळती रव। मंदिर संगमर मर रो बण्यो है। आग खास बडो चौक है। नवरात र दिना अठ बडो मळो लाग। आ भी कवत है क स्वय सम्राट अकबर अठ पुत्रोत्पत्ति री कामना सू पदल आया हो। मंदिर र बाजू सू डूगरी माथ जा र नीचे बाजार धमशाला आद रो सुंदर दृश्य दीख। मंदिर र बारे जलाशय है, दशनार्थी इण म स्नान करया पछ मंदिर मैं जाव। ज्या बदरीनाथ अर वशिष्ठ आश्रम आद धामा मैं गम स्रोत री धारावा र प्रवाह न देख विस्मय अर आह्लाद हुव वो सू भी

धणो इण स्वयभू अग्नि ज्वाल न देख'र हुव। डूगर माथ करीब 400 फुट ऊपर अजुन रो मदिर है। अजुन रो मन्दिर नायद ही दूजी जाग्या देखणे म आवै। कँव क अज्ञात वास रै दिना अजुन अठै लुक'र बठो हो। उण री याद मैं इ रो निरमाण हुयो है। केई दूजी जूणी मूर्त्यां अठ है। व प्राचीन तो है, पण कलात्मक नी है।

ज्वालामुखी सू बस द्वारा चिंतपुरणी देवी र स्थल र दशना ताइ पूग्या। ज्वाला मुखी सू आ जाग्या 110 कि मी र करीब है। ई न सक्ट मोचन या दु ख निवारण देवी र रूप मैं मानीज। प्रेत सक्ट या भूत बाधा मैं लिप्त लोगा न अठ लाव। तीव्र आस्था अर सकल्प र कारण ई सही कई लोग अठ सू ठीक भी हू र जाव। इण वजह सू अठ इसा व्यक्ति आवता ई रवे। म्हे वठै पूग्या जदे एक महिला सन्निपात मैं आयगी ही। मदिर मैं धाक देवती देवती ही मूर्च्छित हो'र पडगी। पुजारी मत्रो चारण र साथ मोर पख सू वैं री झाडा करता रयो। थोडी ताळम शायद स्वत वा स्वाभाविक स्थिति मैं आगी। मदिर छाठो पण भव्य है। चेहरो सगमरमर सू वण्यो है। आगण काले अर सफेद पत्थरा री चौकया सू। मदिर र बाजू मैं एक वृक्ष है बी री डाळा माथ मनौती रा सक्डू डोरा अर लाल वस्त्र री लीरया बाधोडी रवे। मदिर र कन ई गुप्त स्रोत है जक र आगे एक तलाब सो बणा दियो है। इण मैं चार फुट सू वेसी पाणी कोनी रवे। इसू ऊपर रो पाणी दूज कानी निकास सू आगे बह जाव। इण स्वच्छ ठडे जल सू स्नान कर भक्त जन मदिर दशन अर मनौती आद रै वास्ते जाव। चिंतपुरणी मैं पहाड प्राय समाप्त सा ही है। भूमी समतल ही है। हिमाचल शृखला रै निचले सिरे माथ ई औ स्थान है।

इण तरा उत्तर पश्चिमी हिमालय र अनूठ प्राकृतिक सौंदय र स्थला अर प्राचीन मदिरा र दशन सू आनद अर हरख रो लाभ लेता हाशियार पुर आया। अठ सू जाल्धर लुधियाना अम्बला दिल्ली हूता वापस घर पूग्या।

# उत्तराखण्ड रा तीरथ

प्रकृति रौ लूठो मदिर हिमाळय सत्, सुदर और शिव रो घणे अर्थां अर स्तरा मैं उद्‌घाटन करतो दीख है। आमैं तव माथो ताण्या खडी ऊजळी बरफ सू ढकयोडी पहाडा री चोटया हिमनद रा वाहळा, हरियावळ सू लद्‌या वस्या ऊचा डूगर, घाटया रा सुदर निजारा अर वन्य खेतर र जिनवरा रो खुल्लो बे रोक टोक घूमणा आद्‌या नैं तो फूटरो लाग ही है गैर अर्थां मे मन मैं सिरस्टी से सिरजणहार ताई सरधा अर जिग्यासा रो भाव भी जगाव है। औ ई कारण है क प्राचीन ऋषि मुनिया सू ले'र आज रा सैलाणी ताई हिमाळय रो नाम सुणता इ आणद अर प्रेरणा सू भर जाव है। हिमाळय रै उत्तराखण्ड खेतर मे सवडो ई तीरथ है जका मे हेमकुण्ड, बद्रीनाथ अर केदारनाथ तो स सू घणा मानीता तीरथ है। इण धामा री जातरा र कायक्रम वणणे सू दिल मे घणे उमाव रो उमडणो सोभाविक ही हो।

बद्रीनाथ री जातरा ऋषिकेष सू शुरू हुव। देवनदी गगा र सारै सडक मारग सू बद्रीनाथ ऋषिकेश सू 321 कि मी दूर है। रास्ते मे देव प्रयाग, रुद्र प्रयाग करण प्रयाग अर विष्णु प्रयाग जिसा बडा बडा तीरथ पड। गगा नदी मे भागीरथी, अलकनदा, मदाकिनी धवळ गगा आद अनेक नद्‌या जठै जठ मिल उण ठामा मे सगम माथ महादेव शिव रा सोवणा मदिर वणायोडा है। यात्रा र ठरण वास्ते मोकळी धमशाळावा भी उण सगळे तीर्थां मे वण्योडी है। विष्णु प्रयाग सू थौडी पला जोशीमठ नामक जाग्या है। आदि शकराचाय अठ एक मठ री थापणा करी ही। औजू भी दक्षिण रा नम्बुद्री ब्राह्मण इण मठ रा स्वामी है। सरदी र दिना मे बद्रीधाम रा पुजारी अठ ई

वास करै। मई र महिने बद्रीधाम रा पट फेर खुलणे सू अ पूजा खातर पाछा ऊपर चल्या जाव। विष्णु प्रयाग सू आगे अलकनदा र सार एक बस्ती पड गोबिन्द घाट। अठ सू एक पदल मारग हेमकुण्ड अर फूला री घाटी कानी जाव और मूल सडक मारग सीधो बद्रीनाथ जाव।

ऋषिकेष सू गोविंद घाट री यात्रा बस सू पूरी कर आगे हेमकुण्ड री जातरा पदल करण मारू सगळे साथ्या समेत कायक्रम बणायो। सामान असबाव राखणे वास्ते अठ एक गुरद्वारो अर चोखी नई धमशाला बणायोडी है। यात्र्या न गुरुद्वारे री तरफ सू चाय नास्तो अर भोजन नि शुल्क मिल। धार्मिक भाव सू भोजन बणाणे परोसने अर बरतन साफ करण म यात्री भी आपणी सवा देणी पुण्य रो काम मान। 5 अगस्त री भोर मे आपणो सामान गुरद्वारे रै अमानती सामान घर म जमा करा र म्हारो दळ हेमकुण्ड ताइ टुरयो। गोविंद घाट सू घांघरिया 12 5 कि मी री दूरी माथ उत्तर पूव मे बस्योडो है। अलकनन्दा री एक धारा बद्रीनाथ कानी सू पहाड रो चक्कर काट र आव दूसरी हेमकुण्ड री परिक्रमा कर उत्तर सू आव। इण सुरग सगम र पछमाद गोविंदघाट बस्योडो है। गोविंदघाट मैं अलकनदा माथ लक्ष्मण झूल दाइ ल्हो री बटयोडी रस्या रो अर लकडी र माटा पाट्टा रो एक बडो झूळतो पुळ पारकर पूरब दिशा कानी ऊभी चढाई शुरू हुव जकी 2 कि मी दूर पूला गाव तक बराबर ऊची चलती जाव। म्हे 6 बजी दिनुगे चाल पडया हा। उण वेळा ठड भी ही अर मन मे यात्रा रो उमाव भी। दूजा सिख यात्रा र साथ सत्यनाम वाहे गुरु अर 'जो बोले सो निहाल आद बाण्या बोलता आग बढया। पहाडी चढाई र कारण थोडी देर म ही सास धौंकणी दाई चालण लागगी पग थाकण लागग्या एकर तो ख्याल आयो क शरूआत ही अती दौरी है तो आग क्या हूसी। पण चीड देवदार अर ओक रा हरा भरया विरखा अर वाल्ळा सुन्दर झरणा रा निजारो भी मन मोवणो हो। पूला गाव रे बाद उतार आणे सू भी राहत मिली। पूला अलकनदा र आगोर म पहाड री पगथनी म बस्यो अनूठो गाव है। चारू मर घणो हरियावळ सू

नदी पहाड़ध्या। नदी मानो गाँव रा पग धोवती लाग। आगे फेर उतार चढाव आळो मारग। पण 4 कि मी पाछे पत्थर सू बणी घाटीनुमा चढाई। कांकरा चुभणे सू पगा म टीस हूवण लागगी। 1 कि मी चढाई चढण रै बाद एक चाय अर फळा री दुकान दीखी। विसाइ खातर सगळा यात्री अठै रुकग्या। दूकान सू सेव खरीद्या। अठ रा सेव पीळोपण लिया हळके हरे छिलके रा अर स्वाद मे खट्टा मीठा हुव। आगे रै मारग म 6 कि मी दूरी माथ 'गगा मुड़ार जल विद्युत योजना' रो एक बोर्ड दीख्यो। पाणी री बहुतायत तो अठ है ही। योजना पूरी हुयाँ पछ इण क्षेत्र म बिजली अर सिंचाई साधना री मोकळायत हू जासी। 1 कि मी आगे भुड़र गाँव पड। आ 700 लोगा री बस्ती है। कांदो, फरासबीन अर साठी आद मोटा धान ही अठ नीपज। ई गाँव सू थोडी आग पहाड़ी ढळवा मारग सू बैती अलकनदा बडे वेग सू वैव। केई जाग्या तो नदी बडे प्रपात रो रूप ले लेव। अठ घणे बण म शहद रा छत्ता री लाग्योडा दीख्या। एक दूकान सू 20 ₹ किलो म पई साध्या शहद खरीद्यो भी। नदी माथे अठै एक पुल बण्यो है और आगे रो रास्तो अलकनदा र पूर्वी भाग मे बव। अठ फेर ऊभी चढाई शुरू हुव जको घाघरिया तक पूचै। घाघरिया मैं भी सिखो रो गुरुद्वारो है और अठ भी गोविंद घाट दाइ चाय भोजन री निरखर्ची व्यवस्था है। साढी दस बज्या ताइ सगळा बीस साथी अठ पूगग्या। 12 बज्या ताई भोजन कर लिया अर विसराम करयो। चौथे पहर एड़े छेड़े र वितराम निजारा रो आणन्द लियो। घूम फिर र सात बज्या तक पाछा गुरद्वार पूगग्या। भोजन रै बाद आठ बज्या तक सूवण लाग्या। गुरुद्वार सू 6 6 कांबळ यात्री दीठ लेणे र बाद भी शायद ही कोई ठड री भोतायत र कारण सो सक्यो हो। लगभग 12 हजार फिट री ऊचाई र कारण रात म अठ रो तापमान शून्य सू ई नीच आव परो।

आगले दिन भोर म 5 बज्या फूलां री घाटी वास्त चाल्या। फूला री घाटी घाघरिया सू 5 कि मी दूर उतराद कानी पड अर पूरब कानी हेमकुड। घाघरिया बस्ती सू नड ही अलकनदा माथ एक पुळ है जका विरगा

सू टूटग्यो हो। नदी म वडा वडा भाटा नाख'र मारग वणायोडो हो। इणा पर पग राख राख'र उतराध मोड लेंती ऊची चढाई चढणी शुरू करी। इण माग माथै जीवणे हाथ रो डूगर सीधो तण्यो काले रग री चट्टान सू बण्यो अर वनस्पति सू कोरो है। इण री तीन चोटया महादेव शिव र तिरसूल दाइ दीस। बीच मे नदी रो धीमो वहाव नीलकण्ठ री समाध मे बाधा र डर सू धीमो वहतो लाग। ऊची ऊभी चढाई आल इण मारग मे 2½ कि मी र बाद जगल मे कुदरती रूप सू नीपज्योडा फूला री शुरूआत हुवण लाग। जिया जिया आग वढया दूर तक फूला री पटया विछोडी दीसण लागी। सिगळे दिरस्य म इचरज मे डालण आळी अनूठी सुदरता मौजूद है। ऊचा डूगर बफ ढक्या शिखर धोळी ऊजली निरमल नदी अर मीला तक जठ तक दीठ जाव भात भात रा फूल ही फूल अनेक रगा अर आकारा आळा। इसान जे महनत कर इती मात्रा अर प्रकार रा फूल लगावणा चाव तो शायद ई पार पड। शायद विश्वकरमा री इण विलक्षण शक्ति र कारण ई तुलसी जिसा समथ कवि र मूड सू अचानक ही केनाव कहि न जाय का कहिये जिसा शबद निसरया हुसी। पवत र ग्लेशियरा अर हिमनदा सू पूरी अर फूळा माडी इण घाटी री जाणकारी पला पोत मारगोट नाम री एक अग्रेज महिला ने हुई। मारगोट इण घाटी री सुदरता सू इत्ती प्रभावित हुई क वा अठ ई वसगी। अर 4 जुलाई 1939 म इण घाटी म ही वै रो निधन हुयग्यो। अठ ई वीरी कब्र वण्योडी है अर अग्रेजी म लिख्योडो है क 'आ वाई जग्या है जिकी जिंदगी भर मन प्रेरणा अर स्फूर्ति देती रई है। वास्तव म फूला री घाटी री चितराम सुदरता रो जुबान अर आखरा मे चित्रण सम्भव नी है इ रो तो खाली अनुभव ही करयो जा सक।

आगले दिन भोर म 8 वज्या घाघरिया सू हेमकुण्ड खातर टुरया। घाघरिया क्यू क हेमकुण्ड रो आखिरी यात्री पडाव है सो आदर भाव सू इण न गोविंद धाम भी कवे। सिख मत म आ मानीज क उण रा 10 वाँ गुरु श्री गोविंद सिंह जी अठ आ र साधना करी ही। गोविंद धाम सू हेमकुण्ड पूव

दिशा म 5½ कि मी दूरी पर थित है। ओ सम्पूरण मारग वडी दोरी ऊभी चढाई आळो है। दूजा तीरथा – अमरनाथ, केदारनाथ आद मे भी जातरा लम्बी अर कष्टदायक है अर चढाई खडी है पण खाली 5 5 कि मी री दूरी मे 5000 फिट री चढाई कम ई जाग्या हुव। मारग चट्टाना न काट'र पगडंडी रूप सू वणायाडो है। यात्री भाटा रैं खुबणे, प्राण वायु र कम हुणे ऊची चढाई अर हाफ जाणे स धणो थक। रस्ते म कोई वस्ती अर पडाव भी नई है पण इण क्षेत्र रा गावई लोग जातरा रैं दिना मे वीच वीच मे दो जाग्या चाय पाणी री दूकाना लगा लेव बीसू वीहत राहत मिले। इण दूकाना मे चाय नमकीन, बिस्कुट, टाफी गोली अर सेव चकोतरा गळगळ आद मिल। पहाड री जातरा मे हळको भोजन करणे अर नीवू, गळगळ आद र यात्रा रैं समय प्रयोग सू फुर्ती मिलैं। इण मारग र बीच मे बोत वेग सू वैवण आळो एक स्रोत भी आव जिको नीचे व र अलकनदा म मिल जाव। इण स्रोत रैं उद्दाम वेग रा निजारो देखण खातर अठ पत्थरा री एक बडी चौकी कोई वणा दी है। उण पर बठ'र विसाई खाणे अर भरणे री सज मति अर प्रवाह देखणे मे एठो आण द आव। जातरी मारग री दिक्क्ता भूल'र तरा ताजा हू जावैं। ओ स्रोत अदाज 4 कि मी माथ पड। अठ सू हेमकुण्ड किला सवा किलो मीटर है। आगे रो मारग भी आडो खडयो है पण आधा कि मी र पछ हेम कुण्ड पर वण्या टीन रैं चददरा री पात दीखण लाग। मुकाम र नडे हुवणे रो पूर्वाभास मिळणे सू आपणे श्रम री माथक्ता मजिन पूरी होणे री सम्भावना सू नारखना मिळ। हेमकुण्ड पूखणे पर बठ र अपूव सोवणे दृश्य सू हरख अर गरी शाति री अनुभूति हुव। चाफ मेर दूध मानद ऊजळे ग्लेसियरा सू घिरयो पठार नुमा इण जाग्या एक गरे नीले स्वच्छ जळ री एक रमणीय छोटी झील अर उण र एक किनारे लक्षमण जी रो बोत प्राचीन मिंदर सामणे पुजारी रो एक कमरे रो आवास। दूसरे कानी लकडी अर टीन री चादरा सू वण्या गुरुद्वारा। कवत है के लक्ष्मण जी आपणे पूरव जिनम म शेष नाग र रूप मे अठ तपस्या करी ही। गुरु गोविंद सिंह जी भी अठ साधना करी। इण बात री जाणकारी सन् 1937 म लागी। उण वेळा सू ई अठ गुरु

द्वारे रै निर्माण रो काय शुरु हुयग्यो, जिको आज तक चालै है। अठ भी सेवादार जात-पात र भेद भाव सू रहित सब यात्र्या र चाय आद री व्यवस्था कर अर परसाद मे हलवो देव। वडी सख्या मे रोज सैकडो हिंदू सिख समान आदर भाव सू अठ अरदास करण आव। हेमकुण्ड इतो सुरम्य अर मनमोवणो स्थान है क लगातार कुदरत र निजारा न घटा-दर-घटा बठया देखता रणे सू भी तृप्ति नी हुवै। दीठ अर आत्मा री प्यास बुझ नी। चारू मेर रा डूगर चादी रा मुकुट ओढया आपरो उजियारो कुण्ड र जळ म देखता जाणी ज। माखनलाल चतुर्वेदी भारत माता न 'हिम किरीटिनी' रो जको सम्बोधन दियो वो अठै साचो अर पूण सायक दीखै। इण 5½ कि मी री जातरा म 3 घटा लागग्या। शरीर थक र चूर होयग्यो। पण अठ री अबूझ और अनिवच नीय सुदरता सू मन हृदय री विभोर हो उठ अर असीम आनन्द री प्राप्ति हुव। घटे भर सुसताणे अर कुदरत रे विविध निजारा रो आणद लेणे रे बाद स्नान करण ताई झील र सार पूग्या तो पतो लाग्यो क ठड री अधिकायत र कारण पाणी री ऊपर ली परत बरफ र रूप म जम्योडी है। घणकरा साथी तो ठड रे डर सू न्हावणे सू तोबा कर ली पण 6 साथी और मैं तयार हुया। नुकीली डाग सू बरफ री परत तोडी। कई तान ताई तो टाबरा दाई बरफ नै भाटे दाई झील माय बगा र दूर तक फिसळती देखणे रो खेल खेलता रया। प्रकृति रो सम्पक अबोधता अर निश्छळता रो वाहक हुव औ अठ पतो लाग्यो। इण क्रिडा पछ पिघळयाडी बरफ म पग मेलता ई पग री आगळया ई नही पिडळया ताई सुन्न हुगी। फेर ता भाग'र पाणी सू बार आग्या। ठड सू सगळो गात अर पग कापे हा। लछमण जी र मिदर री भीत आल र खिया ई गडया र सथया। हथाळया सू पगा री मालश करी क थोडो गरमी रो अनुभव हुय। फेर तो बार बठ'र लोटे सू पाणी घला पगा पर अर फेर नीठ दो चार लाटा शरीर माय नाग र जल्दी सू कपडा परया। एक दो साथ्या पाणी मे डुबकी लगाई भी तो 30 सकड सू बेसी पाणी म नी ठर सक्या। मदिर रा दरसन अर चाय पाणी म 1½ घटो लाग्यो। 10½ बज्या पाछा उतरण लाग्या। उतराई म आधो समय ही लाग्यो अर कठिनाई भी महसूस नी हुई। 12

वज्या ताइ घाघरिया पूगग्या। विसराम कर्‌यो। 1 वज्या भोजन पछ फेर थोडी विसाई कर 2 वज्या पूठा गोविंद घाट ताई टुरग्या। मारग म नदी र सारे चालता झरणा मोता घाटया री हरियावळ अर पल पल बदळता निजारा रो आणद लेता 6 वज्या पैला लक्ष्य ताई पूगग्या। रात्री भोजन अर विसराम गुरुद्वारे म ही करयो।

आगले दिन भोर मे गोविंद घाट सू बद्रीनाथ वास्ते बस सू रवाना हुया। ओ मारग 25 कि मी है। इण मे पाण्डुकेश्वर अर हनुमान चट्टी नाम री दो वस्त्या बीच म पड। पाण्डूकेश्वरा मे विष्णू रो छोटा सुदर मिंदर भी है। ऊची चढाई र कारण सडक सप दाइ वळ खाती चाल। कई जाग्या तो बस सू नीच सडक रा पाच छ मोड तक दीख। सडक र सार ही कई जग्या पदल माग भी साथ साथ ववे। इण पगडडी र मारग सू भी सैकडो सरधालु जातरी अर साधु सत वैवता दीखता रव। करीब सवा घटे बाद जद बस बद्रीनाथ रै बस स्टैंड पूगी तो मन हरप सू उछळण लागग्या। घणा दिना सू देश र चार धामा मे सगसू ऊचे अर कठिन यात्रा आळे तीरथ बद्री धाम र दरसना री माय पूरी हावणे री सम्भावना सू म्हे सब उमाव सू भरग्या। बस सू उतरते ही पण्डा आयग्या अर आपरे जजमाना री पूछताछ करण लग्या। बीकानर क्षेत्र रो पण्डा जयनारायण भी बठै पूगग्यो हो। म्हाने साथे लेर गीता भवन नाव री धरम शाला मे म्हारे ठहरने री उण व्यवस्था करवा दी। आवश्यक सामान आद खरीदणे री जाग्या बता दी। राती री भीषण ठड सू बचणे वास्ते गिरायै रा कावळ आद दिलवा दिया अर दिन म भी केई बार म्हारी सम्माळ लेवतो रयो। ओ बी कयो क थाने पइसे टक री जरूरत हुव तो म्हारे कन लै लीजो। घर सू दूर परदश म एक अणजाण व्यक्ति सू आज रै युग मे अपणाप अर मदद री बात सुण र वौत आत्मीयता रो अनुभव हुयो। आज पण्डा रै बौवार मे लालच आद बुराया भले ई देखणे मे आवै पण प्राचीन काल मे जातरा मे अ लोग आपणे जजमाना रा अवश्य ही वोहत मददगार हूता होसी इण म शक री गजाइश नी है। बद्री धाम दो तीन हजार लोगा री वस्ती है। घणगरा

लाग पण्ण था दूकानदार है क मन्दिर रा पुजारी आप। मन्दिर प्राचीन अर पहाड़ी शैली रो है। मन्दिर म धी री जोत जागै अर अखंडी रवै। पुजारी दक्षण भारत रा नम्बूदरी ब्राह्मण है। एक धार्मिक विस्वास आ बी है कै बद्रीनाथ र जळ सूं जद रामेश्वरम र शिवलिंग रो अभिषेक कराव जद ही रामेश्वर री री जातरा पूरण मानीज। प्राचीन भारत म सार्वभौमिकता और अखण्डता री भावना रा रूप सूं धामां और उदाहरण कांई हू सक है। भारत रा चार धाम देस र चार दिसावां म ता थरपीजिया है ही पूजा उपासना री दीठ सूं भी एक दूजर सूं जुड़योड़ा है। मंदिर म बड़ी विशाल री सावणा करता है। मन्दिर र पाछै नीचै ई नगर रा चार बड़ा कुण्ड है। यात्री आं मैं पैला स्नान कर नै मन्दिर जाव। कुदरत रो कैडो विचित्र करिस्मा है क एक कानी ता उफळतै पाणी रा स्रोत अर थोड़े टीक नीचै 20 फुट री दूरी पर हिमनद रो शीतळ प्रवाह। मन्दिर र सामै हिमालय रा बरफ सूं मन्डयोड़ी चोटी पाखड़्या। घाड़ू अर शांत वातावरण अर सीधा सरस भला लाग। एक असीम शांति अर आणन्द अठै मिळै। इण क्षेत्र र वासिंदा माथ समाज री निगवत कुदरत रो परभाव बसी है। ओ ई कारण है क सहरां री बुराइयां ओजूं तक भी अठै नी पूगी है। अठै रा लोग भला ईमानदार अर सहयोगी है। चोरी, धोखा धड़ी आद री पठ अज तक ता नी है। प्रकृति र दोई भाग म भी सुन्दरता ताजगी अर गरिमा दरसण न मिल है। स्नान दरसण र बाद धर्मशाला आग्या। नड़ै ही देसी ढाबो हो। भोजन कर र विश्राम कर्यो। 3 बज्या वापस पुळ पार कर नदी रो अपूरब दृश्य देखण लागग्या। मंदिर खुळण म देरी ही। चार बज्या फेर मंदिर रा दरसन कर्या। उत्तराद कानी 3 कि मी माना नाम री जाग्या है। बठ गया। इण जाग्या सूं दूर सामण तिब्बत री सीमा दीसै। चीनी सैनिका रा शिविर दूर सूं धुधळा धुधळा सा दीसै। 5½ बजे तक वापस पूगग्या। सीत खूब बढण लागगी ही हवा भी तेज ही। थोड़ी ताळ ताई बस्ती र सामान्य बाजार म घूमता रया। 6 बज्या तो हलको अंधेरो हुयग्यो हो। सर्दी काफी तेज हुयगी। ऊनी कपड़ा, कनपच अर दस्ताना आदि परणा पड्या। भोजन र बाद

8 वज्या सू पला ई कमरे मे आणो पड़्या । रात्री म सब कपडा अर विछावण औढण री व्यवस्था थका भी सर्दी रो अनुभव हुतो रैयो ।

आगले दिन तडक 5 बज्या बद्रीनाथ सू बस म केदारनाथ री यात्रा तार्ई चाल्या । विष्णु प्रयाग, जोशीमठ, पीपल कोटि हुता चमोली पूच्या । अठ सू एक सडक करणप्रयाग, रुद्र प्रयाग, श्री नगर अर देव प्रयाग र रास्ते ऋषिकेष जाव । दूजो गोपेश्वर, चोपता हुती उखीमठ पुग । अठ रुद्र प्रयाग सू जोशीमठ हू र आणे वाळो सडक भी आ मिल । 1970 सू पैला तो केदार नाथ री जातरा जोशीमठ सू ई पदल हुती पण अब निजुणी नारायण सू आग गौरी कुण्ड ताई तो बस जाव, आगे री 14 कि मी री यात्रा पदल करणी पडे । साय 4 वज्या गौरी कुण्ड पूगग्या हा । काली कमळी वाळे री धमशाला मे आवास करत 5 बजग्या । बस्ती र मदिर रा दशन कर्‌या । भाजन अर बस्ती रे अवलोक्न र बाद नौ बजे तक सोग्या । प्रात घुधळके ही गौरी कुण्ड र गरम पाणी र स्रोता मे इस्नान कर तराताजा हू'र उतराद दिशा मे पहाडी मारग सू आगे वढणा हो । बाजार जठ खतम हुव, वठ सवारी वास्ते खच्चर अर पालकी आद रो न्तजाम भी किराय सटट हू जावे । कमजोर अर बूढा ठेरा लोगा ने आ साधना रा सारो लेणो पड । केई सुखी सोरा नागरिक भी टट्टू किराया ले लेव । नुकीली कीले वाली लाठी भी अठ 3/4 रु मे मिल जाव । जिको चढाई मे बौत काम आव । ढळवा रस्ता म फिसळण सू बचाव । रस्ते र जीवणे कानी मदाकिनी बव अर डावे कानी ऊची पवत चौटया दीसे । इण दो या र बीच पाच फुट रो सकडो मारग । चढाई दोरी अर आडी ऊभी । 2 कि मी चलणे र बाद जगळ चटटी री वस्ती आव । अठ चाय नास्ते वास्त यात्री आवश्यक्ता मुजीव ठरे । 3 कि मी ऊपर चढणे सू डाव पासी एक गाव आव, अठ भी सेव अर चाय आद मिल जाव । इण दो यू स्थाना म बिना रुक्या म्हे आग वढ्या । 8 30 वज्या रामपाडा गाव पूचग्या । आ जाग्या गौरी कुण्ड सू 8 कि मी दूर है । काळी कमळी वाळे बावा री धम शाला अर ठहरणे रा छोटा माटा केई हाटल है । थोडी देर सुस्ता'र आग टुरया । आग रो रास्तो

विकट चढाई आळा है। मदाकिनी री धार कठेई सकडी ता कठई बौत विशाल, चौडी। कठई वहाव बौत धीमो है ता कठई वेगवान। 10 वजता वजता म्हे केदारनाथ सू 1½ कि मी दूर रयग्या। पहाडी माथे ऊचा बण्योडा केदारनाथ मदिर री शिखर दीसण लाग्यो। सगळा उत्साह उमाव सू भरया आग बध्या। मदिर नैडे स्वर्ण पर पला मदाकिनी र निरमळ शीतळ जळ म स्नान करया। केदार नाथ री ऊचाई 12500 फिट र नड है। ठड र कारण एकर माथो सूनो सो लाग्यो। बगा नाह र ऊचे चबूतर माथे बण्योडे प्राचीन मदिर रा दशन करण न गया। मदिर रो बारलो हिस्सा पत्थर रा है। शिखर उत्तर भारत र शिवालय शली म निर्मित है अर गभ गृह म शिवलिंग री जाग्या एक तीन कूणी शिला रास्योडी है। आ कहावत मशहूर है क जद शिव पावती अठ महीष र रूप म धरती म लुप्त हूण लाग्या ता पाण्डवा बाम बाथ भर'र पकड लिया। आ शिला महीष री पीठ रो प्रतीक है। कवा है क इण महीष रा आगलो भाग नपाल म पशुपतिनाथ र रूप म प्रकट हुयो हो। वडी क्दार री आ भूमि सुरगी अर शात हूणे र कारण ऋषि मुनिया री धरती रई है। उत्तम स्थाना मे उत्तम विचारा रो उदभूत हूणो सोभाविक ही है। आ ई वजह है क हिमाळय पर साधणा करण वाळा भारतीय चितक महान दाशनिक सिधात अर आदश समाज व्यवस्था देणे म सफल हो सक्या। अ विद्वान विग्यान र जनम सू बौत पला अणु सिद्धात, सापेक्षवाद रे सिधात माया और तत्व विग्यान आद सिधाता न लिख सक्या। आचाय चरक हिमाळय सू औषध अर वनस्पति भेळी कर सक्या तिजत रा सत कवि मिलरया हिमालय मे अग्य शक्तिया री वाणी सुण सक्या तथा वेद व्यास जिसा मनीषि अठ महाभारत जिस्सा गौरव ग्रथ री रचना म सफल हुया। अठ ई युद्ध री निममता सू दु खी पाण्डवा ने शाति अर मुक्ति मिली। गौतम निर्वाण प्राप्ति खातर अठ ई तप करयो। नारद, अगस्त्य अत्री भारद्वाज आदि वदना जोग न जाने कित्ता ऋषिया री साधना स्थली रा दशन कर आतमा तृप्त होयगी। आज भी जद जद इण घटणा री याद आवे तो मन विभार हू जाव है अर कल्पना री उडान भर उण स्थान पर पूच र घणे आणद रो अनुभव करण लाग है।

# पजाव रा नुवा-पुराणा तीरथ

भाखरा बाध अर उण सू सिंचाई अर बिजळी उत्पादन री योजना न स्वर्गीय प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू आज रा तीरथ कवता हा। खेतीहर देश हुते थका भी आजादी सू पला भारत म सिंचाई रा साधन बौत कमती हा। प्रथम पचवर्षी योजना रै मुजीव केई जाग्या वडा वडा बाध अर सिंचाई योजनावा बणाईजी जक सू आगे चाल'र 1960 र अतिम वर्षा मे हरित क्राति रो सूत्रपात हुयो। आठ साथ्या साथे इण स्थान र भ्रमण री योजना बणा गर्मी री छुट्टा मे 27 मई 1983 न बीकानेर भटिंडा रेल मारग सू रवाना हुया। औ सम्पूरण मारग बाळू र ऊचा धोरा आळो है। हरियावळ अर रूख र नाम फोग अर कर रा बिना पत्या आळा सूखा दरखत कठ कठई दीस नइ। रेत री ऊची नीची लहरदार पटया आळी धरती समूदर दाइ हिलोरा लेंती लाग। जळ र अभाव र कारण बस्तया दूर दूर है। रेल मारग र केई स्टेशना माथ तो बीकानेर सू रेल सू लायोडी टक्या सू पाणी देईज। जीवण री पली आवश्यकता खातर ई घोर मथण करण वाळे वीर बाकुरे मरवासिया रा वास्तविक जीवन कित्तो जूझारू अर जीवत रयो हुसी इण रा सहज म ही अनुमान लगायो जा सक है। वेसी मात्रा म धूळ माटी उडणे र कारण सगळा रेल यात्रा रा चेहरा, शरीर अर गाभा माथ बाळू री खासी चोखी परत जम जाव। अर सूरतगढ पूचता पूचता तो सूरत ई बदळ जाव। आगे र मारग म हनुमानगढ अर डब्वावाळी इण क्षेत्र री मसहूर मडया है। हनुमानगढ म बलवन रै समय रो बणायोडो एक सातरो गढ भी बताव है। अठ सू आगे ज्यू-ज्यू भटिंडा कानी बढा लोगा री भाषा अर पहराव पर राजस्थान री जाग्या पजाब रा परभाव बढतो जावै। सुबह 9 वज रै नडे भटिंडा जा

पूग्या। भटिंडा ज रा मार्शलिंग याड उत्तर भारत रै स सू वड़ा यार्डा म एक है। छोटी अर बडी लाईना रो ताता मीला दूर तक सीधा विछयोड़ा दीस। अठ री एक विशेता सात अळायदी दिशावा सू आ'र मिलण आळो रल मारग है। अत्ता रास्ता रो एक जाग्या मेळ कम हुव। स्टेशन माथ खासा भीड भाड रव। भटिंडा शहर तो वौत वडो कोनी पण मंडी री दीठ सू सूत महत्वपूण है। बाजार घणखरा पुराणी तज रा है पण नुई चाल री दूकाना भी दीस है। अठ रा खरबूजा भी मीठा अर मसहूर है। कपडै रा बिक्री बट्टा भी अठ काफी हूणे सू कपड री दूकाना खासी वडो अर आधुनिक है।

भटिंडा सू फिरोजपुर रो एक गाडी 9 30 जाव। पण उण दिन लट हूणे सू 10½ रवाना हुई। भीड काफी ही पण बठणे र आरक्षण र कारण आग री यात्रा आराम सू कटी। यू तो फिरोजपुर ताई रा रस्ता खामो हर्यो भरयो है पण बिच बिच म वाळु रा छोटा-मोटा टीला ठेठ ताई आवता ई रवे। 1 बज्या फिरोजपुर पूगग्या। जालंधर वास्ते गाडी पुणा तीन वज्या जाणी ही इण वास्ते स्नानादि कर लारले दिन री धूळ माटी सू निजात पाई। अठ दूसरी श्रेणी रा न्हावण घर भी साफ सुथरा अर खुला है। सतळज र सार वस्यो हुणे र कारण पाणी री बौतायत है। नळ रो जळ भी शीतळ अरप्रवाह चोखो है। मारग री सारी थकावट मिटगी अर सगळा साथी ताजगी रो अनुभव करण लाग्या।

फिरोजपुर जालंधर रेल मारग वौत हरयो भरयो है। नहरा अर खाळा री कमी नही। धरती चोखी उपजाऊ है अर बस्त्या नड नेडे है। अठ रै लोगा री कद काठी अर नाक नक्स सुदर है। महनत अर पुरषाथ री वजह सू सारो इलाको सम्पन अर सोरो है। प्राय सगळा टेशना माथ भीड अर रौनक रवे। छोटा टेशना पर भी खाणे पीणे री खासी चोख्या मिल। चत वसाख आळी फसल घणखरी तो कट चुकी ही पण गाडी स ई दीखतो हो क केई स्थाना म फसल औज भी उठ रई ही। नळकूप अर ट्रेक्टरा री सख्या इण क्षेत्र म बौत है। हिन्दू बस्ती हुवा या सिखा रो गाव गुरुद्वारा री सख्या सब जगह काफी है। उण दिन गुरु अजुन देव री पुण्य तिथि ही। इण र उपलक्ष म

लोहिया सास र टशन माथ केई सरधालु ग्रामीण यात्रा न सरवत शर्बत पिला रया हा। केई उत्साई तो गिलास भर भर'र गाडी रै डिब्बा मे भी आयगा। हिन्दू सिख दोयू समान रूप सू इण सेवा मे लाग्योडा हा। पजाव रो औ क्षेत्र वणस्पती सम्पदा री दीठ सू भी सम्पन है। अठ वट, नीम, पिलखण दूद कीकर, टाली अर केई जाग्या खजूर रा पेड मिल। जालधर र कन सफेदे रा पडा री सख्या भी घणी है। पानिया टेशन सु आगे कटरा दर पिंड मे अगूरा रो एक वडो वाग है जिको गाडी माय सू ही दीस हो। मालळी हरियाळी हूणे पर भी मरू धरती री कमी अठ भी नी है। फरक औ है क राजस्थान मे भूमि री सिंचाई तड पाणी कोनी, जद क अठ जल री थाई कमी नी है। अठ रा मारू जमीन मे मूगफली री उत्तम खेती हुव। अठै साल मे तीन फसला बरसीण कणक अर मक्का री नीपज। मारग रै मध्य म छिगूपर नाम र स्थान पर चमडे रो कारखाना अर जनता डिग्री कालेज है। ई र बाद कपूरथळा कस्वो पड जको आजादी र पला एक रजवाडा हा। साय $6\frac{1}{2}$ बज्या जालधर पूगग्या। टेशन कन ई धमशाला म रात्री पडाव राख्यो।

29 मई री भोर मे जालधर रल्वे टेशन सू सिटी वस पकड'र नुवे वस स्टड पूग्या। अठै मू $6\frac{1}{2}$ री वस सू नागळ बाध ताई रवाना हुया। डढ दो घटा मे होशियारपुर पूगग्या। आगे रो सम्पूरण मारग पहाडी है। बीच बीच म जठ समतल है, डूगरा सू व'र आता वाहळा रे पाणी सू सडक जाग्या जाग्या सू काटगी है। इण मारग री विशेषता है क इण सडक पर पजाव अर हिमाचळ दायू रा क्षेत्र आव। अठ री पाहड्या छोटी है। मारग उदयपुर–नाथद्वारा दाई दीस। कठ कठइ पहाड बीचो बीच काट र सडक बणायोडी है। करीब 11 बज्या नागल पूगग्या। नागळ म सुदर अर मोकळा वडो बाध है पण औ समतळ जमीन माथ ई है। चम्बल क्षेत्र र गाधी सागर या रावत भाटा दाइ पवतीय क्षेत्र म नी है। नगळ मू भाखरा बाध 7/8 मील दूर है। दिन भर आध आध घटे रे वीच सू भाखरा खातर वसा चालती रवे। घणी सवारया भेळी हूणे सू स्पेशल वसा भी चला देव। भाखरा बाध देखण वास्त नागळ रे

जन सम्पक अधिकारी मू आज्ञा लेनी पड, जिकी सारे सात मिल जाव। भाखरा बाध रा दो विभाग हैं–सिचाई विभाग अर विद्युत विभाग। सिचाई वास्त पाणी न जिण भीत सू रोके यो हिस्सो तो सगळे दर्शका ताई खुल्लो है। पण इण भीत र मायले हिस्सा म जठ टरबाइन चला र बीजळी बण अर जठ सू इण भीत र भीतरी हिस्सा री मरमत करीज इसी मरम्मतो सुरगा अर बिजळी घर न देखण ताई विनेय इजाजत लेणी पड। आ दोयू री इजाजत ले'र बस सू भाखरा चाल्या। बाध रै कन एक सुरक्षा चौकी माथ यात्रा रा कमरा आद जमा करवा लिया जाव, क्यू क सुरक्षा री दीठ मू अठ रा फोटो लेवणा वर्जित है। 12½ बजे म्हे नागल सू चल्या हा। आधा घटे म भाखरा पुगग्या। भाखरा साच ही आधुनिक भारत र प्रमुख तीरथा म एक गिणीज। इन भारतीय विज्ञान अर तकनीक र ज्ञान र क्षेत्र म मील रो पहला भाटो क सका। विशाल आकार अर मजबूती री दीठ सू भारत ई नही एशिया म इण री समानता मुश्किल है। इण बाध री ऊचाई 1100 फिट सू वेसी है अर ऊपरी भाग री चौडाई 400 फुट सू वेसी है। इण रे निर्माण म जित्ती सिमट लागी उण सू सगळी दुनिया रे चारू मेर 8 फिट री चौडी सडक वण सकती ही। बाध रे लारली झील रो नाम गाधी सागर है। साच म ई आ सागर ज्यू दीसै क्यू कै इण रो दूजो किनारो दिखाई नी दव। इण वष बिरखा री कमी सू और साला री तुलना म इण म पाणी कम हो। नीचे सीढया सू उतर र बिजळी घर रा विशाल जेनेरेटर देख्या। इणा रे चालने री विधि समझावण वास्ते नमूने र रूप मे बणायोडे छोटे मिनियेचर पावर स्टेशन र पले कक्ष म प्रदशन करीज। बाध री मायली मरमत करणे वास्ते 40 सुरग्या है। वातानुकूलित हूणे री वजह सू भीषण गरमी मैं भी अ घणी ठडी रव। मरमत रा तरीका अत्यन्त आधुनिक है अर आपणी तकनीकी श्रेष्ठता रा प्रतीक है। 3½ बजे नागल ताई आखरी बस जाव, पण उण दिन उडीक र बाद भी 5 बज्या ताई बस नी आई। आखर 5 बज्या भाखरा री वक मन रेल गाडी सू नागळ वास्ते टुरया। सौभाग सू उण डिब्बे मे एक भजन मण्डली भी चढी। चार पाच स्टेशन ताइ हरजश रो चोखो आणन्द लियो। 6 बज्या नागल पूग

ग्या। जिण विजळी घर सू आज मयूळो उत्तरी भारत लाभ उठाव अर जिण सिचाई योजना सू देश री दूजी सिंचाई याजनावा रो शुरूआत हुयो अर देश आज अन्न री दीठ सू आतम निभर हू सको उण आधुनिक तीरथ भाखरा रा दसना सू म्हे सव विभोर होग्या हा। हरख रो अनुभव मन मे करता होशियारपुर री अंतिम वस दौड'र पकड सक्या। पण मारग मे वस री पट्रोल टकी लीक हूवण लागी। ड्राइवर अर कन्डक्टर र बरावर कोशिश करणे सू रुक्ती रुकावती बस 4 बज्या बाद होशियारपुर पूग तो गी, पण आगे जालधर आळी आखिरी वस निकळगी। 9½ बजे री रेल पकडी अर 11 बज्या तक जाल्घर पूग्या। पण अठ म्हारी धमशाला रा पट बद हू चुक्या हा। आखर होली ड हाम नाम र होटल मे विसराम करयो। इण विघना बाधावा र बावजूद भी अनूठे सुख रो अनुभव हो रेयो हो।

30 ता री भोर म धमशाळ पूग'र दनिक नित्य कम स्नान आदि सू निपट र अमृतसर जाणे री तयारी कर ही रया या क एक साथी किसनलाल री घडी गुम हाणे री वात सुणी। नहाते समय विण नल र कन घडी उतार'र राख दीनी ही, पण वापस आते समय वो उणन भूल आयो। ईने बीन घणी छाण बीन करी पण घडी नी मिली। घटे भर री भागमभाग र बाद निरास उदास सगळा बठ्या हा क म्हार कमरे रे सारले कमरे मे ठहरयाडा सज्जन आपरे बेटे साथे बाजार सू पाछा आया। बाने पूछणे पर घडी मिलगी। वँ खुद भी पलाई लागा सू गासी पूछताछ घडी र मालिक र बारे मे कर चुक्या हा। आग सू इमी भूल चूक नई हुव इण बात री ताकीद आपस मे करता 7½ बज री गाडी सू अमृतसररवाना हू'र 9½ नेड अमृतसर पूच्या। सवसू पता मिवगा र प्रसिद्ध गुरुद्वार स्वण मदिर गया। गुरुद्वारे र बार जूता अर दूजा सामान राखण री निसर्ची सेवा व्यवस्था है। हाथ पग धाणे री टूटया साग्योडी है। ग्रन्थ साहब र प्रति आदर प्रकट करण ताई सिर ढकण वास्ते रुमाल ओर टोपी री व्यवस्था भी सुलभ कराइज। गुरुद्वारो घौत विशाल अर फूटरो है। प्रवेश द्वार भव्य है। इण पर नक्कासी रो चोखो काम है।

चढावे अर प्रसाद री आछी व्यवस्था है। प्रसाद मंदिर री तरफ सू वर्णे। कूपन दे'र निश्चित दर सू इ री बिक्री हुव। मंदिर प्रवेश रै वगत कूपन रो एक हिस्सो मुख्य द्वार माथ लियो जावै अर दूजो अचना सू पैला सेवादार ले लेव। चढावे र पछै ओ प्रसाद फेर दर्शन करण आळा म वाट देवे। ई तरा जजमाना री क्रिया सू मोटा हुण आळा पडा पुजारी अठ नी पनप सवे। न ही भक्ता री जेबा माथ पुजार्‍या री लालची दीठ लागी रव। जो चढावो अठ चढ उण सू शिक्षण शालावा, लगर, पुस्तकालय आद प्रवृतिया चाले। बडे बडे पदा पर आसीन अर भागवान स्त्री पुरुष मामाय आदम्या दाइ बतन माजता, झाडू लगाता अर दर्शनाथ या री सेवा करता दीखे। सिक्ख भक्त गुरुमंदिर मे गम्भीर श्रद्धा भाव सू जाव। कोई तरह रो दिखावो अर प्रदर्शन नी हुव। लगर मे वडा छोटा म एक पात मैं बठे। एक जिसा भाजन करै अर बडे सू बडा आदमी भी आपणा बतन आपणे हाथ सू धोव। लगर री व्यवस्था सू भूखे अर गरीब री उदर पूर्ति तो हुव ही है, समता अर भाई चारे री अनूठी भावना भी कायम हुवै है। स्वर्ण मंदिर र चौभीत मे ही बाबा अटल सिंह री नौ मंजिली समाध, गुरुवाणी अर सिक्ख धम दर्शन सू जुडयो पुस्तकालय, सग्रहालय, बगीचो लगर खानो अर यात्री निवास भवन आद है।

गुरुद्वारे र धोरी माडे सू पूरब कानी कोई एक फर्लांग माथ भारत री आजादी री लडाई रो पूजा जोग तीरथ जळिया वाळो बाग है। इण रो प्रवेश मारग एक सकडी गळी सू हो र जाव। नगर र बीचो बीच हुणे सू बाग चारू मेर ऊचा मकाना अर हवळया सू घिर्‍योडो है। उण सकडी गळी सू इ आत्याचारी जनरल डायर आजादी रे परवाना ने घेर र वा माथ अधा धुध अर अचानक गोळया दागी। बाग री भीता माथ मड्योडा रा निसाण आज भी उण री वरबरता री गवाही देव। प्रवेश द्वार र डावे कानी एक ऊडो चडो कुआ है। उपर लिखे हत्याकाड र समय भयकर भगदड र कारण कुओ लाशा सू भरग्यो हो। बाग र बीचो बीच आजादी पछै एक शहीद स्मारक बणवायो गयो है जिको ऊचा माथो किया आजादी खातर शहीद हुया जुझारु वीरा र त्याग री गौरव गाथा गाव।

अमृतसर मे दुरग्याना मदिर, काली मदिर, बिजली पहलवान रो मन्दिर अर कम्पनी बाग आद अय देखण जोग स्थान है। दुग्याना मदिर खासो बडो है अर इण मैं मकराणे रे पत्थर रो आछो काम है। हिन्दुआ मे इरी चोखी मानीता है। शीतला मदिर भी भव्य अर सुदर है अर स्वण मदिर री तरो मैं बण्योडा है पण उत्तो बडो अर विशाल कोनी। चार बज्या डीजल चालित गोल्डन टम्पल गाडी पकड र जालधर पूग्या अर रात्रि म ही फिरोजपुर रवाना हू र भटिंडा रे सागी मारग सू वापस आगले दिन घर पूगग्या। स्वण मन्दिर म सिक्ख सम्प्रदाय र लोगा म जिसी आत्मीय भावना अर जलिया वाळे बाग री सामळ घुरबानी ताई आदर भाव हिन्दू सिक्ख दानूआ म देखण न मिल्यो आज उण रो अभाव मन म एक दरद पदा कर देव है। एक बार गाधीजी कयो हो क भारतीय सस्कृति री विशेषता इण रो समन्वय भाव तो है ही पण उण सू भी बत्ती इण म आपर विचारा न ठीक करण री ताकत है। निश्चय ही भ्रष्ट राजनीति सू उपज्या अलगाव बगा दूर हो र सदिया सू कायम भाई चारा अर आपस रो सद्भाव कायम हुसी।

# हाडौती सू मेवाड ताई

गजोग सू नुव माल र पैलडे दिन ई म्हारे यात्रा री सरूवात हुई। दिनूग ठीक सात बज्या कोटा सू बस में बठ र बूंदी कानी रवाना हुया। आपूणें राजस्थान री धारा री धरती में रवण वाळे व्यक्ति खातर सघन हरियाळी मोटा मोटा बिरख आटा स्याता नदी नाळा, हवोळा लेवता तळाव ईख अर गेहू री हरियाळी सू लदी उपजाऊ धरती री निजारो एक अपूरव अनुभव हो।

कोटा सू बूंदी ताई री कुल 23 मील रो मारग सुरंगो अर रमणीक है। मारग मे चवळ र अलावा घोडा पछाड अर भीमलत इत्याद बरसाती नदी नाळा ई आव जिणा मे इण दिना पाणी तो नी रैवें [illegible] बारे [illegible] मे बरसात मे अ चुणाव जीतयोडा उम्मीदवार री [illegible] जोर सू [illegible] हुसी। ठेठ ताई मकी अर गेहू री वाला न पवन मा [illegible] देख र हिवडे में हरख हुयो। कारण क लारले केई बरसा सू राजस्थान दुरदाई दुकाळ री चपेट मे रहयो। अदाजन सवा घंट में म्हे बूंदी पूगग्या। बूंदी रा राजम्हैल देखण जोग है। इण म्हैला रा आयताकार [illegible] [illegible] बणी [illegible] टोड्या [illegible] उणियारे वाळी छता इत्याद री कारीगरी [illegible] जाग है। [illegible] मणगढ भाटा सू बणी थकी है अर वा माथै चूने-बजरी रो [illegible] है। इतरा बरसा न-बरस बीत्या [illegible] बारी चितराई [illegible] देखण जोग है। वा माय माद्दा [illegible] बन बूटा [illegible] [illegible] गरब हुव। भीता माय नान नान रा चितराम [illegible] पढण लागग्या है। चित्तौड अर उदयपुर री [illegible] साधारण है। पण [illegible] री कारी माथै [illegible] हाडा राजाया री [illegible] [illegible] करै।

बूढी चित्तौड मारग म मेनाळ री प्रसिद्ध अर प्राचीन शिवालय आव। इसी मानता है के इण प्रसिद्ध मंदिर री निर्माण 11 वी सदी म हुयो। प्रमुख शिवालय र अलावा उणर आहत म निराई नना मोटा मंदिर अर टूटी भागी प्रतिमावा पड़ी है। अे खडित प्रतिमावा आज भी आक्रमणकारियां री गाथा न उजागर कर। शिवालय रै बन ई भोळानाथ र प्रिय वृक्ष बेलपत्र रा मोकळा गोड ऊभा है। अठे सू 3 4 मील उत्तर पूरब मे माडपुरा नाव री बस्ती आव। अठ दामती मोकरा सिंचाई योजना, हठळ 14 लाख री लागत सू 16700 लाख घनफुट जळसग्रह री खिमता वाळो अेक जळाशय बण्याडो है जिणसू 1200 अेकड जमीन म सिंचाई होवे। आगे मारग मे माडलगढ, बेगू बीचौर पारसाली अर बस्सी इत्याद करबा पड। म्हे सिंझ्या रा करीब सात बज्या चित्तौड पूग्या। बी दिन उम र मेळे रै कारण उठ घणी भीड ही। चित्तौड कालज रा अेक साथी र सोज'य सू अेक स्थानीय धरमशाळा म रात वास री व्यवस्था बैठगी अर दिन भर रा थाकयोडा मगळा साथी पडता इ गेहरी नीद मे सायग्या।

2 जनवरी न तडके ई इतिहास प्रसिद्ध चित्तौड र किले माथ चढ्या। चित्तौड री नाव आवता ई महाराणा हमीर, कुभा, साणा, प्रताप, भामाशाह, जयमल, पत्ता, रतनसी जिसा नरपुगवा अर मीरा, पद्मणी, पन्ना धाय जिसी प्रात स्मरणीया वीरागनावा र प्रति शीश मतई झुक जाव। जातीय गौरव अर धरम री रक्षा मे सदा तत्पर देवण आळा इण सूरवीरा री धरती रो अेक अेक पत्थर शालिग्राम है अर इण माटी री पवित्रता मथुरा, काशी, अर प्रयाग सू कम पावन नी है। जठ रा सूरवीरा आक्रमणकारिया री दासता स्वीकार करण पान साको करण प्राण देवणा आछो समझ्यो, जठ वीरागनावा अेक नी तीन तीन बार जौहर्व्रत धारण कर धधकती ज्वाळा म कूदणो उचित समझ्यो, इस पावन स्थान माथ ऊभ'र म्हे सगळा श्रद्धा अर हरख सू सरोबार हुयग्या।

चित्तौड रा गढ न 'गढ तो चित्तौडगढ और सब गढया' कबत र मुजब ई पायो। जो देख जाण र धणी इचरज हुयो क गढ म सब्डू अेकड खेती

जोग जमीन है जठै आज भी लेहरा लेवता खेत झूमता ऊभा है। अठ पाणी रा बीसू नना मोटा प्राकृतिक तळाव अर स्त्रोत है। इण वास्ते दुश्मण र हमल री वखत अठ खाद्य अर जळ रौ अभाव, नी हुय सक हो। ओई कारण हो क बरसा ताई दुश्मण सू घिरयाडा रय'र भी सिसोदिया राजपूत वारो मुकाबलो क'र सक्या।

किल माय पूगण खातर ऊँची चढाई आळी घुमावदार सडक सू पाडन पोळ अर राम पोळ आद सात दरवाजा पार करणा पड। इण सू किल री मजबूती अर निरमाण करावण वाळा री सूझबूझ रो परिचय मिल। किले म देखण जोग स्थाना मे नवलखो भडार बणबीर री दीवार भामाशा री हवेली सिणगार चवरी, रामजी रौ देवरो कुम्भा म्हैल कुम श्याम रो मिंदर, जस्थम गौमुख कुड, काळका मिंदर नवगजो पीर पदमणी रौ म्हैल कीरत स्थभ इत्याद उल्लेख जोग इमारता अर जगावा र उपरात किल मे सकडू सुदर देखण जोग स्थान है। इणा म कीरत स्थभ अर विजय तो स्थभ अेतहासिक महत्व र साग साग भारतीय स्थापत्य कला रा इसा नायचीन नमूना है के घडी दो घडी लगातार देख्या पछ ई आतमा अर आख्या री प्यास नी बुझ।

बी दिन ई दुपर मे अेक बज्या नाथद्वारा वास्ते रवाना होयग्या। सावला नालेरा सिंहपुर काकरिया, निवाडा, खेरखणी कपासण, मुगाडा भोपालसागर फतेनगर अर मावली होवती बस नाथद्वार पूगी। इण मारग म थोर खजूर ढाक अर कीकर रा बिरख बेसी है। पाम्हेडी नाव रे गाँव म आम रे दरखता री इतनी बोह्ळाई है कि ओ गाव आमा आळी पाम्हेडी बाज। सिंझ्या रा साडी सात बज्या रे करीब म्है नाथद्वार पूगा। धरम साळ मे समान धरन उत्तर भारत र से सू प्रसिद्ध वष्णव तीर्थ श्रीनाथ जी र मिंदर रा दरसण करण न पूग्या। मिंदर बहोत पुराणो है अर इणरी मानता ई घणी है। हर हमेस हजारू यात्री दूर दराज सू अठ दरसणा खातर आव। हजारू पीपा घी अठ रोज चढाव म चढे। अठरा पुजारिया ने पगार तो कम मिळे पण दोनू वखत रो भोजन प्रसाद के रूप मे मिळे। इण भोजन ने पुजारी श्रद्धालु भगता

ने वेच'र पइसा कर लेव। मोट मोटे रईस घरा रा स्त्री पुरुष श्रीनाथजी र शृगार अर भोजन व्यवस्था मे आपरी सेवा देय र खुद न कृताथ मान।

वष्णव मिंदरा री व्यवस्था मुजब अठै भी मिंदरा रा पट दिन मे कई वार खुल अर बद होव। अठ री पूरी वस्ती अर बाजार मूळ रूप मे यात्रिया माथ ई निभर है। मिंदर अर अठरी व्यवस्था देखण जोग है। नाथद्वारे री चित्रामकला तो जगप्रसिद्ध है।

सिंझ्या रा सात वज्या काकरोली वास्त बस पकडी। आधं घट म ई रायसमद पूगग्या। उदपुर कानी जावण वाळा यात्रिया न इण विशाल झील रा दरसण जरूर करणा चाइज। झील रे तीर माथ ऊभा हुया निजर देठाळ पाणी ई पाणी निग आव। झील री आगोर कोई 42 मील री वताव। इणरो प्रमुख घाट घणौ विशाल अर सातरो है। घाट रा पगोथिया ई इतरा कलात्मक अर सोवणा है के इणारी भव्यता आग हरद्वार, प्रयाग अर काशी इत्याद रा घाट ई फीका लाग। घाट र माथ ई 'नौ खूटी नाव रा कलात्मक चबूतरा वण्योडा है। या र छता अर थामा माथ चोखे मकराण री मूरतिया उकेरयोडी हे अर खुदाई रो मीणो काम हुयोडो है। बीन देखर देलवाड (आबू) रा जन मिंदर याद आयजाव। पण दुरभाग री बात आ के पुरातत्व विभाग कानी सू इण स्थान री कोई सार सभाळ नी होवण सू 'भद्र' लोग इण कलात्मक प्रति मावा न तोड तोड'र लेजा रह्या है। इण भात हिंदू मूरतकला री आ वेजोड अर उत्तम सपदा नष्ट होय री है। रातवासो लेवण खातर म्है नाथद्वार पूगग्या।

तीन तारीख न दिनूग श्री नाथजी रा दरसण करन सात वज्या री वस सू उदपुर वास्त रवाना हुया अर की घटा मे उदपुर पूगग्या। उदपुर राजस्थान रौ काश्मीर वाज। अठ पिछौला, फतसागर उदसागर सरूप सागर अर ज समद जिसी टणकी झीला आयोडी है जिणसू च्यारूमेर हरियाळी ई हरियाळी छायोडी है। नगर म श्री महाराणा रा म्हैल, गुलाब वाग मोती मगरी, चेतक स्मारक नेहरू उद्यान अर महल्या री वाडी इत्याद देखणजोग

स्थान है। जगमिंदर अर जगनिवास म्हैल तो पिछोला झील र बिचाळ बण्योड़ा है। नाव म बैठ'र म्हैला ताईं घूमणो ई बडो आणददायक काम हैं। पयटन विभाग वानी सू उदपुर र विकास वानी पूरो ध्यान दिरीजण सू अठरी छवि सुधरी है। साफ सुथरी चोडी सडका, हरया भरया बाग बगीचा अर ऐहरा लेवती झीला मन न मोह लेवे। सहेल्या री बाडी म लाग्या फवारा ई देखण जोग है।

उदपुर री लोक कला मडल नाव री सस्था दुनिया म नाम कमायो। कठपुतळी प्रदरसण र क्षेत्र म पूर ससार मे इण सस्था री कोई मुकाबलो नी हैं। इणरै सग्रहालय म प्राचीन पोशाका देख जिसी है जिण म ई मेवाडी पाग रा नमूना तो सरावण जोग है।

उदपुर, रा म्हैल-मालिया घणा भ य है। शीश महल मे काच रौ लूठौ काम हुयोडो हैं तो दूजा कई म्हेला री छता माथ सोन र पाणी री आपतौ काम हुयोडो हैं। सूरज भगवान री अेक अनोखी धातु री प्रतिमा इ म्हैल म मौजूद है। इण भात हाडौती सू लगायन मेवाड ताईं राजस्थान री भव्यता रा दरसण सागोपाग रूप सू हुय जावै।

# सस्कृत्या री सगम स्थली मगध

हिन्दू, बौद्ध, जन सिक्ख अर मुस्लिम सस्कृति रो समन्वित रूप जदी एक ठौड एकत्र रूप मे देखण न मिल तौ मगध मे। इण क्षेत्र ने विदेह राज जनक, महर्पि याज्ञवल्क्य, न्यायसूत्र रा रचयिता गौतम, भगवान बुद्ध, आखे ससार मे धरम री धुजा फैंरावणिया महान् सम्राट अशोक, विश्व न शाति रो सदेश देवणिया जन तीथकर महावीर स्वामी, पीडित मानखे रा उद्धारक गुरु गोविंद सिंह जिसा महापुरषा री बिहार' स्थली हूणे रो गौरव प्राप्त है। पाटलीपुत्र (आज रो पटना) राजगिर, नालदा, गया, बौद्धगया, पावापुरी अर बिहार शरीफ आद विभिन्न सम्प्रदाया रा अन्तर्राष्ट्रीय ख्यात रा ऐतिहासिक अर धार्मिक स्थल भी इण पावन भूमी में स्थित है। चाणक्य, राक्षस, कामदक जिसा नीतिज्ञ पुस्यमित्र जिसा सेनापति, मुगल साम्राज्य न चुनौती दे'र नुवे कुशल शासन री थापना करणिया शेरशाह सूरी जिसा महापुरषा री क्रिडा स्थली आ जाग्या ई रैयी है। ससार री दिग्विजय रा सुपना देखणिये सिकदर रा हौसला पस्त करणे री खमता मगध री शूरवीर सेना मे ई थी। नालदा सरीखा ज्ञान विज्ञान अर कला रा केन्द्र अर सम्पन्नता अर आर्थिक समृद्धि रा राजगृह जिसा विश्व विख्यात नगर अठ ई हा। जिण गुणा अर विशेषतावा सू परभावित हू'र मेगस्थनीज, ह्वानसाग, फाइयान जिसा यात्री भ्रमण दशन अर अध्ययन ताइ मगध आया, उण पावन भूम रा परतख दशन री योजना सू हिवडो उमाव उत्साह सू भरग्यो हो।

गरमी री छुट्टा मे मई री 27 ता न रेल मारग सू दिल्ली हूता पटना पूच्या। दिल्ली सू आगे उत्तर प्रदेश अर बिहार मे रेल यात्रा गढ जीतणे सू कम

नी है। आरक्षण र बावजूद दिन तो दिन रात मैं भी सीटा सू घणा लाग डिब्ब वड जावै अर सीटा अर फरस माथे पसर जाव। टिक्ट बाबू की डर सू अर पइसा बटारणे री दीठ सू बाने बरज कोनी। दु ख उठाव ता कानून सू आरा करवाण आळा सीधा यात्री। दिल्ली हावडा जनता सू पटना पूगण म 20 घ लाग जाव। आगरा, कानपुर, इलाहबाद, बनारस आद बडा शहर मारग आव। पटना पूर्वी भारत रो चोखे बडा ज स्टेशन है। स्टेशन र बार जी हाथ थोडी दूर सामले पास अग्रवाल वश्य धमशाला है। इण म ठरहण व्यवस्था हुगी।

पटना रो पुराणो नाम पाटलीपुत्र हो। यूनान र सास्कृतिक इतिहास एथेन्स रा अर युरोप री राजनीति म रोम रा जको स्थान है, प्राचीन भारत वो ई महत्व पाटलीपुत्र रो है। मानख ने कल्याण रो नूवा सन्देश, ज्ञान अ नीति रो उपदेश देवण म पाटलीपुत्र रे योग नै भुलायो नी जा सक। महा मौय अर गुप्त साम्राज्या री रजधानी हूण अर भारत न राजनीतिक एकता सूत म बाँधणे रो श्रेय भी इण न जाव। आपरे हजारा बरसा रै इतिहास पाटलीपुत्र उतार चढाव रा अणेक मौका निरख्या देख्या। काल री दौड इण रा केई नाम उभर्‌या मिटया अर फेर पनप्या जिया — पुष्पपुर कुसुमपु कुसमावती मौय नगर पटल अजीमाबाद, पटना आद।

28 मइ न शहर रा देखण जोग स्थाना र भ्रमण ताइ निकळया। सू पला स्टशन सू थोडी दूर गाधी मदान र पछमाद मैं काळी गोळ घट्टा दाई लागतो गोळघर देख्यो। बताव क 1770 ई म अठ भयकर काळ पड हो। हजारू लोग भूख सू मरग्या। साम्राज्यवादी अग्रेजा भारत री कृषि विकास करण कानी कद ध्यान नी दियो। व इण बात न आपरे स्वार्थ अनुकूल नी समझता। अन्न री कमी सू आगे भळ लोग रानम नी हूव इण भा सू अन्न भडार रे रुप मैं इण गोल इमारत रो निरमाण हुयो। इण गोलघर ऊपर चढण ताइ घुमावदार रस्तो है। ऊपर सू नगर री शाभा देखणो आ लाग। गोळघर र माय काई आवाज कर ता वो री अनुगूज खासी देर ता

सुणीज। बासुरी री धुन अर चूडया री खणक भी चोखी लाग। बार सू नीचे रो दरवाजो बद हूणे र कारण म्हे इण तरा री ध्वनि अर वी री गूज नी सुण सक्या।

पटना म सचिवालय भवन री इमारत ऊंची विशाल अर सुदर है। इ र पूरबी फाटक र चौरावे माथै शहीदा रो प्रेरणा देणे आळो एक भव्य स्मारक है। बीस फुट ऊंचे चबूतरे माथ सात शहीदा री भाव भरी मूत्या है, जकी आजादी र सघप अर बळिदान री काणी कतो दीस। अ मूरता शौय, सकल्प अर कुर्बानी री जीती जागती तसवीरा दाई लाग। इणा नै देख'र 1942 री घटना सिनमा री रील दाई आख्या आगे तिरण लाग। एक झीणे आवरण र लार धीरे धीरे साफ हूता दृश्य–एक विशाल सभा। देशभक्त मतवाळा रो सचिवालय माथ तिरगो फराणै रो निरणय। 11 अगस्त नै 20 हजार लोगा री विशाल रली सचिवालय कानी चाली। सरकारी सनिक अधिकारी र आदेश सू घुडसवार बदूका ताण लेव। भीड रोक्या नी रुक। अचानक अधा धुध गोळ्या री बौछार हुव। गोरा अफसर सचिवालय रो गेट बद करवा देव। 6 युवका नै गोळी लागे। व बठई शहीद हुव। सैकडू घायल हुव। पण एक सूरमो जान हथेली माथ ले र पछमाद बारल सू सचिवालय मैं जा ऊपर चढ'र युनियन जक री जाग्या तिरगो लहरा देव। गोल्या बद नी हुव। राममोहन स्कूल र एक छात्र र भळ गोली लागे। असपताळ म 'भारत माता री जय रो जयकारो लगातो शहीद हुव। इण सात लाडला री सहादत बेकार नी जाव। देस आजाद हुव। उण री याद मै बण औ स्मारक। केई दूजा दृश्य अर उणियारा घूम जाव स्मृति री दीठ म। चम्पारण रा सत्याग्रह, 42 रा भारत छोडो आ दालन, हजारी बाग सू जेल तोड'र भाग जाण वाळा युवका रा प्रेरणा स्रोत जे पी, श्रद्धा जोग राजेन्द्र बाबू अर नजरूल हक। आदर अर सरधा सू इण महा मानवा अर इणा न प्रसूत करण आळी धरती मा र नमन न माथो झुक जाव।

11 वज्या र करीब पटना सग्रहालय देखण ताइ बुद्ध माग पूग्या। इण री इमारत मैं हिदू राजपूत स्थापत्य अर मुगल स्थापत्य रो बढिया मिश्रण

है। इण मैं मूरता अर चित्रा रा विशाल अर अनमोळ सग्रह है। अशोक र समय री यक्षी मूर्ति बज जिकी चारमधारिणी' नारी, री $6\frac{1}{2}$ फुट री आदम कद मूरती, मौर्य काल रो स्तम्भ शीष, शुग काल रो एक मूरती फलक जक मैं अशोक वृक्ष र पेड रे नीचे आवयोडा दम्पति री भाव भरी मुद्रावा री सातरी अभिव्यक्ति, पाल युग री भगवान बुद्ध री भव्य मूरती, 9 मी 10 मी सदी री कामदेव री रति अर तृस्णा समेत मोवनी मूरती, प्रस्तर युग अर ताम्र लोह युग रा हथियारा रा अवशेष, प्रस्तरीकरण रा नमूना, उल्का पिन्डा रा अवशेष, तिब्बत सू लायोडी राहुल सास्कृत्यायन री इतिहास री दुलभ सामग्री, रास्टपति राजेन्द्र बाबू र काल म उणाने मिली भेंट वस्तुआ रो राजेन्द्र कक्ष म सग्रह इण री अकूत अनमोळ सामग्री है। 1 30 बज्या भोजन पछ काइ विस राम कर 3 30 बज्या सिक्खा र परसिध गुरद्वार हर मदिर साहिब आया।

तख्त हर मदिर साहब सिक्खा र आध्यात्मिक गुरु अर खालसा पथ र निरमाता गुरू गोविंद सिंह री जलम भूम है। अठ रो गुरद्वारो सिख धम र च्यार पवित्र धामा दाई गिणीजण आळा पवित्र तख्ता मैं एक है। गुरद्वारे रो भवन 108 फुट ऊचो मकराणे र भाटे सू पाच तल्ला मैं बण्योडो है। भवन र नेडे ई 127 फुट ऊचो भगवा वस्त्रा सू मण्ड्यो निशान साहब माथ ध्वजा फरती रवे। जिके कमरे में गुरु गोविंद सिंह रो जनम हुयो अठ सोने र सिंहासन माथ गुरु रो तल चित्र विराज। गुरु रो हस्त लिखित ग्रन्थ साहिब' अर बारे निजी हथियारा रो सग्रह भी अठ मौजूद है। हिन्दू सिख दोनू बडी सख्या म दशन वास्ते अठै रोज ढूक। पजाब री मौजूदा स्थिति मू अठ रा सिख भी दु खी अर पीडित है। अठ रा केई सिख पजाब र आतक वादया न सिरफिरया अर गुमराह आद कवे अर सिक्खा न मूळ रूप सू हिन्दुआ रा भाई बध ई गिण। सिझा 6 बज्या तक वापस धरम शाला पूगग्या। स्नान भोजन, बाजार भ्रमण र बाद रात्रि विश्राम कर्यो।

आगले दिन 29 मई न रेल सू राजगिर पूग्या। आ जागा पटना सू दक्षिण पूरब म 103 कि मी दूर है। प्रसिद्ध जैन स्वेताम्बर मदिर र सारे ई

इण मंदिर र ट्रस्ट री धर्मशाळा मे टिक्या। लाल पत्थर सू वण्यो ओ मंदिर स्थापत्य कला रो बेजोड नमूनो है। धमशाळा भी साफ सुथरी अर सुविधापूण है। राजगिर प्राचीन राजगृह रो बदळयोडो नाम है। बौद्ध अर जन धरम रो लूठो तीरथ है। राजगृह देस र पुराणा नगरा मैं गिणीज। पुराण शास्त्रा म ई रो नाम वृहद खण्ड पुर है। जन अर बौध ग्रन्था मैं इण रो नाम कुशाग्र पुर लिख्या है। महाभारत र महाबली जरासध री राजधानी भी ई नै ई मान। प्राचीन भारत म विम्बसार अठ रो मानीतो राजा हो, जक रो राज सगळे उतराद मैं फल्योडो हो। भगवान बुद्ध राजगृह रे कुणे कुणे मैं घूमता अर उपदेश देवता हा। विम्बिसार रो पुत्र अजात शत्रु जन धरम री दीक्षा ली। भगवान महावीर आपरो पलो वखाण विपल गिरी री डूगरी माथे दियो।

राजगृह रा प्राकृतिक वैभव भी कम नी है। अठ परवत श्रेण्या, गुफावा हरया भर्या वण, वन गगा, अर गधक रा गरम स्रोत आद ओजू भी मौजूद है। दिनुगै 30 मई न धरमशाळा र दखण मैं 1 फर्लांग दूर प्राचीन वर्मी मंदिर रो दशन कर सडक मारग सू आगे भळ दक्षिण म 1 किमी री दूरी माथै सप्त धारा अर गरम कुण्ड रा झरना देख्या। झरना मैं गधक रो खासो गरम पाणी ववे। इणा झरणा माथ दस बारह बडा बडा नावण घर बण्याडा है। बरस म एक बार कार्तिक मे अठ सातरो मेळो भरीज। सगळे विहार सू अठ जातरी आवै। मुस्लिम सत मखदूम री तपोभूमि भी राजगृह ई रई। उण र नाम सू एक गरम झरणे रो नाम मखदूम कुण्ड है।

ब्रह्म कुण्ड सू दखणाद मे ½ कि मी री दूरी पर सोन भडार री प्रसिद्ध गुफा है। वभव गिरी पहाड र दखणाद म थित इण गुफा न जन साधुवा बणायो। इ सू थोडी दूर दक्षिण पूरब मैं मणियार मठ रा अवशेष है जिण मैं हिन्दू, बौध अर जन तीनू धर्मा री पुराणी मूरता मिली है। अठ मिट्टी रा जूणा बरतन भी मिल्या है। मणियार मठ रै कन विम्बिसार रो जेल रा चिन्ह भी मिल। सम्राट विम्बसार न उण र जीवन रा अतिम दिना मैं अजातशत्रु बदी बणो लियो हो। इण कारागार मैं ई विम्बसार री मृत्यु हुई। खुदाई मैं

अठ ला री हथकडी मिली ही । इण सू आग 'गाति स्तूप र मारग में सडक र माड माथ मौय काल र प्रसिद्ध वद जीवक रा आम्रवन है। अनुमान सू जाणीज क इण वन भूमी में जडी बूटया रा भडार मौजूद हुसी क्या क उण दिना औषध र क्षेत्र में राजग्रह रा घणो नाम हो ।

इतिहास सू आ भी जाणकारी मिल क बुद्ध काल में राजगृह रो ससारिक वभव भी विशाल हा। आम्रवन सू 1 कि मी पूरव में शाति स्तूप नामरो विग्यात जापानी मदिर है। ऊची डूगरी माथ अध चद्राकार गोळ चबूतरे पर भगवान बुद्ध री भ य मूर्त्या आळो औ मदिर जापानी सरकार र आर्थिक सहयोग सू बण्योडो है। अठ सडक सू मूर्ति ता पूगण वास्त बीजळी सू चालण आळा क न्तु माग भी है जिक म कुस या लागोडी है। इण पर बठ र आपी अधर म लिसक र ऊपर चालणो भी एक नूवों अनुभव है। ऊपर ताइ जावण रा पदल मारग भी है। भगवान बुद्ध र कल्याणकारी सदेशा न फलावण ताई अशोक जिण धम्मघोष री घोषणा करी ही वा ओज्यू ताई चीन जापान, बमा, थाइ देश वियतनाम कम्बोदिया आद देशा म गूज है। राजग्रह मैं निर्मित इण स्तूप सू आ सच्चाई उदघोष करती दीस है। पदल इण सब स्थाना रा दशन करता सिझ्या पडगी। पाछा आवास ताई टुरया।

31 मई री सुबह 7 बज्या नालदा वास्ते पैदळ रवाना हुया। नालदा राजगिर सू 13 कि मी दूर है। आजकाल इण स्थान रो नाम बडगाव है। नालदा रो रस्तो हरियावळ सू भरयो है। गेहू री फसल घणी सी क तो कट गी ही पण काई कोई अज भी कणक न गाहता दीस हा। इण क्षेत्र मे सिंचाई वास्त रहट रा कूआ अर खासा नळ कूप भी है। आम अर जामुन रा पड सडक माथ भी लाग्योडा है बोटया भी केई जाग्या मिल। बट नीम, अगाव अर पीपल रा पेड वातायत में है। उपजाऊ धरती र कारण ग्रामीणा रा जीवन राजस्थान र गाव आळा सू सम्प न लाग्यो। गाव रा मकान भी पक्का बण्योडा है। करीब 3 ½ घटा मैं यान 10 ½ बज्या प्राचीन भारत री गौरव विद्यानगरी नालदा पूगग्या। राष्ट्रीय स्मारक र रूप में इ री चोखी देख

भाळ अर साफ सफाई राखीजै। खुदाई मैं मिल्या इण रा अवशेष पुराणी इमारता री विशालता अर दृढ़ता रो परिचय देव। भीता रो औसार $2\frac{1}{2}$-3 फिट चौडो है। सघाराम, मदिर, विशाल चत्य अर केई छोटा बडा स्तूप खुदाई में मिल्या है। खुदाई में गुप्त काल री बौद्ध मूर्त्या भी निकळी है। बिहार र खण्डरा मे खास तरह रा चूल्हा भी मिल्या है।

1951 सू बिहार सरकार प्राचीन विद्यावा रै अध्ययन अर अनुसधान वास्त 'नालदा पाली प्रतिष्ठान री थापना करी है। नालदा रो विश्व विद्यालय आज सू ढाई हजार वरस पला आखे ससार मे परसिध हो। धम, दशन इतिहास अर याय शास्त्र रो अठ अध्ययन हुतो। आयुर्वेद, विज्ञान अर कलावा री शिक्षा रा भी आछा परबन्ध हो। तिब्बत, चीन, जापान, कोरिया अर लका ताइ रा छात्र भणण न अठ आता। अठ दस हजार विद्यार्थ्या र भोजन, आवास अर अध्ययन री व्यवस्था हुती। एक तरह सू आज र आवासीय युनिवर्सिटी रो सौ सरूप ई रो हो। अठ रा कुलपति शीलभद्र आख ससार मैं विख्यात हा। वा री अध्यक्षता मे अठ 1500 अध्यापक अर उपाचाय पढावता। आज विश्व री बडी सू बडी युनिवर्सिटी मैं भी इत्ता अध्यापक नी हुव।

इण विद्यालय मे योग्यता र आधार सू ई प्रवश मिलतो। मुख्य द्वारा माथ नूवा प्रवश प्राथ्यां री परीक्षा हुती। द्वार पडित र सवाला री सतोप जनक उत्तर मिलणे सू इ विद्यालय मैं प्रवेश मिलता। छात्रा री ज्ञान पिपासा बुझावन वाळा तीन बडा बडा पुस्तकालय—रत्न सागर, रत्नमजक अर रत्नोदधि अठ हा। इण ठाम महावीर स्वामी 14 चौमासा कर्या। इण सू भी इण ज्ञान केन्द्र रो महत्व पता लाग। अठ अध्ययन वास्त चीन रा प्रसिद्ध यात्र्या रै अलावा तिब्बत रा विद्वान थोंसिमोट भी नानवघन ताइ आया। तिब्बत र राजा थ्रि सुग स्तन आचाय शातिरक्षित न आपरे देस मै आमन्त्रित कर्या। विशाल दीप स्तम्भ दाइ इण विद्यालय र ज्ञान र आलाक सू देश देशातर आलोकित हा। भारत ज्ञान, विज्ञान अर आध्यात्म र क्षेत्र म जगत

गुरू हो, नालदा इण सच्चाई रो उद्घोष आजू कर। इसे स्थाना रा दर्शन कर आत्या री सार्थकता रो अनुभव हुव अर आत्मा री भूख तृप्त हुव। इण अपूव स्थान रा लूठो आणद लेंता अर अतीत र सपना मैं डूबया दूणे हरप सू पावा पुरी रवाना हुया।

पावापुरी भगवान महावीर र जीवण अर निरवाण सू जुडयो स्थान है। पटना–राची सडक माथ पट्ना सू 59 मील दूर दसणाद मैं आ जाग्या है। पावापुरी मदिर र चारू मेर विशाल सरोवर है जक मैं नीला लाल अर सफेद कमल खिल्या रव। बीचोबीच मकराणे रो बडो भव्य मदिर है। सडक सू मदिर तक जाणे ताई लाल पत्थर री पुळ है। मदिर र चारू मेर सरोवर मैं पक्का घाट है। प्रवेश द्वार र सामें अर तळाव र दिखणाद दूजा मदिर अर धरम शाळावा है।

कार्तिक बदी अमावस न महावीर स्वामी रो देवलोक जाणो हुयो। इण वास्ते देस र कूणे कूणे सू भक्तजन अठ आव। घणी भीड रे कारण धमशाळावा मैं जाग्या न मिलणे सू अठ डेरा तम्बुआ री नुवी नगरी ही बस जाव। निर्वाणोत्सव मैं भक्ति गीत, हर जस अर पूजा रो विधान हुव। सिझा न दीप पव मना ईज। सगळे ससार न सत्य अहिंसा अचौय अर अपरिग्रह नाम र पच महाव्रता रो आचरण जोग महान सदेश देणे आळे महामुनि री इण पुण्य भूमि रा दर्शन करणे र उपरात साय 7 बज्या बस सू पाछा राजगिर आ पूग्या।

आगले दिन 1 जून न रेल सू गया ताइ रवाना हुया। गया दिल्ली हावडा रेल मारग पर स्थित है। पटना सू भी गया रेल सू जुडयो है अर दखिण म 75 कि मी दूर है। अठ पूगणे मैं करीब घटो लाग। सनातन हिन्दू धम मैं आस्था राखणिया वास्ते गया र विष्णु मदिर रो भारी धार्मिक महत्व है। आपर पुरखा र श्राद्ध अर पिंडदान वास्ते लाखू सरधालु हर साल अठ श्राद्ध पख मैं दूक। आडे दिना भी लोग अठ आवता ई रव। मदिर वास्तु कला री

दीठ स् अनन्त काल ताइ गौरव री गाथा गावतो रसी। मंदिर में भगवान विष्णु रा चादी सू मडयोडा पगलिया है। मंदिर में एक अनूठी 'सूरज घडी' है जकी प्राचीन भारत र ज्योतिष सम्बन्धी श्रेष्टता री प्रतीक है। मंदिर र पिछवाड फल्गू नदी ववती ही। आजकल आ सूखगी है। नदी र पार दूजे कानी राम गया है। कवत है क राम चद्रजी आपरे पिता दशरथ जी न अठ पिण्ड अरपित करयो। आज भी नदी रै किनारे पिण्डदान करता लोग बठया दीख। म्हे बठ पूग्या ता एक दृश्य न देख'र दिल में घणो दुःख हुयो। एकै कानी तो पण्डा सरधालु जिजमाना कन पिंड दान करा रिया हा और दूजै पासे वा सू थोडी ई दूर नदी म केई मिनख री लावारिश लाश न कुत्ता अर कागला नोच'र फफेडे हा। जठै मरे मिनखा री सद्गति रो कोई धणी धोरी नी हुव, बठ पितरा री मुक्ति किया अर कुण करासी ? पण्डा री लोभ वृत्ति अर भोळा भारतीया री धम भीरुता कद खतम हूसी ? गया में सूरज मंदिर अर शिव मंदिर भी देखण जोग है।

गया सू 5 मील दूर उत्तर पश्चिम मे एक पुराणो डूगर है जकै ने प्रेत शिला कव। अठ एक अति प्राचीन मंदिर है जिण में यमराज री मूरती है। अठ भी श्राद्ध अर पिंड दान हुव। इण र नीचे राम कुण्ड है। भक्त जना नै विश्वास है क भगवान राम खुद अठ पिण्डदान कर सिनान करयो। गया रा ब्रह्मयोनि परवत अर मदार परवत देखता देखता ककोलत प्रपात पूग्या। औ झरणो सुन्दर अर बेगवान है। अठ सब साथ्या साथे सिनान करयो। गरमी सू निजात मिळण सू अर सुदर मोवणे निजारे र कारण बडो आणन्द आयो। घटे भर री मौज मस्ती र बाद पाछा बस स्टट आया अर बौद्ध गया री वस पकडी।

बौद्ध गया गया सू 7 मील दूर है। अठ भगवान बुद्ध निरवाण प्राप्त करयो। गौतम री साधना बोधि वृक्ष र नीच हुई। आज भी अठै अस्वथ रो बडो वृक्ष लाग्यो है। वृक्ष र पूव दिशा म 'महाबोधि विहार' रो प्राचीन अर सुदर मंदिर है। इण मंदिर री वास्तु कला तो अनूठी ई है। अतीत

15 वी शताब्दी र अंतिम बरसा में अठ यूराप र यात्री राल्फ फिच पटना नगर री सुन्दरता अर सम्पन्नता रा उल्लेख कर्यो है। अकबर रै समय ताई ण जागा री हिंदू अर इस्लाम र तत्वा सू निर्मित सस्कृति खूब फळी फूली अर शांति अर स्थिरता अठ कायम हुई।

जिण मगध क्षेत्र न पौराणिक काल रा ऋषि, मुनि, रामायणकाल रा जनक सरीखा प्रजा वत्सल राजा, मौर्य वंश रा अशोक महान, मानव कल्याण ताई सत्य अहिंसा रो संदेश देणिया महावीर स्वामी जिसी विभूत्या री कर्म भूमि अर साधना स्थळी हूणे रो गौरव प्राप्त है। इण रा दर्शन लाभ कर जीवन री सार्थकता रो अनुभव हुयो, पण औ विचार भी मन मैं आयो क अतरी पावन भूम आज जात पात, ऊंच नीच री सकीर्णता अर हिंसा री ताडव भूमि बण्योडी है। न्मि मैं घणो अवसाद हुयो क अपरिग्रह री जागा तस्करी अर माफिया गुट री गुंडा गर्दी रो अवसान कद हुसी ? हियडै म एक टीस उठी क आज भळ बिहार ई नइ सगळे मुल्क न सत्य, अहिंसा अर सम्यक मार्ग रो ज्ञान कराणे वाळा बुद्ध अर महावीर री भळ जरूरत है।

# गरवीलो गुजरात

गुजरात रो भारत र इतिहास मैं गौरवपूण स्थान है। प्राचीन काल सू ई औ क्षेत्र पश्चिम रा सुदूर देशा सू व्यापार व्यवसाय रो प्रधान केन्द्र हूणे सू सम्पन्न अर समृद्ध हो। प्रभास पाटन अर सोमनाथ र मदिर री सम्पन्नता री चर्चा समुद्र पार ताइ फल्योडी ही। इण प्रदेश मैं ई श्री कृष्ण री राज नगरी द्वारिका, जन सम्प्रदाय रो सबसू बडो तीरथ पालीताणा अर पारसिया रो तीरथ उदवाडा मौजूद है। सुदामा जिसा ब्राह्मण प्रवर अर नरसी अर मीरा सरीखा भक्त अठ हूया। स्वामी दयानन्द महात्मा गाधी सरदार पटेल आद धम प्रचारका समाज सुधारका अर राष्ट्र भक्त नेतावा री जन्म स्थली हूणे रो गौरव ईन ई है। अठ तीथल चोरवाड ऊभराठ आद पयटका रा आकषण रा मुख्य केन्द्र सुदर समुद्री किनारा है। दूज कानी गिरनार अर सासण गिर जिसा नामी अभ्यारण्य है। कपडे रसायन सिमेंट खनिज तेल रा विशाल आधुनिक कारखाना अठ है तो पारम्परिक खेती पशुपालन आदिवासी लोग अर लोक सस्कृति मैं रस्यो बस्यो पारम्परिक जीवन भी अठ देखण न मिल। गुजरात री केई निजी विशेषतावा है। अठ रा लोग शाति प्रिय, मिलन सार सहिष्णु अर अतिथि सत्कार करण आळा हुव। कृषि पशुपालन अर व्यापार र कारण इण म खासी सम्पन्नता देखण न मिल। इण गौरव पूण प्रदेश र भ्रमण दशन रो आयोजन बणायो।

बीकानेर सू जोधपुर हू र अहमदाबाद पूग्या। स्टेशन साम जीवणे हाथ कानी एक धमशाळा है। बठ ऊतर्‌या। अहमदाबाद देश र बडा शहरा मैं एक है। औद्योगिक दीठ सू बौत महत्व रो गिणीज। अठ कपडे री पचास्यू बडी बडी मीला है दवाया रा कारखाना भी बडी मात्रा मे है। अहमदाबाद

मैं पत्नी अर पति न्यू मिल'र हाथ गाडा चलाता नगर री सडका माथ दीख। जीवन री गाडी रा इमा साथव वाहक और कठई नी मिल। मुगल स्थापत्य रा जीवत उदाहरण अहमदाबाद मैं जाग्या जाग्या मिल। नगर र निरमाण कर्ता सुल्तान अहमदशाह री वणायोडी जामा मस्जिद विशालता, अनुपात अर कलात्मकता री निजर सू भव्य रचना है। स्टेशन र क नई सद्दी मईद री मस्जिद है जकै न झूलती मीनार भी कवे। इण मे दो मीनारा एक सयुक्त नीव वाळे चबूतरे माथ इण कारीगरी सू वणीजी है क एक मीनार न दो यू हाथा सू जोर लगा र हिलाणे सू दूजी मीनार भी साफ हलती दीस। सवइ साल पला वण्योडी हूणे पर भी ओजू ज्यू री ज्यू खडी है। नगर र नेडे 4 5 कि मी री दूरी पर 1451 मैं सुल्तान कुतुबुदीन री वणायोडी एक छोटी पण सुदर झील है। इण र बीचो बीच एक टापू माथ खूबसूरत बगीचा वण्या है अर नगीना वाडी नाम रो एक महल भी है। गर्मी मे सुल्तान अठे ठडी पौन अर हरियाळी रा आनन्द लेता। आजकल अठ टावरा र क्रीडा अर मनोरजन साइ बाल वाटिका भी वणा दी है अर जिनवरा रो छोटा सो चिडिया घर भी वणायो है। इण झील न आजकल काकरिया झील केवे। गरमी र दिना अठ सामी भीड अर रौनक रव। बगीचे मे वठण अर रोशनी री चोखी व्यवस्था है।

शहर सू आठ मील दूर सरखेज रोजा नाम री जाग्या है। अठ अहमद शाह गज बक्श रो 1445 ई मैं वण्या मकबरो अर गुजरात र प्रसिद्ध बादशाह महमूद शाह बेगरा अर उणरी बेगम रा मकबरा भी है। अठ एक सुदर मस्जिद एक महल अर केई चबूतरा है। इण इमारता मै पत्थर री खुदाई अर पच्चीकारी रो बढिया काम है। सुदरता आकृति री निर्दोषता अर भव्य कारीगरी रो चोखो उदाहरण है सरखेज। पयटन विभाग र कम प्रचार र कारण अठै घणा सलानी नी आव। पुरातत्व विभाग री तरफ सू देख रेख अर सफाई री व्यवस्था आछी है।

कारीगरी री नजर सू साबरमती र पूव सू दूज गानी कोई १ कि मी दूर गढ हरसी सिह रो जन मन्दिर निरम अर स्थापत्य री सामी रचना है।

गरवीलो गुज

मदिर र द्वार, खम्भा, छात माथ बारीक तरास रौ काम है। फूल, पत्या अर विभिन्न आकार र डिजाइना सू शिल्प सज्जा रो निखार और बढ ग्यो है।

गाधीजी रो साबरमती आश्रम अहमदाबाद रो नूवो मदिर गिणीज। आ जाग्या बरसा ताइ भारत री आजादी री लडाई री प्रेरणास्थळी रयी। साबरमती नदी र किनारे शहर सू 7 कि मी दूर ऐकात वातावरण मैं आ थप्योडी है। अठ गाधी कुटी मैं बारो व्यक्तिगत कमरो अर मकान है ज्यू ई सुरक्षित है। सादगी अर सुरूचि सू गाधीजी र इस्तेमाल री सारी जिन्सा अठ प्रदशनी दाइ रास्योडी है। सामण पास गाधीजी री अमरीकन शिष्या मीरा बेन री कुटिया है। डाब हाथ न गाधी सग्राहलय है। सग्रहालय म गाधी र जीवन री बचपन सू मृत्यु पयत रा चित्रा री थाकी है। गाधी जी रो सम्पूण साहित्य, उणा द्वारा सम्पादित पत्र पत्रिकावा रा अक उणा रा लिख्योडा राजनतिक पत्र ऐतिहासिक घटनावा माथ टिप्पण्या स कुछ अठ सग्रहीत है। औ आश्रम वा पवित्र जाग्या है जठ सू 1930 मैं प्रसिद्ध नमक सत्याग्रह री डाडी यात्रा सरू हुई। आज भी उण प्रेरक राष्ट्रीय घटना सू देशवास्या री रगा मैं जीवट अर कुर्बानी रा भाव उमड पड है। इण स्थान रा दशन कर मन मैं घणे उमग उत्साह रो प्रवाह हुयो। अहमदाबाद मे भीड भाड र बावजूद चोरी जारी अर गुडा गर्दी देखणे मैं नी आव। साधारण लोग सहयोग अर भाई चारे रो व्यवहार कर। नारी जाति नै अठै बडे सम्मान अर श्रद्धा सू देख। सम्बोधन मैं बेन' रो प्रयाग कर। स्त्री शिक्षा रो भी अठ खासो प्रचार है अर स्त्रिया र जीवन मैं खुलेपण अर शालीनता रा दशन हुव। दूजा प्राता र वास्त आ विशेषता अनुकरण जोग है।

अहमदाबाद सू रेल सू सौराष्ट्र क्षेत्र मे दक्षिणी पूर्वी समुद्री किनारे माथ स्थित भावनगर पूग्या। तख्तेश्वर धमशाळा मैं ठहरया। अठ गाधी स्मृति नाम रो सग्रहालय गाधी जी र जीवन सू सम्बधित सामग्री रो विपुल अर चोखो भण्डार है। गाधी जी र प्रति यू तो सगळे देश मैं ई सरधा रो पूज्य भाव है पण इण क्षेत्र मैं तो बारी देवता दाइ प्रतिष्ठा है। भाव नगर

प्राचीन बदरगाह भी है। समुद्र र कने मछुआरा री नावा री लम्बी कतार सोवणी लाग। मछली पकडने रो धधो भी अठ काफी हुव।

भावनगर सू पालीताणा 47 कि मी दूर है। रेल मू अठ पूग्या। रेल्वे स्टेशन र कन पथिक आश्रम मैं ठर्‌या। पालीताणो जन धम रो लूठो तीरथ है। हरिद्वार, कासो प्रयाग दाइ ओ भी मदिरा रो नगर है। कुल मिला'र अठ 863 अत्यत कलात्मक मदिर है। शिल्प अर स्थापत्य रा इत्ता सुन्दर जूणा मदिर इत्ती घणी सख्या मैं केई दूजी एकली जाग्या नह मिल। पालीताणा सौराष्ट्र री शत्रु जय पहाडी री पगतली मैं बस्योडो है। केई पुराणा जन मदिर तो मकराणे मू बण्या है ऊचे पहाड माथ। सूर्यास्त पछ पुजारी भी नीचे बस्ती मैं आ जाव अर इण मदिरा मैं केवल दवता निवास करैं। इण सब मदिरा रा निरमाण 900 साला री लम्बी अवधि मे हुयो ह। औजू भी नूवा मदिर बणताई रवे। जन धम न मानण वाळा भक्ता री आ भावना रव क जीवन म कम सू कम एक वार इन मन्दिरा रा दशन जरूर कर। इण वास्ते अठ बरस भर जातरया रो तातो लाग्यो रवे। देश भर रा जनी मदिरा र नव निर्माण खातर भी काफी दान अठ देव। ऊचे पहाडा माथ मदिरा रा अनक शिखर सगमरमर माथ सूरज री किरण री चमक मू इन्द्रलोक री सी आभा छिटकाता दीसैं। अठै र मदिरा मैं रत्नाभूषणा रो भी अमोल भडार है। आनद रो 'करयाण जी टस्ट' इण री देखरेख कर। क्षी री अनुमति सू अ आभूषण अर रत्न यात्री देख सक। आखे भारत मैं भ्रमण करण आळा यात्रा न भी आ बात अवश्य अनुभव हुव क जन लोगा देश न प्रस्तर शिल्प रैं अद्वितीय मदिरा री विशाल धरोहर मैंट दी है। देलवाडा गिरनार, रणकपुर शिखरजी, पावापुरी रा विश्व विख्यात मदिर इ सच्चाई रा गवाह है। पालिताणे री मूर्त्यां री अनूठी भावभगी मदिरा मैं पत्थर न काट तराश र बारीक जाळी रो काम अर कलापूण खम्भा रो कारीगरी आद न देखता इ जाव तो भी जी नी धाप। वास्तव मैं पालीताणे री कला रो दशन एक अनोखा सुखद अनुभव है।

पालीताणे मू बस द्वारा जूनागढ गया। जूनागढ अठ सू दक्षिण पश्चिम म गिरिनार पवत री पगतली मे उतराध में स्थित है। लगभग 80 कि मी री आ दूरी 2 घटा म पूरी हुगी। दातार रोड र टूरिष्ट हाउस म ठहरने री व्यवस्था हुई। रस्ट हाउस साफ सुथरो अर सुविधापूण है। जूनागढ नगर रो इतिहास काफी पुराणा है। ई पू 250 में अशोक पाली लिपि मैं चटटान माथ खुदवा र 14 शिलालेख लिखवाया। पुरातत्व री दीठ सू आ शिलालेखा रो घणो महत्व है। अठ राजा रुद्रदमन रा 150 ई में खुदवायोडा सस्कृत रा शिलालेख भी है। राजा स्कदगुप्त भी 1454 इ मै अठ शिलावा माथ लेख खुदवाया। इण स्थान सू 1 कि मी दूर साढे तीन हजार फुट ऊँचो गिरनार पवत है। गिरनार पहाड माथ चढण न पगोथिया बण्योडा है। लोग आ री सख्या दस हजार बताव। आ चढाई सीधी खडी अर दोरी है। गिरनार जन धम रो बडो प्रसिद्ध तीरथ है। अठ सगमरमर र पत्थरा रा विशाल भव्य अर कलात्मक खुदाई आळा अनेक भात री शिल्प शली रा सुदर मदिर है। वेई वावडया अम्बा माता रो मदिर अर पहाडी र शिखर माथ दत्तात्रेय रो मदिर है। इण स्थान पर दत्तात्रेय रा पगलिया माथ एक छतरी बण्योडी है। इण शिखर सू दूर दूर ताई रा प्राकृतिक मनारम दृश्य दीस। खासो ऊचो डूगर हूणे सू स्वच्छ तेज हवा चाल। सगळा अठ आ र ताजगी रो अनुभव करे। म्हान चढाई चढण मे अर मदिरा रा दशन करण में 4 घटा लाग्या।

*गिरनार पहाड र बन सासण गिर नाम रो विख्यात अभयारण है। इण जगल में शेरा री बडी सख्या है। आखे ससार में अफ्रीका अर गिरनार आ दो र जगला मैं इ सिंह मिल। दूजा ठामा म नाहर तेंदुआ चीता आद शेरा री दूजी जात्या मिल। जगळ र राजा न नडे मू स्वतत्र अर खुल्लो विचरण करता देखणो रूगटा खडा करण आळो अनुभव है। अठ बद माटर गाडी मे पयटका न बठावे अर सिंह खुल्ला विचरण करे। जतु शाला दाइ सिंहा न बद पिंजरा री कद मैं नी रणो पड। जगल रो वातावरण भी प्राकृतिक है। जगली घास पेड पौधा री बौळायत अर जाग्या जाग्या पाणी पीणे री सुविधा उपलब्ध है।*

अठ जगल र बीच आराम करण न सरकारी बगला भी है। म्हे लोग कई ठाम इक्का दुक्का अर केई जाग्या 5/7 र झुण्ड मैं भी सिहा नै देख'र घौत रोमाचित हुया। छाटा बच्चा तो इण दृश्य सू दहल तक जावै। एक साथी पयटक, उण री पत्नी अर दो बच्चा साथै हा। व दो यू आपरी मा र आचल सू डर र कारण चिपकग्या। खासी देर बाद समझणे बहलाणे अर दूजा लोगा न बाता करता देख'र व स्वाभाविक हा सक्या।

गुजरात री यात्रा सासण गिर र देख्या बिना अधूरी है। क्यो कै सासण गिर रो जगल 500 वग कि मी मैं फल्योडो है इण न रक्षित वाहन र बिना देखणो सम्भव नी है। सिह र अलावा अठ भालू, केई तरह रा हिरण, साभर जगली सूअर आद भी है। अक्टूबर र महीने सू मई जून तक इण न देखणे रा आदश समय है। जूनागढ र दशनीय स्थाना मैं नरसी जी रो मदिर भी उल्लेख जोग है। इण री मानता अठ र साधारण धम प्राण लागा मै घणी है। राजस्थान मैं मीरा रा भक्ति रा पद ज्यू आम आदमी न कठस्थ रव उण भात ही नरसी भगत रा पद गुजरात मे सामान्य जन र कण्ठा माथ रवै।

सोमनाथ र विश्व विख्यात मदिर का दशन करण वास्त जूनागढ सू रेल द्वारा वेरावल स्टेशन उतरणो पड। स्टेशन र नजदीक श्रीराम धमशाळा म ठहर्या। प्रभास पट्टन मैं थित सोमनाथ रो मदिर धार्मिक अर ऐतिहासिक दो यू दीठ सू महत्वपूण धाम है। सौराष्ट्र र पश्चिमी सुमुद्री किनारे माथ औ अत्यत प्राचीन मदिर है। औ स्थान वदिक काल मैं भी विख्यात हो अर महाभारत मैं भी इण रा उल्लेख मिल। पाण्डवा इण जाग्या आ र भी तप कर्यो हो। श्री कृष्ण अर बलदेव री तपा भूमि भी आ गिणीज। सोमनाथ र मदिर रो केई बार निर्माण हुयो अर केई बार इ रो जीर्णोधार हुयो। सोलकी वश रो राजा भीमदेव जद पाटण रो गद्दी माथ हो विण सोमनाथ र कीर्तिवान मदिर रो जीर्णोधार करायो। इण रो अलौकिक वभव दूर दूर तक फल्या हो। प्रसिद्ध साहित्यकार के एम मुन्शी र जय सामनाथ मैं इण मदिर री सम्पन्नता रो प्रभावपूण चित्रण है। मदिर री मूर्ति, कळश अर घटो साने

मू वण्या हा । पूजा मैं नृत्य सगीत रा विधान हूतो । मक्डू नतक्या रा पावण मदिर भडार सू किया जाता । महमूद गजनवी 1024 ई म सामनाथ पर हमला कर'र ईन लूटयो अर मदिर न ध्वस्त कर दियो । भीमदेव फेर इ रा उद्धार करया । मदिर र खम्भा अर पत्थरा पर नक्काशी रा मुन्दर काम हा ।

गैक्डू बरसा बाद स्वतत्र भारत म इण मदिर री जीण अवस्था देख र अठ फेर नूवा मदिर निर्मित हुया । इ र नव निर्माण रा शिलान्यास भारत र प्रथम राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी र कर कमला सू हूयो । मन्दिर स्वत सगमरमर री है अर कलात्मक हिन्दू स्थापत्य रो नमूनो है । मदिर रा मुख्य भाग खासो ऊचो है। अदर जठ शिवलिंग प्रतिष्ठित है वो प्रागण काफी चौडो है । शिवलिंग काळे पत्थर सू निर्मित है अर भूमि सू 3 फिट र करीब उपर प्रतिष्ठित है। चारू मेर स्वत पत्थर री चौडी जलेरी है। इण पर पीतळ र पात्र सू दुग्ध मिश्रित गगा जल रो स्वत अपण हूतो रवे । ठीक समुद्र र किनार निर्मित हूणे सू इ री भव्यता और बढ जाव। अठ समुद्र विकराल रूप दिखाव। लहरा रो उछाल 30 40 फुट ऊचे ताइ ऊपर उठ अर मदिर री सीढया सू टकरा र पूठो घूम । समुद्र भगवान शिव र चरणा रा प्रक्षालन करता दीस । कव क भगवान श्री कृष्ण अठ पार्थिव शरीर छोडयो । अठ ई वा री अन्तेष्टि हुई । जठ अन्तष्टि हुई बठ कपिला हरिण अर सरस्वती रा सगम है । यात्री अठ भी आता ई रव ।

वरावल सू बस द्वारा पोरबदर आया । अठ रेल मारग सीधो कोनी । जतलसर घूम र आव । सरदार वल्लभ भाई रोड पर अन्नपूर्णा लाज मैं रुक्या । पोरबदर सौराष्ट्र र पश्चिमी तट पर सुदर बदरगाह है । अरब देशा रो काफी माल असबाब अठ सू आव जाव । पोरबदर राष्ट्रपिता महात्मा गाधी री जलमभूमि होणे सू आज एक नूव धाम दाइ मानीज । गाधीजी र घर न गाधी स्मृति मदिर नाम सू सावजनिक स्मारक दाइ दशन वास्ते खुलो कर दियो है । पोरबदर रो जूणो नाम सुदामा पुरी भी बज । कव क श्रीकृष्ण रा बाल सखा सुदामा इण नगर रा ही वासी हा । अठ सुदामा जी रो एक

मदिर भी ह । दु ख री वात आ है क जिण जाग्या भारत री इसी विभूत्या रो जलम हुयो आज वठ तस्करी अर गुडागर्दी रो बोल बालो है । सौराष्ट्र रो समुद्र तट भारत र केई दूजे प्रात सू वडो है। इण रो लाभ उठा र असामाजिक तत्व राजनतिक सरक्षण मैं आर्थिक अपराधा मैं स्वाथ अर लालच रै कारण सलग्न है ।

पोरबदर सू यात्रा र अतिम पडाव भारत र चारू धामा मैं एक अर श्री कृष्ण री राज नगरी द्वारका वस द्वारा पुग्या । अठ मारवाडया री देवी भवन नाम री धमशाळा मै ठहरया। वडो तीरथ हाणे कारण अठ लाज होटल अर धमशाळावा री कमी कोनी । पारबदर सू आ जाग्या 225 कि मी दूर है। करीब 7 घटा अठ पूगण मैं लाग्या । द्वारिका पश्चिमी समुद्र सू भारत रो द्वार मानीजतो । द्वारिका नाम स भी इण री पुष्टि हुव । श्री कृष्ण आपर जीवन र उत्तर काल मै मथुरा सू अठ आ र आपरी राजधानी बसाई । स्कद पुराण मत्स्य पुराण, विष्णु पुराण, हरिवश पुराण अर भागवत पुराण जिसा धम ग्रथा मैं श्री कृष्ण री लीला अर द्वारिका रो सागोपाग वणन है । उण दिना आ समृद्धि अर सम्पन्नता री विख्यात नगरी ही। अठ दूध दही री प्रचुरता ही । आ विशेषता तो आजू भी अठै दीख । कवे क कृष्ण जी वदावन सू अठ आया ता वारे साथ ग्वाला भी अठ पूग्या । द्वारिका मूलत यादवा री नगरी ही। आज भी गुजरात रो सौराष्ट्र क्षेत्र गाय भसा र सार आजीविका चलावण आळी – भरवाड रवारी, गूजर आदि जात्या रो निवास है । भारत री सबमू बेमी दूध देणेआळी गाया गुजरात री ही है। महसाना जाफराबाद अर आनन्द दुग्ध उत्पादन खातर मशहूर है ।

अठ रो जगत विख्यात द्वारिकाधीश रो मदिर स्टेशन सू दा कि मी दूर स्थित है । ओ चार पवित्र धामा मे एक गिणीज । मदिर प्राचीन, विशाल अर कलापूण है । मदिर र लार समुद्र रो पाणी लहरा माथ आ जाव । दिन भर समुद्री लहरो र ज्वार भाटे र मुजीव पाणी उछाळा लेतो रवे पण हर रात राणी समुद्र मैं भाटे र कारण मुत र पाछो जाव परो । जका यानी दिन मैं अठ

स्नान कर रात मैं वी जाग्या न पाणी सू रहित दग'र अचरज मैं डूब जाव। पाणी र नित उतार चढाव र कारण समुद्र री सीप्या, कौडया शख आद अनगिनत सरया मै विखरया पडया रव । यात्री आपरी पसद र अनुसार आन भेळो कर र साथ लाव । औ कौतुक दिन भर चालतो रवे ।

द्वारिका मैं रणछोडराय जी रो मदिर भी जग प्रसिद्ध है। औ मदिर 110 फुट ऊचा प्राचीन अर सु दर कारीगरी आळो है। वताव क श्री कृष्ण र पौत्र व्रजनाभ इ न वणवायो । ओ मदिर भी मूर्तिभजका द्वारा बार बार ध्वस्त हुयो । पाचवी सदी मैं गुप्त राजावा ई न वापस वणवायो । 1460 ई मैं महमूद वगडा भळ मदिर न लूटयो अर तोडयो। अग्रेजा र वगत गायकवाड र राजा इण रा जीर्णोधार करायो । इण र अलावा भादवेश्वर मदिर अर रुक्मणी मदिर भी देखण जोग है। द्वारीकाधीश मदिर सू कोई 4 कि मी दूर आदि शकराचाय द्वारा वणवायो गयो शारदापीठ मठ है। ज्या काची शृगेरी आद शकराचाय रा पीठ है उण तरा ओ भी शकर री गद्दी रो स्थान है अर सनतान भक्ता रौ पुण्य धार्मिक स्थान मानीज। द्वारिका र कन ओखा वदर गाह सू समुद्र मैं टापू माथ भेंट द्वारिका है। अठ भी श्री कृष्ण रो प्राचीन पौराणिक रयात रो मदिर है। देश र कूणे कुणे सू कृष्ण भक्त अठ आव।

वरणवा रौ द्वारिका तीरथ शव भक्ता रो सामनाथ, ज या रो पाली ताणा अर पारस्या र उदवाडा आळो गुजरात देश रो महत्वपूण प्रात है। देश री भावात्मक ऐकता रा दशन गुजरात मैं हुव। गुजरात्या मैं प्रादेशिक सकीणता नी हुव। व आपन भारत वासी पला गिण अर गुजराती पछ। अठ रा श्रेष्ठ कवि उमाशकर जोशी गुजरात री इण विशेपता रो वणन करता लिख– हू गुजर भारत वासी। सव धम सम, सव धम मम, उर ह रहो प्रकाशी।' इण सव विशेषतावा सू युक्त गुजरात रा दशन कर घणो आन द हुयो अर लाव गीता री भावना मुजीव म्हारे कण्ठा सू आदर भाव रो स्वर व्यक्त हुयो – जय जय गरवी गुजरात।

# शिल्प अर कला रो खजानो-अजता एलोरा

भारत र इतिहास सस्कृति अर कला र क्षेत्र म मराठवाडा रो उल्लेख जोग स्थान है। महाराष्ट्र सता, समाज सुधारका, योद्धावा अर कला सजका री भूमि है। नासिक, नादेड, दण्डकारण्य, पचवटी आद पवित्र धाम अर गोदावरी ताप्ती, नमदा, कृष्णा जिसी नद्या इण क्षेत्र री पावनता री घोपण करै। ऐके कानी तुकाराम, नामदेव, ज्ञानेश्वर अर समथ गुरू रामदास आद सता भक्ति री अखण्ड भाव धारा बवा र आध्यात्म अर धम री गैरी जडा जन मानस मैं रोपी तो दूज कानी रानाडे, आगरकर विनोवा अर कर्वे जिसा समाज सुधारका महाराष्ट रै सामाजिक सास्कृतिक जीवन मे क्रातिकारी चेतना रो प्रवाह बवा'र इण न नुवे भावा विचारा अर करमा सू सवारयो। छतपति शिवाजी महाराज, नाना फडनबीस अर तात्या टापे जिसा सूर सिरोभण्या री आ रगभूमि रही तो आधुनिक भारत मैं आजादी री अलख जागावणिया तिलक, गोखले, सावरकर जिसा महान नेता भी अठ ई हुया। इण नमण जाग भूमि री एक विशेपता है प्राचीन अर अर्वाचीन रो सातरो सम वय। सिंहगढ, पन्हाला, जजीरा रा जूणा किला अठ है तो बम्बई, पूणे जिसा अत्याधुनिक महानगर भी अठई है। पारम्परिक खेती रो जौ विशाल क्षेत्र है तो चीनी, कपड और तेल शोधन रा बडा बडा कारखाना भी अठ खडया है। भ य चित्रा सू माण्डयोडी प्राचीन कलात्मक गुफावा अठ है तो ट्राम्बे जिसा आणविक वज्ञानिक स्थल भी है। इति विविधतावा एक जाग्या नी मिल। इ सातर इण र परतख भ्रमण दशन रो कायक्रम बणायो।

रेल सू जोधपुर अहमदाबाद हू'र बम्बई पूग्या। अठ रो विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन यूनानी शिल्प मै वणी पत्थर री भ य, सुघड अर देखण जोग

इमारत है। बार सू ता आ वडे महल दाइ लाग। एक परिचित न पला सू कागद दे र सूचना कर दी ही। व स्टेशन पूगग्या। कालवादेवी म सीपी टक नामक मुहल्ल म 'मारवाधी वाटी' नाम सू एक साफ सुथरी आधुनिक सुविधावा आळी आछी धरमशाळा म कमरा आरक्षित करायोडा हो। सुबह 7 बज्या बम्बई पूगग्या हा। धमशाळा म सामान राग, स्नान आदि र उपरात तयार हू र 10 बज्या दर्शनीय स्थाना रे भ्रमण ताइ निकळ्या।

बम्बई रा पुराणो नाम मुम्बई हा। मराठी म आई मा न कवे अर मुम्बा अठ री अधिष्ठात्री देवी रो नाम हो। बारवी सदी री नपाली पुस्तक दाक्षानोव मैं भी इण स्थान पर मुम्बा देवी र मदिर हुणे री बात लिखी है। देसी अर विदेसी पयटका र वास्त बम्बई वडे भारी आकर्षण री जाग्या है। सबसू पला गेट वे आफ इण्डिया गया। कालवा देवी सू औ 3 4 कि दूर अपोलो बदर माथ बण्यो है। 1911 ई म जाज पचम अर राणी मरी र स्वागत मैं इणन बणायो। लाल पत्थर रो ऊँचो सुदृढ दरवाजो अरब सागर रे ऊपर है। इण र डाव पासी लार बम्बई ई नहीं आखे भारत रो परसिध होटल ताज री भव्य इमारत है। अपोलो बदर र उत्तराद रो इलाको फोट र नाम सू गिणीज। बम्बई रो अति आधुनिक रेल स्टेशन चच गेट अठ ई है। चच गेट स्टेशन भारत र सबसू सुदर स्टेशना म सू एक है। 3 3 मिनटा पछ बिजली री तेज गति रो गाडया अठ सू जावती अर अठ पूगती रवे। बिजळी री लिफ्टा अर इल्ट्रोनिक्स सू गाडी री पूग रा समय बतावण आळी घडया जाग्या जाग्या लागोडी है। अठ खडा हू'र ग्रमीण लागा न तो दूजे देश मे पूग जाणे रो भरम हुव।

चच गेट सू प्रिस आफ वल्स म्यूजियम देखण न गया। इण मैं पुरातत्व प्राकृतिक इतिहास अर कला री चीजा रा जळायदा जळायदा विभाग है। इण री ऊपर री मजिल मैं चित्र कला री प्राचीन शौलिया रा चोखा नमूना प्रदशन खातर राख्योडा है। राजस्थान री बूदी, किसनगढ अर बीकानेर चित्र शली रा बहुमूल्य अर अप्राप्य चित्रा न देख बडी खुशी हुई। हल मछली

रो खासो वडो अवशेष अर दुल्भ पक्ष्या रा नमूना अठ री विशेषता है। बम्बई रा तारापोरवाला मछलीघर भी सलाय. वास्ते आकपण री जाग्या है। भात भात री छोटी वडी रग विरगी मछल्या नै वडी व्यवस्था सू प्रदर्शित करयो गयो है। मरिन लाइन अर मलावार चौपाटी रो समुद्री किनारो भी मन मावणो है। समुद्र सू दक्षिण मैं ऊपर पहाडी ढलाण माय सक्डू क्सिम रा पेड पौधा आळो सुदर है गिग गाडन है। ई र कन ई 1952 मे नेहरू जी री पत्नी कमला जी र नाम पर उणा री याद मैं बण्या कमला नेहरू बाग है जक मैं फ्वारा, सुदर पुळ अर परी क्था र जूत र आवार रो बच्चा रो इक्मजिलो खेलघर है। वम्बई रो महालक्ष्मी मदिर अर समुद्र र बीच बणी हाजी अली मसिजद भी दर्शनीय धार्मिक स्थल है।

आगले दिन सुवह आठ बज्या गेट वे आफ इण्डिया सू 9 कि मी दूर मोटर सू चालणे वाले लाच मैं वठ र समुद्र र बीच स्थित प्रसिद्ध एलिफेंटा द्वीप पूग्या। गेट सू अठ ताइ पूगण मे 20 मिनट लाग्या। विक्टोरिया गाडन म राख्योडी हाथी री मूरती पला अठ ही, जिण र कारण 15 कि मी आळे इण द्वीप रा औ नाम पडयो। औ द्वीप इण गुफावा मैं बण्या मदिर अर उणा री सुन्दर क्लात्मक मूरता र वास्ते सिगळे ससार में मशहूर है। विशेष रूप सू इण री निर्मूर्ति आपरी सजनकल्पना र कारण ससार मै पलडे दर्जे री कला कृत्या मे स्थान पाव, इण गुफावा मे सातवी सदी री शिव पारवती री केई चित्ताक्पक मूरत्या है। मुख्य गुफा म बडता इ गगाधर शिव री भव्य मूरती दीम। जीवणे पासैं शिवजी ताण्डव करता दीख। शिव पारवती री अठ नौ मूरता है जिकी स री स अत्यन्त अक्पक अर क्लात्मक है। यू तो वम्बई मे जोगश्वरी, काळी आद केई गुफावा आपरी मूर्ति शिल्प वास्ते प्रसिद्ध है पण समयाभाव र कारण इण सव न नी देख सक्या।

वम्बई सावभौम सस्कृति रा यथाथ मे 'कास्मोपोलिटिन' नगर है। इण म वडी सख्या मैं हिदू मुस्लिम पारसी, इसाई, बौद्ध, जन अर दूजा धर्मावलम्वी वस। मध्य अरव र देसा और इग्लण्ड अमरीका सू समुद्री माग

गू जुड्यो हूणे गू अठ विण्णी नागरिक, विदेशां रा वडा-वडा वक अर औद्योगिक प्रतिष्ठान आद है। भारत र मराठी अर गुजराती लोगा र अळावा गोवानी, मारवाडी, कोकणी, कुग क्षेत्र रा वासिन्दा अर दक्षिण भारत रा लोग वडी तादाद में अठ रव। अठै सबडू बोल्या अर भाषावा रो प्रयोग हुव। इतिहासकार कलीन लिख्यो है कै दुनिया रो कोई नगर इत्ता धर्मां जात्या अर विचार धारावा रा प्रतिनिधित्व नी कर जितो क बम्बई। इण वास्त ई सरदार पटेल बम्बई न छोटो भारत ई कवता।

बम्बई सू एलोरा देखण जावण ताईं जबलपुर रेल मारग पर देवलाली सू आगे मनमाड स्टेशन आव। अठ हैदराबाद लाइन री दूजी गाडी पकड र औरंगाबाद जाणो पड। अठ सू एलोरा 28 कि मी दूर है। एलोरा सह्याद्रि पवत माळा र छेडैं एक छोटी डूगरी र ढाल माथ है। एक समूळी पाहडी न काट र गुफावा वणाई है। इण म कुल 34 गुफावा में 16 हिंदू मंदिर 13 बौद्ध मंदिर अर 5 जन मंदिर है। अ मंदिर शिल्प कला री दीठ स आद्वितीय तो हैं ई धार्मिक सहिष्णुता अर सह आस्तित्व रा भी जीवता जागता नमूना है। पयटक विद्यार्थी कला समीक्षक अर सौंदय प्रेमी रा न एक सरीसा आकर्षित कर। ऐलोरा री गुफावा अजता र बाद वणी है। इणा रा निरमाण काल ई सन 300 सू 1300 ताइ मानीज। पण आ र चित्रा अर मूरता मैं गति अर अभिनय रा भाव अजता सू वसी कलापूण है। एक अतर ओ है क अजता म खाली बौद्ध धम रा मन्दिर है जद क अठ तीनू धम रा। इ कारण एलोरा हमशा तीथ वण्यो रयो, पण अजता सकडू वरसा ताइ उपेक्षित रयो अर काल री मिट्टी तळ दब'र खाम वरसा ताइ गुमनाम हुयग्यो।

एलोरा रो कलाश मदिर स सू वडो अर भव्य है। इणगो निरमाण राष्ट्रकूट राजा कृष्ण आठवी सदी मे करायो। एक पूरी चटटान न 80 मी लम्बी अर 50 मी चौडी खोद र एक बडे खाडे म इण विशाल मदिर न वणवायो हो। 2 लाख टन र वजन री चटटान न काटने अर इसे अद्वितीय मदिर र

वणाणे में सौ वरस लागग्या। मंदिर री लम्बाई 42 मीटर, चौडाई 18 मीटर अर ऊंचाई 30 मीटर है। मंदिर रा द्वार, गोखा पगोथिया अर खम्भा माथ खुदाई रो इण ढग रो आकपक काम है क मन चकित अर मुग्ध र जाव है। इण मंदिर में तीन मण्डप है जिण में प्रतिमावा र माध्यम सू बयालीस धार्मिक दृश्य अंकित है। स एक एक सू वढकर नायाव। रावण द्वारा कैलाश न उठाणे रो अर त्रिपुर दाह रा दृश्य तो घणा भावपूण अर सजीव है। पत्थर सू तराशयोडे महान दीप स्तम्भ री टक्कर रो दूजो स्तम्भ ससार र और कोई देश में नी मिल। ऐलोरा र दूजे हिंदू मंदिरा में शिव पारवती ब्याव, नरसिंह अवतार मारकण्डय उद्धार मर री मूरती अर इन्द्र इन्द्राणी री प्रतिमावा घौत भव्य अर गरिमा आळी है।

बौद्ध गुफावा में 10 न री गुफा महायान भवन निर्माण कला रो शानदार नमूनो है। इण र स्तूप म भगवान बुद्ध री एक विशाल प्रतिमा टाच र बणायोडी है। पाच न री गुफा में बिहार है, जक री ऊचाई 40 फुट र नेड है। 12 न री गुफा मै तीन मजिल है इण सू ईन तीन तल क वे। इण र एक तल म बुद्ध री प्राणायाम करती आकपक मूरती है। औ बिहार आकार री दीठ सू देश रो मवसू वडो विहार है।

जन गुफावा कलाश मंदिर सू एक वि मी अळगी है। इण में इन्द्रसभा और जगन्नाथ सभा विशेष रूप सू देखण जोग है। केई कला पारख्या री राय में इ द्र सभा री ऊपरली मजिल रो शिल्प एलोरा में स सू अनूठो है। जिण पहाडी पर जन गुफावा है उण माथ तीथकर पारसनाथ री 5 मीटर ऊंची मूरती भी उत्कीर्ण है। आज सू हजारू वरस पला जद विज्ञान अर तकनीक रा उ नत साधन विद्यमान नी हा हजारू लाखू टन पत्थरा न हाथ सू खाली छणी हथौडे जिसा औजारा सू तोडनो ई नइ बान सुदर कलात्मक मंदिरा रो आकार अर भव्य मूर्त्यां रो निर्माण करण आळा कलाविदा रो धय अर कारीगरी विस्मित करणे आळी है।

ऐलोरा गू बस म पूठा औरंगाबाद आया। अठ सू अजता बस मैं ई गया, रेल अठ ताइ नी पूग। औरंगाबाद सू अजता 100 कि मी दूर है। अजता री गुफावा विश्व री सर्वोपरि गुफावा मैं गिणीज। जद आधिराग ससार जगळी क अध जगळी अवस्था मैं रैतो उण दिना मैं भारत वास्तुकला, चित्रकला अर शिल्पकला मैं पारगत हो, आ बात अजता गू सिद्ध हुव। इण गुफा मन्दिर रा निर्माण ईसा र जन्म सू 400 बरस पला सू ले'र 700 ई बाद तक हुयो। अजता री भीता पर जका चित्र अकित है, वा रा भाव आकृत्या अर परिप्रेक्ष्य अत्यन्त अनूठा है अर दो हजार बरसा बाद भी वा रा रग अर चमक प्रभावित कर है।

अजता री गुफावा मैं भी सह्याद्रि पर्वत माथ 80 मीटर ऊँची चट्टान न पूरब सू पश्चिम ताइ एक तिहाई कि मी री दूरी ताइ अध चन्द्राकार सुदर घेरे म काट र इण मैं विहार चैत्य आद बणाया है। डाइनामाइट र आविष्कार र बाद भी इण तरा री खुदाई मैं जोर आव, तो बिना आधुनिक उपकरणा री उपलब्धि र तराशगिरी रो ऐसो कलात्मक काम आज र यान्त्रिक युग मैं भी अजूबो ई मानीज। अजता गुफावा मैं अनक कलावा रो सगम है अर प्राचीन कला जगत मैं अ बेजोड है।

पहले नम्बर री गुफा महायान वास्तुकला रो अनोखो नमूनो है। इण री भीता अर छात माथ भारत रा पुलकेशिन द्वितीय ईरान र खुसरो द्वितीय अर बारी राणी शीरी रो आप रे राज्य मैं स्वागत करता दर्शाया है। इ र अलावा कुमार महाजनक र राज्याभिषक उडता ग धव अर अपसरा अर पद्मपाणि बुद्ध री अलकृत मूरत्या है। दूज न री गुफा मैं चोखा भिति चित्र है। चार नम्बर री गुफा रो विहार अजता रो सबसू बडो विहार है। नौ नम्बर री गुफा हीनयान शिल्प रो उत्कृष्ट उदाहरण है। आ अजता री सबसू पुराणी गुफा है। आ ईसा र जनम सू सकडू बरस पला बण चुकी ही।

अजता र शिल्पया अर चित्रकारा आपरी सगळी प्रतिभा सोळह न री गुफा री रचना म लगा दी। इण म एक राजकुमारी र मरती वेळा रो

कलात्मक चित्र बौत मूल्यवान है। ग्रिफिथ नाम रो कला समीक्षक कवे है कला रै इतिहास मैं औ चित्र अपूव है। करूणा र भाव न व्यक्त करण मैं शायद ही विश्व र केई चित्रकार नै इत्ती सफलता मिली होसी।' सतह न री गुफा र चित्र मै यशोधरा बुद्ध न राहुल कानी इशारो करती देखाई है। औ चित्र बडो सोभाविक लाग। उगणीसवी गुफा मै नागराजा री सपत्नीक मूर्ति है। जिकी अत्यन्त भव्य है। आ गुफा बौद्ध काल र सब सू उत्तम स्थापत्य अर शिल्प रो नमूनो है। इण रा खम्भा छज्जा ताक, गोखा आद सब मूर्त्यां अर खुदाई रे काम सू अलकृत है।

अजता री अ सब गुफावा बौद्ध धम अर कला सू सम्बधित ही। बौद्ध धम रै पतन र उपरात अ उपक्षित हुगी। देख रेख अर सम्भाळ रै अभाव मे इणा रो घण खरो भाग धूड माटी र नीचे ग्वग्यो। करीब एक हजार बरसा ताइ अ अज्ञात रयी। सन् 1879 ई मै अचानक आ री खोज एक अग्रेज करी अर एक र बाद एक उ'तीस गुफावा आछी हालत मैं मिली। हजारू साल बाद भी चित्रा रो रग अर मूरत्या खम्भा आद रो चमक ज्यू री ज्यू कायम है। औ भी अचरज लाग क छोटा छोटा बारणा आली अधेरी गुफावा मे इत्ती बडी अर विशाल मूरत्या रो निर्माण अर आ री कलात्मक साज सज्ज किया करीजी। सगळ ससार मैं आज कला तीथ दाई पूजीज अर प्राचीन भारत री कला श्रेष्ठता सू दुनिया भर र कला पारख्या अर समीक्षका रो आदर मान अर प्रशसा पाव जक स्थाना र दशन लाभ सू म्हे सब भी अपणे आपन भाग्यशाली समझयो। उण अनजाण कलाकारा अर निर्माण कर्तावा ताई मन ही मन सरधा सू नमन करता यात्रा री सफलता सू अत्यन्त आनन्दित हुया। इण र स्मरण मात्र सू आज भी सबन हरख हुव।

# मुलकता मिनखा री मोवणी धरती-गोवा

गोवा देश र दूजा हिस्सा सू अलग निराळी अर खुशनुमा जाग्या है। अठ रा अनूठा समुद्री किनारा, सुदर भरना खोल्या, नद्या, सुपारी नारियल अर काजू र पेडा री हरियाळी, पहाड्या री शृखला, नद्या र बीच द्वीप अर सरगाह देस'र लाग क कुदरत खुद आपरे हाथा सू इण न सजायो सवारो है। अठ ना तो बडे शहरा जिसा हल्ला गुल्लो धूम धडाको है ना छोटे गावा दाई सून अर नीरसता। अठ रा लोग हसता मुळकता नाचता गाता दीख। अ लोग काम करता करता गाव अर चालता चालता नाचण लाग। गोवानी लोगा साथ समय समय पर अत्याचार अर आक्रमण हूता रया है। पण सकटा अर कठिनाइया र बीच हसी खुशी जीणे री कला रो तरीको इण लोगा सीख लियो है। उदास अर दुखी चेहरा शायद ही अठ दीख। घणा सा गोआन्या रा व्यक्तित्व आकषक हुव। व मेहनती, गुणी अर कलाप्रेमी हुव। जीवन सू पलायन री जाग्या सुख भोग सू जिदगी बीताणी वा री उद्दश्य हुवे। व चोखो खाणो चोखो पहरणो पसद कर। काजू फनी रा शराब स् बान काई परहेज नह। मस्ती सू भरया अ लोग नत्य गान र अलावा अभिनय चित्रकारी अर लेखन विशेष रूप सू नाटक अर काव्य सू भी प्रेम कर। इ कारण ई गोवा मैं अनेक नामी सगीतकार साहित्यकार अर कलाकारा रो जलम हुयो है।

गोवा जावण ताइ पूना सू वास्को डी गामा ताई रेल मारग है। बीच मैं मागोआ स्टेशन आव। गोवा री राजधानी पणजी सू नडो हूण र कारण म्हे अठ उतरया बस सू पणजी पूग्या। पणजी मैं मुख्य बाजार मैं सुदर लाज मैं ठहरया। तयार हूण र उपरात 200 रु म रात्रि दस बज्या तक री एक

टक्सी किराय ले ली। गावा मे यातायात रा साधन मस्ता है अर टक्सी आळा भला अर सज्जन हुवै। पणजी गावा री राजधानी है। इत्ती छोटी अर साफ सुथरी राजधानी देश मे दूजी नही है। इण री बसावट चार पाच किलो मीटर मैं फल्योडी है। पणजी पैली नजर मैं ई मन मोव लेव। दूध जिसी सफेद झाग आळी माडवी नदी र डावै किनारे बसी इण नगरी नै माण्डवी राजकुमारी भी कव। यू तो समुद्री किनारे र सार बस्योड अर हरे भरे पहाडा सू घिर्योडे गोवा री सगळी धरती सुन्दर अर आकर्षक है। पण इण री राजधानी पणजी री शोभा निराली ही है। पणजी एल्टिन्हो नाम री पहाडी र चारू मेर बस्यो है। इण पहाडी र ऊपर सू पेडा री पात र बीच स्थित लाल छात आळा मकीके सू बस्या मकान दशका न आणद प्रदान कर। अठ सू हरे भरे मैदाना रै बीच मद गति सू बैहती माण्डवी नदी इया लागै जाणे धौळे रग रा थोई सरप हरी घास माथ नचीतो हू'र सूत्यो है। उण माथ सफेद पाल वाळी नावा रमतिया दाड लाग। पहाडी सू उत्तर दिशा म नीलो आसमान अर अरब सागर रो नीलो पाणी क्षितिज मैं हल्की नीलिमा मैं सुखद मिलन रो आभास देता लाग। जिण जाग्या माण्डवी अरब सागर मैं मिल अठ अगुआद अर रिस मागोस नाम रा प्रसिद्ध ऐतिहासिक किला है। नदी र सारे सुदर सडक बव। पणजी री सरकारी घर निजी सुदर इमारता इण र सार बण्योडी है। इण मारग पर केई मूरया अर बागीचा रा भी दरसन हुव। नगर सू दक्षिण मै औ मारग मीरामार समुद्र तट पर आ र खतम हुव।

मीरामार समुद्र तट मुलायम बाळु अर हवा मैं झूमता नारेळ रा पेडा री बौछायत र कारण बम्बई र जुहू समुद्र तट री याद दिरावै। ससार र सवसू सुदर तटा मैं इ री गिणती हुव। इण रो दूजो नाम गासपर डायस भी है। जिका मैलाण्या हवाई द्वीप रा जगत प्रसिद्ध समुद्र तट देख्या है व गोवा र समुद्री तटा न वा री जोड रा कव। उण तट पर ताड रा असख्य सोवणा रिरग है। 16 वी सदी रै युराप रो महाकवि लुइस डी क मोस जद गोवा आयो उण इसा विरगा सू युक्त समुद्र री घणी प्रशसा करी ही। इण रूप सौदर्य र सार

मुळरता मिनखा री मोवणी धरती–गोवा

गोवा न पूरय री राणी अर 'भारत मैं रोम' आद नामा सू आदर जोग सम्बोधन मिलतो हा। मीरामार तट माथै मलाया रो मेळो सो रव पण सिन्ना पड़या घणी रौनक रवे। स्थानीय लोगां र अलावा देस विदेसा रा बौत लोग अठ घूमता दीसे अर कोंकणी, मराठी, पुर्तगाळी हिन्दी अंग्रेजी आद भाषावा र कारण इण तट रो स्तर वश्विक रूप ले लेवे है। भ्रमण अर सागर स्नान रै अलावा अठ रे सूर्यास्त रो दृश्य भी पपटवा र हृदय म सुदर छवि री अनूठी छाप छोड।

नगर सू 5 कि मीटर दक्षिण मैं दोणापाउल नाम रो दूजो लुभावणो अर प्राकृतिक सौन्दय र मनाने दाद लागण आळो अनोखो समुद्रतट है। गोवा निवासी छुट्टी अर गोठ मनावण अठ बडी तादाद मैं आव। अठ समुद्र र बीच जल मैं एक ऊची अटारी बणायोडी है। एक पुळ सू अटारी ताइ जाण रो रास्तो है। अठै सू समुद्र रो रजक रूप दीखे। मुरगाव रो बदरगाह अर आसमान सामै मिलता दीसै। अटाद र ऊपर ताइ समुन्द री लहरा री उछाळी पूग। कपडा ई नई मन अर काया सब कुछ आनद री तरगा सू भीग जाव। लहरा र साग सलाणी भी किलकारया भरता हरख सू उद्वेलित हूण लाग। बडो रोमाच अर आह्लादकारी अनुभव हुव।

अठ सू नजदीक ही बादशाह आदिल शाह रो पुर्तगालया र आगमन सू पला रो करीब 500 बष पुराणो महल है। आजकल अठ सचिवालय रो दफ्तर है। इण इमारत र सामै एवे फारिया नामक एक गोवानी सपूत री एक असाधारण अर चित्ताकषक मूर्ति है। इण मैं व एक महिला न सम्मोहित करता दिखाया गया है। मूर्ति गोआ र विख्यात कलाकार कामत र बणायोडी है। फारिया विद्वान वज्ञानिक अर सम्मोहक है। कवत क सम्मोहन विद्या रे आरम्भ कर्तावा मैं व प्रमुख है। पणजी नगर र बीचोबीच मुख्य चौक र ठीक सामने एक क्रिश्चन महिला र नाम पर बण्यो भव्य गिरजाघर है। इण री गिनती गोआ र प्रमुख दर्शनीय स्थळा मैं है। इणरी आकषक सीढ्या बडी ऊची मीनारा अर उण पर लाग्यो सुदर घंटो ई र आकषण न और बढाव। गिरजा

घर र कन महालक्ष्मी कर हनुमान जी रा मंदिर है। नडे ही एक मस्जिद भी है। अै सब धार्मिक समन्वय रो सुदर आदश उपस्थित कर। गोवा री आवादी में भी साठ प्रतिशत हिंदू पैंतीस प्रतिशत ईसाई अर वाकी मुस्लिम, जन, बौद्ध आद है पणजी म सेण्ट्रल लाइब्रेरी' नाम रो पुस्तकालय है जक मे लटिन भाषा री दूलभ पुस्तका है। पुर्तगाली साहित्य अर इतिहास री प्रसिद्ध अर प्राचीन अलभ्य पुस्तका अठै मिल। इण तरा कला, सस्कृति, इतिहास अर प्राकृतिक सौंदय आद रा पारखी प्रेमी सलाया न पणजी में बौत कुछ देखण जाणण न मिल।

पणजी र अलावा भी गोवा मे मोक्ळा देखण जोग समुद्र तट है, जका री शोभा सुदरता री आनन्द बाने देख्या ही पायो जा सक। आ मैं कलगूट री नाम बौत मशहूर है। पणजी र उत्तर मैं माण्डवा नदी रो पुळ पार कर गाआ रो वारडेज ताल्लुको शुरु हुवै। इण क्षेत्र मे पश्चिमी किनारे पर औ समद्र तट है। बेमिसाल सुदरता अर लोकप्रियता र कारण इन गोवा र समुद्र तटा री राणी कवे। वारडेज कद पुराणे जमाने मे वारह क्षेत्रा मैं बटयोडो हो ईण कारण ई औ नाम पडयो। इण समुद्र तट पर नारियळ रा अणगिणत लुभावना रूख है। बाळु मय चौपाटी र कन घास री लम्बी पट्टी आळो मदान अर सात किलो मीटर लम्बो नीले मेहराब दाइ समुद्र रो किनारो। मदान मे सुदर झौपडया री बीच बीच म व्यवस्था। गर्म्यां मे हजारू दशक अठ रे इश्या र आनन्द ताईं आवं। इण र आखिरी सिरे माथ अगूदा रो प्रसिद्ध किलो अर बडो सुमद्री दीप स्तभ है। इण र उत्तर म कसुआ अर वागाटोर नाम रा गाठ मनावणा रा सुदर स्थळ है। माच सू मई तक र महिना मैं तो अठ मेळो सो ई लाग्योडो रवे। औ समुद्रतट ब्राजील र प्रसिद्ध कोपकावना तट री याद करावै।

वाग समुद्रतट कलगूट र नड ही उत्तर कानी स्थित है। कलगूट र अर इण र बीच एक नदी है। समुद्र मैं भाटो आव जण इन नदी रो पाणी जिण जाग्या कम है बठ मू पदल पार कर कलगूट आठ दस मिनटा में ई पूग्यो जा

सक। नइ तो यासो चक्कर लगा'र आणा पड। वाग रो तट यास्को डी गामा र दक्षिणी क्षेत्र मैं जुवारो नदी र डाव किनारे है। वास्को रा निवासी इण तट माथ घूमण न अर तिरण न आव। अठ सू मुरगाव बदरगाह रा निजारो भी चोखो दीस। ग्यास तौर सू रात मैं बदरगाह अर उण र जाहजा री चिल मिल करती रोशनी मन मोव लेव। वाग तट र एक पास जमीन ग्यासी ऊची है। अठ विश्राम करण री जाग्या ता है ई, ऊचाई र कारण दूर दूर तक समुद्र रा दृश्य दीख। ईया समुद्र तटा र अलावा कोलावा बागतूर, श्रीदव अर मैंद्र आद और भी रमणीक तट गोवा मैं है पण समय री कमी र कारण म्है आ न नी देख सक्या। गोवा र अलावा भी जिका समुद्र मैं देख्या है। उणा सू तुलना करणे सू गोवा रा अ तट अपूव सुदर कया जा सक।

टक्सी सू पणजी र पूरव मैं फोंडा ताल्लुके मैं इण क्षेत्र र मदिरा रो अवलोकन वास्ते गया। गोवा रो मदिर शिल्प दूजा जाग्या सू भिन्न है। अठ रे मदिरा मैं प्रवेश द्वार र सामै प्राय मीनार भी बणी हुव। गोवा रा मदिर विशाल आयताकार हुव। आ र ऊपर ईसाई स्थापत्य री छाप भी झलक। गोवा मैं सबसू परसिध मदिर मगेशी मदिर है। एक छोटी पहाडी री बगल मैं औ शिव पावती रो सुदर मदिर है। ई रे चारू मेर यात्र्या र रवण वास्ते 12 अग्रशाळावा बण्योडी है। मदिर र बारे म एक कथा कईज। एक बार भगवान शिव हिमालय सू कठई चला गया। बान फर पावण वास्ते पावती जी तपस्या करी। इण र फलस्वरूप शिव जी सिंह र रूप मैं पावती जी र सामैं प्रकटया। पावती चीत्कार कर उठया व त्राहिमान गिरीश कवण लागी। शिव असली रूप मैं प्रगट हुया। बाद मे शिव भक्त मग्रीश यानि सिंह रूप मैं शिव री आराधना करण लाग्या। ई मदिर र कन एक ग्वाले र बणवायोडो मुलकेश्वर (शिव) रो छोटो मदिर है। गोवा मैं बहुत प्राचीन काल म आदिवासी रता हा। ब नाग सिंह अर लिंग आद री पूजा करता। सारस्वत ब्राह्मण उत्तर सू बाद मैं अठ आया। ब्राह्मणा भी अठ र लोक देवतावा री पूजा आदिवासा दाई करणी आरम्भ कर दी। मगेशी मदिर आय अर आदीवासी सस्कृति र समन्वय रो अनूठो उदाहरण है।

फौंठा तालुका मैं ही मारदोल नामक स्थान पर म्हाल्सा देवी रो हिंदू शली मैं बण्यो काष्ठ रो सुंदर मंदिर है। काष्ठ शिल्प रो दीठ सूं ओ सगळे देश मैं प्रसिद्ध है। हिंदू स्थापत्य म इ रो निर्माण हुयो है। ओ अम्बा माता रो मंदिर है। म्हाल शमा नाम र एक भक्त ने देवी रा अक्स्मात दर्शन हुया। देवी रो वचन हो क इण स्थान पर खुदाई करणें सूं निज मूर्ति निकळसी। कथन सत्य नीवळयो। बा मूर्ति ही अठ प्रतिष्ठित है। उण र चरणा मैं म्हाल री लिंगाकृति मूर्ति भी बण्योडो है।

फौंटा सूं 2 मील दूर कावलेम रने ड घारगल मै श्री शाता दुर्गा रो प्रसिद्ध मंदिर है। कवे क एक वार शिव अर विष्णु भगवान मैं भयंकर युद्ध हुया। ब्रह्मा जी युद्ध रोवण ताइ जगदम्बा नैं विनती करी। युद्ध बंद करणे र कारण माता श्री शाता दुर्गा नाम सूं विख्यात हुई। इण आख्यान र अनुसार ही इण मैं तीन प्रतिमावा है। श्री शाता माता बीच मै अर शिव विष्णु बारे आर सारं विराज। त्रिमूर्ति रो ओ संगम शायद ही और कठई मिल। श्री शाता दुर्गा री पूजा गोवा म प्राय घर घर हुवै। हिंदूघरा र साम तुलसी रो चौरा गोवा मैं आवश्यक रूप सूं मिल। तुलसी चौरो ईसाई घरा र आगे भी मिल पण उण चौरे माथ 'त्रास' रो चिह्न हुव। इण मंदिर रो निर्माण सतारा र साहू कराया। मंदिर निर्माण री कला म ओ सगळे देश मे अनूठो गिणीज। इ र खम्भा अर मण्डपा री शोभा चकित कर देव है। हर बरस दिसम्बर महिन मैं श्री शाता दुगा री शोभा यात्रा निकळ। भक्त लोग मंदिर अर प्राकृतिक सुषमा न देखण रो लाभ उठा र प्रसन्नता प्राप्त कर।

गोवा मैं खास तौर सूं पणजी सूं उत्तर पूरब मैं जक क्षत्र न पुराणो गोवा कवे अनेक सुंदर गिरजाघर भी बण्योडा है। आ सगळा न देखणा ता सम्भव कोनी हो। टक्सी सूं गावा र सब सूं सुंदर अर प्राचीन सी कॅथेड्रल गिरजाघर न देखण न गया। ओ गोवा रो पला गिरजाघर हो। अठ राज धार्मिक उपदेश अर समारोह हुव। ओ गिरजाघर तस्कनी अर डारिक शली री वास्तु कला, रो निराला नमूना है। इ री भव्यता देख र युराप र एक विख्यात प

मुळवता मिनखा री मोवणी धरती

डा फ्रायर 1675 मैं क्यो क इ री जोड रो गिरजागर कमसू कम ब्रिटेन मैं तो कोनी। 1808 मैं भळ योरोप र एक यात्री डा बुकनन इ बात री ताईद करता क्यो क औ शानदान गिरजाघर युरोप र केई नगर री शोभा बढा सक है। इणरो निर्माण पुतगाली सेनापति अल्बुक्क मुसलमाना सू गोवा खोसण री खुशी मैं करायो। क्यू क पुतगाल्या न आ जीत साता कातारीना र त्योहार र दिन मिली ही, इण हेतु गिरजाघर र मुख्य द्वार पर एक शिला माथ लेख है मुसलमाना माथ विजय प्राप्त कर, 1510 ई मैं साता कारानीना रै शुभ दिन गवनर आधोसु द अल्बुक्क इण दरवाजे मैं प्रवेश कियो।' हर साल 25 नवम्बर न गोवा विजय री याद मैं अठ समारोह हुव। इण न पूरो बणण मैं 75 बरस लाग्या। गिरज रो मायलो भाग बारले सू बेसी सुन्दर है। इणरी लम्बाई 142 फुट अर चौडाई 70 फुट र करीब है। चारू दिशावा मैं बण्या पूजागृह इ सू अलायदा है। आज भी औ गिरजा घर गोवा मैं पुतगाली शासन र उदय अस्त री कहाणी री घोषणा करतो लाग। यूनानी शली री इसी कम ईमारता ई देश मैं मिल।

इण रै बाद सोलवी सदी मैं बण्योडे बामजीसस रै प्रख्यात गिरजा घर देखण न पूग्या। औ भी पुराणे गोवा मैं ही है अर गोथिक भवन निर्जाण शली म बण्यो है। डी जे म्हास करेन हेस नाम र ईसाई सेठ इण न बणवायो। 1605 म बण र गिरजो पूरो हुओ। इण र एक बाजू मैं प्रसिद्ध ईसाई सत सैंट फ्रासिस जेवियर री कब्र है दूज म होली सेक्रामेट नामक स्थळ है। धम गुरु पोप र आदेश सू इण गिरजे नै रोम र प्रसिद्ध अर महत्ता प्राप्त सात गिरजा घरा र बरावरी रो दर्जो मिल्यो है। सेट जेवियर री कब्र र चारू मेरकासे री बारीक कलात्मक नक्काशी रो काम देख्या ही बण। इण गिरजे री भी गोवा मे घणी मानता है। अठ सू वापस पणजी आया। एक दिन पणजी रुक र पूठा बम्बई हूता घर पूग्या।

जिदगी सू भरपूर प्यार करणिया आकपक |अर जिदादिल गोवा रा वासिदा बठ री ईसाई पुतगाली ढग री जीवन शली न रू ब रू देखण रा

सुहावणो अवसर आज ताइ स्मृति मैं ताजो है। आज गोवा भारत रा अभिन्न अग है अर भारत री जीवन धारा र साग बवे है। पण फेर भी आपरी परम्परागत रगीनी अर जिन्दादिली नै ब कायम राख्या चाले है। अठ रा खाता पीना नाचता गाता जीवन प्रमी लोग दूजा प्रदेशा सू आया अतिथ्या रो स्वागत सत्कार प्रेम अर जोश सू करै। इण प्रदेश री रूप शोभा अर गोवानी लागा रो मीठो व्यवहार भुलाया नी भूल।

# आधुनिक नगरा अर नदनवन री भूम

प्रकृति र सुरम्य दृश्या सू परिपूण, गौरव शाली परम्परा अर आधुनिक यात्रिकी रौ धर खुशगवार मौसम हरया भरया सुन्दर विशाल मन मोवणा बागीचा अर पक्षी आरण्य आळे कर्नाटक प्रदेश में सब रुचिया र पयटका न आकर्षित करणे आळा स्थान अर सामग्री है। वानस्पतिक उद्याना अर सुरम्य आधुनिक बगाचा री तो अठ भरमार है। शिल्प अर स्थापत्य रा नामाव केन्द्र, धार्मिक स्थळ प्राकृतिक बदरगाह सुरम्य समुद्री किनारा, विख्यात पशु बिहार आद री भी अठ कमी कोनी। इण प्रदेश ई भारत न हैदर अली टीपू सुल्तान अग्रेजा सू टक्कर लेणे वाळी वीरागना राणी चिन्नमा विटूर अर स्वाधीन भारत रा प्रारम्भिक वीर सेनापति जनरल थिमया अर जनरल करिअप्पा जिसा नर पुगव प्रदान किया। विजय दसवी र त्यौहार री उपासना भूमी वीर प्रसविणी क्यो नइ हूसी ?

विजय नगर गोलकुण्डा बीजापुर आद ऐतिहासिक साम्राज्या री रगस्थली आ भूमी ई रयी है। हम्पी रा कलात्मक अवशेष श्री रगपट्टण रा स्मारक श्रवण बेलगोला री मूर्त्यां इ री सास्कृतिक ऊच्चाई री घोषणा कर। अठ रो सगीत भारतीय सास्त्रीय सगीत में अनूठो मानीज। मल्लिकाजुन भीमसेन जोशी कुमार गधव सगीत री इण रसमय परम्परा न अक्षुण्य राखण आळा आदर जोग भारत रा सपूता री जननी आ भूमी ही है तो सी वी रमण विश्वेस्वरया जिसा वज्ञानिका री मातभूमि होणे रो गौरव भी कर्नाटक न इ प्राप्त है। इण वदना अर दक्षण जोग स्थल र भ्रमण रो कायक्रम बणा र अहमदाबाद बम्बई हैदराबाद हूता दण री राजधानी बगलूर पूग्या। कर्णाटक रो जूणो नाम मसूर राज्य हो। अठ री भाषा कन्नड

है जिण मैं 'ट' वग रा आरार खासी सख्या मैं हुव। जनसख्या अर क्षेत्रफल री दीठ सू भारत रो छठो वडो राज्य है। इण राज्य म तेरह हजार वग मील क्षेत्र म घणा जगळ है। टीक अर वास र जलावा अठ चदन रा पेड खूब हुवै। चदन री लक्डी अर बीरा इत्र, फुलैल अर सुगध युक्त अगरवती, साबुन आद उत्पाद जगत भर मैं प्रसिद्ध है।

वैंगलूर कर्नाटक री राजधानी है। औ नगर बसावट, मौसम और उद्योग धधा री दीठ सू भारत आधुनिक नगरा मे श्रेष्ट गिणीज। चार पाच सदी पला अठ सामान्य वस्ती ही। हैदर अली र राज मैं अठ की उन्नति हुई। बीसवी सदी मैं अठै री योजनाबद्ध विकास हुयो। स्टेशन माथ उतर ताई लाग्यो क केई सुदर आकर्षक अर आधुनिक शली मैं निर्मित भव्य ईमारत मे पूगग्या हा। वैंगलूर मैं ठहरण वास्ते सक्डू होटल है। सराय धमशाळावा री भी कमी कोनी। स्टेशन रोड माथ कोई 500 गज दूर ही मुप्पी थोटाडप्पा चौल्टी नाम री धमशाळा है। उण मैं ठरण री व्यवस्था हुगी। स्टेशन पर ई वीस्यू ट्रवल एजन्स्या रा दलाल घूमता रैवे। पयटका न वारी व्यवसायिक अनुभवी दृष्टि तुरत आळख लेव। बैंगलूर मसूर अर श्रीरगपट्टण रा दशन जोग स्थाना वास्ते रोज टूरिष्ट वसा स्टेशन कन सू दिन भर चालती रव। 50 रु प्रति सवारी सू 35 रु ताइ भाव ताल मैं जठै वात वण जाव तय कर र वठा लेवै।

वैंगलूर चौडी सडक्या, आधुनिक भवना अर वगीचा आळो सुदर नगर है। 25 30 लाख री आवादी आळे इण शहर मैं मर जाति, धम,सम्प्रदाय अर प्रदेशा रा लोग रवै। अठ लाल वाग, कव्वन वाग, कुमार वाग आद केई वाग है। वागा री वोळायत सू केई लाग इण नै उद्याना रो नगर' भी वाले। वागा में केई केई एकड भूमि मैं कमल र फूला री लम्बी पात, भात भात रा पेड पौधा, झाड लता आद देखण न मिल। टूरिस्ट वस वाळा खाली लाल वाग वनै रोके वाकी निजी तौर सू देखणा पड। लाल वाग स्टेशन सू घणो अळगो कोनी। औ काफी वडो है। हैदर अली मसूर र महाराजा न औ वाग भेंट

करयो। दक्षिण री वनस्पति र मुजब सब प्रकार रे पेड पौधा री विशाल सख्या अठ मौजूद है। जाग्या जाग्या नकली पहाड, झरना, हौज अर फव्वारा भी बणायोडो है। हर साल वसत, री वेळा मैं अठ पुष्प प्रदशनी लागे। 2 मील र घेरे मैं फल्यो होणे सू माय सवारया आळा वाहन भी जाणे री इजाजत है। अठ आणे आळा ताजगी हर प्रसन्नता रो अनुभव कर।

बैंगलूर रो 'विधान सौध' विशाल खम्भा टोड्या तोरणा अर गुम्बदा माथ आधुनिक स्थापत्य शैली मैं निर्मित एक आधुनिक इमारत है जकी मसूर रा सुदर महला री याद अणाव है। इण मैं विधान सभा अर सचिवालय रा दफ्तर लाग। शहर र बसवन गुडि क्षेत्र मैं नन्दीश्वर रो शिवालय है। मल्लेश्वरम म महादेव अर गविपुरम मुहल्ले म गगाधरेश्वर रो मदिर है। तीनू मदिर शिव रा है, अर मुदर बण्योडा है। बगलूर रो सबसू दशनीय विश्वेसरया तकनीकी म्यूजिम है। अठ काच री अलमारया मैं पाणी निकाळने रा पम्पिंग सट भारी समान उठाणे री क्रेन मशीना, खाना खोदणे री ड्रिलिंग मशीन सिचाई री आधुनिक मशीना, टक्टरा आद रा छोट नमूना प्रदशन ताई राख्योडा है। विशेषता आ है क आ अलमारया रे हेठ बिजली रा बटन लाग्योडा है। दशक आप बा बटना न दबा र मशीना री काय विधि अर सचालन नैं देख सक है। रूखाळी वाळा कमचारी तो एक दो ऊभौ रवे पण और कोई प्रदशन अधिकारी बठ नी हुव। इण स्वचालित व्यवस्था मैं सलाणी जद अपणे आप चला'र आन देख तो देश र विकास मैं काम आणे आळी अति आधुनिक मशीना री जाणकारी सू ज्ञान वृद्धि तो हुव ही है।, व्यक्ति री एक तरह सू भागीदारी इण मैं सम्मिलित होणे र कारण बीन घणो आनन्द आव। बच्चा र रजन अर ज्ञान री दीठ सू इसा म्यूजियम दूजी जाग्या लगावण री योजना बण तो और लोगा न भी लाभ हुव।

बैंगलूर विशाल औद्योगिक नगर है। अठ भारत विख्यात बडा बडा कारखाना अर औद्योगिक सस्थान है। हिन्दुस्तान विमान कारखानो, भारत इलक्ट्रोनिक्स, इडियन टलीफोन इन्डस्ट्रीज हिन्दुस्तान मशीन टूल्स आद लूठी

औद्योगिक इकाईया अठ है। भारत रै लगभग सब प्रदेशा रा लोग इणा मैं कायरत हूणे सू एक सावभौम नगर रो स्वरूप औ ले लेवै है। अठ प्रसिद्ध वज्ञानिक अनुसधान केन्द्र भी केई है—इडियन इस्टीटयूट आफ साइसेज अर रमण रिसच इसटीटयूट आ मै उल्लेख जोग है। अठ उद्योग री दृष्टि सू भारी मात्रा मैं चदन री लक्डी, सुगंधित द्रव्य, लडाकू विमान, टैलीफून रा उपकरण, घडया मशीन रा औजार अर कळ पुर्जा, बिजळी री मोटरा अर इलैक्टोनिक्स रा टी वी कलकूलेटर बी सी आर जिसा बहुविध सामान वणै।

वास्तव मैं अनेक दीठ सू बैंगलूर देश रा दूजा नगरा में आपरो अनोखो स्थान राख। अठ रा कृष्ण राजन्द्र बाजार अर रसल बाजार बौत सुदर अर विशाल है। हर तरह री आधुनिक जिन्सा अठै मिल जाव। बगलूर री साडया भी मशहूर हुव। रेशमी साड्या अर जवाहरात अठ सू विदेशा मैं भी निर्यात हुव। चिक्पट अर एवन्यू रोड साडया रा प्रसिद्ध बाजार है। महात्मा गाधी रोड माथ कलात्मक वस्तुआ रो सरकारी 'कावेरी आट एम्पोरियम' है। हाथी दात रो सामान, लकडी री छडिया, खिलौणा, लक्डी माथ चित्रकारी, चदन री सामग्री अर रेशमी क्पडा अठ सहूलियत सू बाजब दामा मैं मिल।

बगलूर सू 138 कि मी दक्षिण पश्चिम मैं महला री नगरी मैंसूर है। अठ महल अर बागीचा इत्ता सुदर है कै ईन आधुनिक इन्द्रपुरी भी क्व। इण नगर रो विकास अठ र रजवाडे योजना बद्ध तरीके सू कर्‌यो है। सडका, बाजार, भवन महल स आकपक अर कलात्मक है। देरया जी धाप अर निजरा देखती ई र जाव। मेसूर रो राज महल 1897 म बण'र पूरो हुयो। आधुनिक स्थापत्य रो बेजोड नमूनो है अर हिन्दू क्र मुस्लिम शिल्प र मिश्रण सू बण्या भारत र सवसू बडा भव्य मैहला मैं इण री गिणती हुव। ई रो सामलो चहरो बडो सुदर है। बीच र हिस्से मे पर्गोथिया है। ऊपर री मजिल मैं पैला बालकनी है। इण र ऊपर महलात है। महल र सामै विशाल प्रागण है। मैसूर राज्य मैं उतसव आयोजन र वखत राजा लाग बालक्नी मैं बठता, सामत

सभासद नीचे पगाथिया पर अर आम जनता सामै चौगान में भेळी हूती। मैसूर मैं दशरावे रो त्यौहर धूम धाम सू मनाईज। उण वेळा महल री रोशनी देखण जोग हुव एक एक फुट री दूरी माथ लाग्योडा मुदर दीपा रा रोसनी सू सम्पूण महल जगमगाव।

म्हैल मैं सुदर अजावधर है। जिण मैं पुराणा हथियार चित्र, सजावट री सामग्री, वस्त्र अलवार आद रा चाखो सग्रह है। म्हैल मैं एक विशाल आगार है जको क्लात्मक चित्रा सू सज्या रवे। दरबार हाल मैं सोने रो सुदर सिंहासन प्राचीन राजकीय वभव री बीती गाथा सुणावतो लागे। क्वक 1691 मैं बादशाह औरगजेब मैसूर रै चिक्का देवराजा न ओ सिंहासन भेंट मैं दियो। म्हैल रो मुख्य द्वार क्मान छत अर सीढया मन न मोहित क्र देव। महल मैं दशराव रे जलूस रो शानदार चित्र अक्ति है जको बडोसजीव है। विवाह कक्ष बहुमूल्य जिन्सा रो सग्रह है। नगर र चौक मैं सगमरमर री ऊची चौकी माथै मैसूर र अतिम राजा र दादे री बडी मूरती है। आ भी बडी आकपक है। नगर र बार चामुण्डी पवत मारग माथ स्वच्छ धोळे वरण रो सोवणो विशाल ललित महल है। एकात सुदर वातावरण म ओ म्हैल अमरावती र महला सो लाग। वाशिगटन र वाइट हाउस री सी झलक ई मै मिल। इ री सीढया ईटली र सगमरमर सू बणी है। इण मैं भारत रा प्रधानमत्री अर राष्ट्रपति ही ठर सक। याम्या, र देखण ताइ ओ खुलो है। पला अनुमति ले'र जाणो पड जकी पयटक विभाग सू मिल जाव।

मैसूर नगर सू 13 कि मी दूर चामुण्डी पवत माथ मैसूर राजघरान री अधिष्ठात्री देवी चामुण्डी रा 12 वी शताब्दी म बण्या प्राचीन भव्य मदिर है। चामुण्डा दुर्गा माता री प्रतीक है। मदिर र आधे मारग मैं नदी री सोलह फुट ऊची विशाल प्रतिमा है। इ र गळे मैं पुष्प माळा अर घटया भी पत्थर तराश र बणायोडी है। कारीगरी रो चाखो नमूनो है आ मूर्ति। मदिर र नेडे महिषासुर राक्षस री 26 फुट ऊची प्रतिमा है। आकृति भयक्र दीख। हाथ मैं खाडो भी धारण है। पण मात शक्ति चामुण्डा र सामै राक्षस भी नी ठर

सक्यो। भारत री आ मान्यता भी नमन जोग है। ससार री क्लुष वृत्या रो निवारण मात शक्ति र उन्मेप स ई सम्भव है इ मैं कोई शक नईं। चामुण्डा पहाडी माथ अणेक मदिर अर तळाव आद है। ऊची डूगरी माथ स्थित आ मदिरा री रोशनी मैं रात मैं ओ सम्पूण स्थल परीलोक सो लाग।

मैसूर सू 12 कि मी दूर कृष्ण राज सागर वाध है जो चौडाई मैं 2 कि मी लम्बो है। कावेरी नदी माथ निर्मित हुण सू बाध री लारली भीत माथ कावेरी माता री भावपूण प्रतिमा बणी है। इण बाध रो निर्माण विश्व प्रसिद्ध अभियता विश्वेस्वरया करायो। वारी स्मृति मैं एक शिला माथ बारो आदर जोग नामोल्लेख है। ओ वाध भारत र वडे वाधा मायसू एक है। वाध पत्थरा सू बण्यो है। जलाशय 50 वग मील क्षेत्र ताईं फल्यो है। वृष्ण सागर बाध र लार पूरबी दिशा मैं जग प्रसिद्ध वृन्दावन उद्यान है। ई रो मूल नाम नदन बाग हो। नाम री साथकता अर सच्चाई इण न देख र ही मालूम हुव। इण रा मुलायम दूब आळा विशाल मढया सवरया बागीचा ऊचे सू नीचे जावती केई पटया मैं प्रवाहित होता झरना रग बिरगा मोवणा पुष्प वेग सू बैवता ऊचा रगीन फवारा बीच मै धोळी झील झील म नौका विहार री यवस्था। उद्यान र एक कुण मैं शीतल पेय अर नाश्ते आद री कटिन अर होटल जाग्या जाग्या विश्राम खातर सु दर चौकया उद्यान र ऊपरी भाग सू सारे इश्य न देखण आळी सु दर बारादरी कृत्रिम झरना मैं मछळ्या र सचरण रो आभास देंती रेखावा री कारीगर आद सब कुछ इन नदन वन री वास्त विकता प्रदान कर।

उद्यान रा सजामजाया पौधा बेल्या गुल्म क्यारया मन मैं उल्लास भर देव। दोपहर र समय फवारा माथ पडती सूरज री किरणा ठौड ठौड इन्द्र धनुप री आकृत्या बणाव। इन्द्र लोक अर उण रा उद्यान तो कल्पनिक ही है पण धरती रो ओ इन्द्रोद्यान जीती जागती हकीकत है। मैसूर र वदावन गाडन रा दशन सौंदर्यावलोकन री वडी भारी साथकता है। इण न देख र म्हे सब आपरे भाग्य री सराहना करता नी थाक्या। मैसूर सू 16 कि मी दूर श्री रग

पट्टनम नाम रा प्रसिद्ध स्थान है। इ न भगवान रगनाथ री नगरी भी क्व। कावरी नदी री दो धारावा र बीच बस्योडा ओ सुदर नगर 1610 सू 1799 ताई मैसूर राज्य री राजधानी भी रयो हो। हैदर अली अर वी रो सूरवीर बेटो टीपू सुल्तान अठ रा प्रसिद्ध शासक हा। टीपू 1789 मैं अग्रेजा र विरुद्ध घमासान युद्ध करतो अठ ई वीर गति पाई ही। इण स्थान पर टीपू रो गढ अर आस पास रा क्षेत्र ऐतिहासिक दीठ सू देखण जोग है। सत्रहवी अर अठारवी दो शताब्दी ताइ मुसलमान शासका री इण राजधानी आपरे जीवन काल मैं साम्प्रदायिक ऐकता अर सद्भाव रो जको आदर्श स्वरूप उपस्थित कर्यो वो आज भी इतिहास मैं याद करीज है। साम्राज्यवादी अग्रेजा सू इण दोनू कौंमा सम्मिलित रूप सू युद्ध लड्यो अर कुर्बानिया दीनी। खुद टीपू युद्ध म दुग र फाटक सामै वीर गति प्राप्त हुयो। आज भी अठ अनक हिन्दू मदिर अर मुसलमाना री मस्जिदा बारे सह अस्तित्व रो उदघोष कर। रगनाथ मदिर 500 वष पुराणो है। मदिर विशाल अर कलापूण है। इण क्षेत्र मैं इ री मानता भी बौत है।

श्री रगपट्टणा र दूजा दर्शनीय स्थाना मैं टीपू रो गर्मी री रुत रो म्हैल गुम्बज दरिया दौलत बाग महल अर सगम देखण जोग है। इण इमारता री नक्काशी करयोडी महराबा, छना दीवारा अर रगीन मूरत्यां दर्शका न लुभाण आळी है। श्री रगपट्टण सू 1 मील दूर जको गुम्बज है बो मुस्लिम शासका र ठाठ बाठ अर शान री सूचक है। एक बगीचे र बीच आ गुम्बज काळे सगमरमर र पत्थरा सू बण्या खम्भा माथ पीले वरण र पत्थरा सू बणी है। हरी धरती अर नीले आसमान र बीच पीत वरणा गुम्बज रग चेतना अर कलात्मक निर्माण रो अनोखो दृश्य पेश कर है। नक्काशी रो काम फूटरो है खम्भा विशाल अर सुदृढ है। रग विरोध वस्तु शिल्प री अपूवता दिखाव। इण गुम्बद मैं टीपू अर उणा र पूवजों की मजार भी है। इणी ठाम टीपू सुल्तान रो निजी वस्तुआ रो कलात्मक सग्राहलय भी बण्योडो है। अठ सू वापस बगलूर पूग्या अर वापस घर ताइ रवाना हुया।

भौतिक अर भौगोलिक, ऐतिहासिक अर धार्मिक, कलात्मक अर सुषमापूर्ण कर्नाटक आपरी स्पष्ट छाप पयटका माथ छोडे। कन्नड लोग स्वभाव सू भी शात, गभीर धार्मिक अर मिलनसार हुव। कपट अर धोके री प्रवृति भी इण प्रदेश मैं बौत कम दीखे अर बारला लोगा रो व सत्कार भी कर। अठ र लोगा रो परिधान अर भोजन भी सादो हुव। देश भक्ति रो भाव पला र समय दाइ आज भी इण प्रदेश र लोगा म मिल। अठ री स्त्रिया भी धरम परायण अर वीर हूव। चादबीबी, रानी चेनम्मा अर मल्लमा जिस्सी विरागनावा री भूमि आज भी साहस अर कमठता सू ओत प्रोत दीख। इण सब विशेषतावा सू युक्त आधुनिक भारत र निमाण मैं अपूरव योग देणे आळे इण क्षेत्र री यात्रा रो स्मरण मान हरख पुलक सू हिये न भर देव है।

# पोंगल अर मंदिरा री धरती-तमिलनाडु

द्रविड सभ्यता री लीला भूमि ललित कलावा री अक्षय निधि, श्रेष्ट साहित्य री जननी पोंगल री धरती भांत भांत र शिल्प सू बण्या मंदिरा री उद्भव स्थळी तामिलनाडु रो भारतीय संस्कृति र विकास मे स्मरण जोग योगदान है। जैन अर वैष्णव देवी देवतावा रा अवतार पुरूषा र रूप मैं अठ विशाल कलात्मक मंदिर बण्या है। इण मंदिरा रा आभ छूवता गोपुरा मैं महा पुरूषा री कथावा अर लीलावा अनूठी मूरती शिल्प मे माण्डयोडी है। रामायण महाभारत, पुराण अर दसावतारा सू सम्बंधित सायत ही कोई प्रसग हुव जक न इण म स्थान नही मिल्यो हुव। मदुरा कांचीपुरम रामेश्वरम अर कन्याकुमारी रा जगत विख्यात मंदिर इण धरती पर ईं है। देश वासी ई नईं ससार र दूजे देशा सू भी दर्शनार्थी अठ आय दिन पूग।

भारत री धर्मप्राणता अर इ री खेतीहर स्वरूप द्रविड संस्कृति री भूमी तमिलनाडु मैं देश र दूज प्रदेशा दाई व्यक्त हुव। तमिल क्षेत्र मैं सूय भगवान री आराधना वेसी हुव। अठ पोंगल र तौहार री घणी मानता है। मकर सक्रांति न तमिल मैं पोंगल कव। सूय भगवान जद भूमध्य रेखा सू मकर रेखा कानी बढ उण वेळा मकर सक्रांति हुव। यानि सूय देव री किरपा सू जद ऊष्मा बढ अर सीत रो परभाव कम हुव उण वखत ही बनस्पति मैं अकुरण फूट फसला ऊग अर धन धान्य सू पोषण अर विकास हुव। धान ईख वटहल वेळा हळदी अर नारेळ सू घर वाजार भर जाव। उण वेळा कृषक कृतग्नता र रूप मैं पोंगल न आ जिन्सा अर फळ फूला रो नवेद्य चढाव। पोंगल रो औ त्यौहार तीन दिन मनाईज। पले दिन किसान कूडो काकड बाळ

म नष्ट कर। इण आयोजन न भागी बँवे। दूजै दिन उद्‌ू वेट्या रंगोळी मजाव। सवामण्या अर जातो जवाया रो अभ्यर्थना अर सम्मान हुवै, उणा नैं मेंट वधाई मिल। तीज दिन पशुआ री पूजा 'माट्टपागळ' हुव। आत्मीयता, स्वच्छता अर कलात्मकता र साग वनस्पति अर मानवेतर जीवा रैं प्रति उत्तर दायी सहअस्तित्व पूण जीवन रो ईं सू उत्तम और क्या परिचय हो सक ? पागल रो त्यौहार भारतीय जीवन पद्धति री सम्पूण व्याख्या दाइ लाग। इण सुदर अर पावन भूमि रैं दर्शन रो कायक्रम कई साथ्या भेळ बणाया।

दिल्ली सू मद्रास ताइ रल सू पूग्या। मद्रास तमिलनाडु री राजधानी है। भारत र दक्षिण पूरबी समुद्र तट रो ओ एक विशाल बंदरगाह है अर अठै रो समुद्र तट दुनिया र सबसू सुदर तटा मैं एक गिणीजै। हवाई मारग सू भी मद्रास दुनिया रा केई बडा देशा सू जुड्योडो है। मद्रास रा हवाई स्टेशन अत्यन्त आधुनिक अर बडो है। हजारू आदमी नित दूर दराज सू अठ पूग। साहूकार पट र महेश्वरी सदन मैं आवास री सुदर व्यवस्था हुयगी। पत्रा स ई पत्राचार सू पूव आरक्षण करण खातर करा राख्यो हो। एक मित्र न भी लिख राख्यो हो। व स्टेशन अगवाणी ताईं पूगग्या। आपरे काम काज सू छुट्टी ले'र व तीन दिन र मद्रास प्रवास मैं लगातार साथ र'र जिण आत्मीयता अर सहदय ता रा परिचय दियो, वो आज तक याद क'र हरख हुव। दिन र तीसरे पर नगर भ्रमण न नीसरया। सबसू पला म्यूजियम देखण न गया। मद्रास म्यूजियम एक विशाल पुरातत्व संग्राहलय है। ईं रा च्यार हिस्सा है। च्यारा खातर अळायदा भवन है। एक भवन मैं प्राचीन सभ्यतावा रा अवशेष है। चाल चेर पल्लव, राष्ट्रकूट अर विजयनगर साम्राज्य आद रा पुराणी कलात्मक चीजा रा चोखो संग्रह है। देवी दवतावा री जूनी मूरतया भी खासो सख्या म है। दूज भवन मे प्राचीन चित्रा रो भडार है। इणा म द्रविड संस्कृति अर जीवन रा सव पहलू–रहन सहन, वषभूषा परिधान आभूषण, मेळा त्योवार, राजावा अर सामता रो भोग विलास म हुर विभिन्न रगा अर आकारा मैं चित्रित है। कई नामी गरामी

चितकारा रा चित्र भी ज्या मैं सामिल है। तीज भवन मैं दवी देवतावा मैं पाथसारथी, गुणेमानियम विष्णु वरदराज अर शिव री मूर्त्यां है। अ मूर्त्यां पीतल ताम या अष्ट धात सू बण्योडी है। नटराज री भात भात री मुद्रावा री मूर्त्यां सवगू वेगी है। चौथ भवन म द्रविड लिपि मैं लिखयोडी हस्त लिखित प्राचीन पोथ्या सगीत रा अनक प्रकार रा वाद्य यत्र पुराणा शस्त्र और रण क्षेत्र र राजावा री तसवीरा आद है। सग्रहालय मैं हवल मछली रा ककाळ तरह तरह रा साप अजगर जगली जिनावरा रा मसाले भरया सिर हजारू वरस पुराणी मानव खोपड्या अर ककाळा रा अवशेष भी मौजूद है। विविधता री दीठै सू हर भात री जूणी ऐतिहासिक सामग्री अठ दीस।

इण र पाखै चौथ पहर राजगोपालाचार्य री याद मैं बण्योडा स्मारक देख्यो। राजाजी तमिला रा ईनो देस र बडे आदर जोग नताया म हा। उणा री सूझ बूझ अर कूटनीतिज्ञता री बडाई आखी दुनिया करती। इण कारण ई आन स्वतत्र भारत रो पलो गवरनर जनरल बणायो गयो। राजगोपाल चाय सू सम्बन्धित चित्र, उणा री लिख्योडी पुस्तका आद रो चोखो सग्रह अठ है। इण सू थोडी ई दूर गाधी स्मारक भी देखण जोग अर आदर जोग है। इण रो सुद्र गली मैं मदिर दाई निरमाण हुयो है। गाधीजी सम्बन्धित दुल्भ चित्र अठ है। स्मारक मैं बठण अर कीतन करने री व्यवस्था भी है।

दूज दिन सप घर देखण न गया। साहूकार पट सू 5 6 मील दूर आ ज्याग्या है। सापा रा इसो दुल्भ सग्रह बीत कम जाग्या मिल। तरह तरह रा छोटा बडा जहरीला अर बिना जहर रा साप अठ है। आ रा सकडू प्रकार अठ है। आ न पूरे प्राकृतिक वातावरण म राखणे रा पूरो प्रयत्न अठ हुव। सापा न जाली अर काच र घेरा म रास। रूखाळा ई बात रो ध्यान राख क आन सलानी नी छेडे ना ई कोई चीज खुवाव। पूठा माहेश्वरी भवन आ र भोजन विसराम आद र उपरात साय मद्रास समुद्र तट र अवलोकन तांई गया। इण समुद्र तट म केई विसेसतावा है जको दूजी जाग्या नी है। एन ता वम्बई कलकत्त जिसा बडा सरा दाई अठ समुद्री किनारे उपर निजी

इमारता, काठी, बगला आद घणाडा कोनी। समुद्री किनारे र सारे सारे लम्बी सीधी सडक बव। सडक र दूज कानी सरकारी कार्यालय अर सावजनिक विशाल इमारता री इकसार ऊची अर भव्य पात दीस। दूजी विशपता आ है क सडक पर जाग्या जाग्या साहित्यकारा, कलाकारा अर देश भक्ता री विशाल मूर्त्या ऊच वडे खम्भा माथ खडी करयोडी है। विद्या अर मानव विभूत्या र प्रति औ सम्मान आपाणी सस्कृति री उच्चता रो द्योतक है। मद्रास र समुद्र म सदा ऊची लहरा हिलोरा लेती रवे। इण रो गजन 3 4 किमी दूर मू ई सुणीजण लाग। सिझ्या र वखत सलान्या अर स्नान री आणन्द लेण आळा रो मेळो सा मॅडयो रव। खाणे पीणे री चीजा, गुब्बारा खिलौणा रा खोमचा दुकाना री भीड भी हो जाव। आगले दिन प्रात पाथ सारथी रा मदिर देख्या। भगवान कृष्ण रो दक्षिण मे औ नाम इ ज्यादा परसिध है। मदिर दक्षिण शली रो है। मुख्य द्वार पत्थर रो है। प्रदक्षिणा री बरामदो खासो बडा है। पुजारी अर भक्त जन माथ पर आडा त्रिपुण्ड लगाव। मृदग अर शहनाई सू मिळता सा वाद्य भक्त जन प्राय बजाता रवे। दोपहर र बाद रो समय बाजार सू चादी रा छाटा माटा आभूषण खरीदण अर परिचिता सू मिलण म लगायो।

मद्रास सू रेल द्वारा काचीपूरम गया। भारत री सात पुरिया मैं– अयोध्या, मथुरा काशी काची अवति अर द्वारिका न बडा पवित्र धाम गिण। मद्रास सलम रेल माग माथ मद्रास सू 71 कि मी दक्षिण पश्चिम म आ मदिरा री नगर बस्योडी है। स्टेशन नडे एक धमशाळा मे ठहरण री जाग्या मिलगी। अठ धमशाला न चौलटी कव। इण रा प्राचीन नाम काचन पुरी हो। पल्लव राजावा र काल म विशेष रूप सू महन्द्र वमन अर मामल्ल नरसिंह वमन र समय अठ अनक सु दर मदिरा रो निर्माण हुया। काची ज्ञान अर दशन शास्त्र रो भी बडो केन्द्र रयो है। आदि शकराचाय रामानुजाचाय अप्पर अर भिक्षु बोधिधम आद रो आ लीला भूमि रयो है। कौटिल्य, दिङनाग, दण्डी अर भारवी जिसा नीतिज्ञ अर विद्वान भी अठ ई वसता हा।

धाचीपुरम र मन्दिरा मैं कलाशनाथ रा मदिर स सू जूणो है। यारवी सदी म पल्लव स्थापत्य कला म वण्यो ओ अनागा मदिर है। पल्लव शिल्प रो एक और मदिर बकुठनाथ परुमाल भी वास्तु कला रो बजोड नमूनो है। इण म विष्णु री भव्य प्रतिमा है। ओ नदिवमन द्वितीय र बणवायोडा है। नगर र बीच म देवी कमाक्षी रो मदिर है अर सवतीथ र किनारे विश्वश्वर मदिर है जक म क्द आदि शकराचाय नित्य रूप सू पूजा अराधना करता। व्यास पूजा र दिन कामाक्षी मदिर मैं थित शकराचाय रा मूरती री शोभा यात्रा इण मदिर तक आव। विजय नगर र राजा कृष्ण देव राज री महायता सू वण्यो एकाबरनाथ र मदिर रा गोपुर दाक्षिण र गोपुरा म सबसू ऊचो अर देखण जोग है। इण री ऊचाई 190 फिट है। आधुनिक द्रविड शली र मदिरा म अठ रा वरदराज स्वामी रो मदिर बौत उल्लेख जोग है। इण म एक सुदर मडप अर सौ खम्भा रो पत्थर री खुदाई र सोवणे काम सू युक्त हाल है। एक जाग्या चट्टान न काट र साक्ळ बणाई है जक्ने न देखता ई रवा। इण रो गोपुरसात तल्ला रा है जक री ऊचाई सौ फुट है। *विजय नगर शिल्प रा तगडा जमूनो है।* इण मदिर र अलावा भी शिव काची विष्णु काची अर जन काची रा अनेक मदिर भव्य अर कलापूण है। अठ तक कवे क पल्लव काल म कद अठ 1008 शिव मदिर अर 108 विष्णु मदिर हा। वास्तव म ई काची आपरी प्रतिभा र मूनीव धम आध्यात्म रो एक केन्द्र ही है। आज व्यवसाय री दीठ सू बी भारत म इण रो महत्वपूण स्थान है अठ री रेशमी साडया विश्व प्रसिद्ध है। अ हाथ सू बणीज।

आगले दिन मदुर री गाडी पकडी। करीब दस घटा मे सेलम हुता मदुरा पूगग्या। मारवाडी धमशाळा म टिक्या। मीनाक्षी मदिर न मदिरा रो मदिर कणो ठीक होसी। इण मैं मीनाक्षी अर सुन्दरश्वर (शिवजी) रा दो विशाल मदिर हजारू आदम्या र एक साथे स्नान री व्यवस्था आळा तीन वडा सरोवर हस्त कला मूर्त्यां, चित्रा अर प्रसाद पुष्प वेचणिया री पचासू दूकाना अर एक वडो सग्रहालय है। अतो बडो विशाल अर भव्य मदिर कोई दूजो नी है। इ र चार दिशावा मैं वण्या गोपुर आभो छूता सा लाग। दक्षिण र शिल्प चित्र मूर्ति अर वास्तु कला रो सगम है ओ मदिर। इण मदिर रा

निर्माण 10 वी सू 12 वी सदी र बीच हुया बतावं। कवत है क मीनाक्षी देवी केई पाड्य राजा री कन्या ही। जिण आपरी भक्ति र परभाव सू शिवजी रा वरण कर्यो। इण खातर ही मंदिर र एक भाग म मीनाक्षी अर दूज म शिव रा मंदिर है। मंदिर री विशालता न देखता लाग क इण र बणाणे म सैंस्यू बरस लाग्या होसी। मंदिर री बारली परिक्रमा रा भींत किले री ऊंची दीवार दाइ है। मूळ मंदिर सैंकडू खम्भा माय खडया है। खम्भा पत्थर रा है, अर इणा माथ खुदाई रो अद्भुत काम है। मंदिर र बारल चहरे माथ मात देवी अर पित देव री मूरत्या अर बार उपमया गो मकडू मानवाकार मूर्त्या बणायोडी है। एक खानी केई राजावा री मूरत्या भी है। हो सक निरमाण मैं सहयोग र प्रतीक रूप मैं अ बणाई जी हुव। मंदिर र बारले फरे म एक खम्भा इसैं पत्थर रा बण्या है क लकडी रै प्रहार सू संगीत रा स्पष्ट ध्वनि कर। दरसनार्थी बार बार बान बजा'र देखे अर आणन्द लव। नायक वश र राजा तिरुमल इण र विस्तार मैं काफी योग दियो हो।

मदुर नगर वागइ नदी किनारे बस्योडो है। ओ दक्षिण भारत र प्राचीनतम नगरा मैं गिणीज। इण स्थान पर 2 हजार बरसा तक सभ्यता अर सस्कृति रा लगातार अटूट विकास हुता रयो है। मूर्ति भंजक इस्लामी आक्रमणकारी अठ तक नी पूग सक्या। अठै री तमिल अकादमी मैं भारत भर सू पढणन विद्वान आव अर अठ र पजीकृत छात्रा रा स्तर ऊंचो मानीज। दक्षिण भारत र धार्मिक रीति रिवाजा र अध्यता वास्त मदुर सू आछी जाग्या और मानी। आज भी ओ शिक्षा, व्यापार उद्योग, कला अर साहित्य रो केन्द्र है। जनसख्या री दीठ सू मद्रास र बाद इ रा दूजा स्थान है। मदुर र आस पास र क्षत्रा म भी तिपरण कुदरम (8 कि मी) थो विरली पुत्तूर आदि तीरथ है। जठ समय र अभाव र कारण म्है नी जा सक्या।

मदुर सू एक रास्तो पूरब कानी ठेठ समुद्र तक रामेश्वरम ताईं जाव दूजा तिरुननवल्ली हूर कन्याकुमारी ताइ। मदुर सू सिधा री सवारी गाडी सू चाल्या जकी भार म 3 बज्या रामेश्वरम पूगी। रामेश्वरम सू थोडी पैला मडपम नाम री जाग्या है। मडपम अर रामेश्वरम र बीच समुद्र रा पाणी 3 4 कि मी ताइ फल्योडा है अर रल लाइन पुल पर हू'र इ र ऊपर कर

निकल। ओ रल माग माथ देश रा सबसू बडा पुळ है। ओ सू गुजरणो एक रोमांचकारी अनुभव हो। मदुरै सू रामेश्वरम 164 कि मी दूर है। दक्षिण भारत रै तीरथां मैं गरमू घणो मानतो है रो है। रामेश्वरम रो समुद्र एकदम शांत है। अठै समुद्री लहरां नइ चाले अर पाणी रो उछाळ नी हुवै। राम लंका विजय रै समय अठै ई सेतु बांध्यो हो। मन मैं विचार हुवै के शायद वो डर सू ई उद्दत रूप धरतो ओ शांत करतो हुसो। इण शांत समुद्र मैं स्नान करणे मे खूब आनन्द आयो।

रामेश्वरम मंदिर सामैं ही विद्यमान है। अठै 22 जल कुण्ड है। भक्तां री मान्यता है के इण कुण्डां मैं स्नान करणे सू मनुष्य रा पाप कट जाय अर मुक्ति मिले। इण कुण्डां रा नाम देश री पवित्र नदयां रै नाम पर है ज्यू के गंगा, यमुना गोदावरी कृष्णा कावेरी तुंगभद्रा आद। देश री एकरसता अर सार्वभौमिकता रा अनुभव करणे रो सिता अनूठो भाव अठै रै लारै छिप्या है। राष्ट्रीय एकता री इण साकळ मे एक कडी आ वी है के बद्री-केदार री गंगा रै जळ सू रामेश्वर जी रै शिव लिंग रो अभिषेक यात्रा री सम्पूर्णता मानीजै। प्राचीन भारत रा ऐ धार्मिक विश्वास ही नदियां तांई जाति, भाषा अर क्षेत्र री अपार भिन्नता रै उपरांत भी देश न एकजुट राख सक्या अर सम्पूर्ण हिन्दू जाति मैं सांस्कृतिक एकात्मकता रो कद अभाव नी हुयो। इण कुण्डां मे स्नान करयो। समुद्र रै पाणी रै लवण प्रभाव सू भी मुक्त हुया। रामेश्वरम रै मंदिर रा गोपुर काफी ऊंचा है। दूर सू ई दीसण लाग। मंदिर रै च्यारू मेर ऊंची चारदीवारी है। खम्भा माथ अदभुत कारीगरी रो काम है। मंदिर रा गलियारा ससार रै कोई भी दूजै मंदिर सू लम्बा अर चौडा है। केवत है के रावण वध रै बाद राम इण ठौर ही शिव री पूजा कर रै ब्रह्म हत्या रै अपराध सू छुटकारो पायो। राम भक्तां रो ओ मानीतो तीरथ गिणीजै।

रामेश्वर रै मंदिर सू 1 कि मी पूरब मैं समुद्र तट पर एक प्राचीन छोटो मंदिर है। इण न राम झरोखो कवे। लंका प्रयाण सू पैला राम चन्द्र जी अठै डेरा जमायो। आ भी कवे के हनुमान जी रामाज्ञा सू अठै सू ई छलांग लगा र लंका गमन करयो। नल नील रै द्वारा सेना पार कराण वास्ते सेतु बंध री बात भी इण सू जोडै। भारत रै एक अंतिम कूणे मैं स्थित च्यारू धामां म सबसू अळगे अर पावन धाम रा दरसणां सू असीम शांति अर सुख रो अनुभव

हुया। उण दिन ही गाडी सू वापस मदुर पूज'र यात्रा र अतिम पडाव कन्या कुमारी री तयारी करी।

मदुर सू कन्याकुमारी जाण वास्ते बीच मे तिरूनेलवेली रो जक्शन आव। अठ सू गाडी त्रिवेन्दरम वास्ते पश्चिम मैं मुड जाव। दूजो रेल मारग नागर कोली तक जाव। नागर कोली रेल रो दक्षिण रो अतिम स्टेशन है। कन्याकुमारी अठ सू 18 कि मी दूर है। अठै सू बस मैं जाणो पड। तिरूनेलवेली मैं पला गाडी बदलणी पडती ही। आजकल तो मदुर सू सीधे नगरकोली पूच है। बया क गाडी मैं वखत वाकी हा म्हू लोग तिरूनलवली र प्रसिद्ध निल्लपर मदिर देखण न गया। स्टशन सू पूरब मैं 2 फलाग दूर 7 वी सदी रो औ अत्यन्त प्राचीन अर भव्य मदिर है। विष्णु री शेषसायी मूरती अठ पौढे। गलरी री भीता मैं पत्थर री चोखी मूर्त्या मड्याडी है। मूरर्या माथ रग भी कर्योडो है। दीवारा माथ द्रविड लिपि रा लेख है। नटराज अर दुर्गा री मूर्त्या कलात्मक है। सगळो मदिर मजबूत पत्थर रा खम्भा माथ खडयो है। अठ भी एक खम्भै मैं मदुर दाई लकडी सू ठोकणे सू सगीत री आवाज नीसर। मदिर र गलियारे म 8। मूरर्या ह जिण मे नटराज री ताम्बे री मूर्ति अर शिव री पत्थर री मूरती काफी सुन्दर ह। इण मदिर म रावण री मूरती भी विद्यमान है। बाग्ले गलियार सू मायले गलियारे म जाव। मायले गलियारे म विष्णु मदिर अर नौ ग्रहा रो सुदर मदिर है। गोपुरम रै कनै फूल पत्र पुष्प प्रसाद अर मिठाई आद री दुकाना है। इण तरा दक्षिण मैं छोटा छोटा कस्वा म भी बोत प्राचीन अर भव्य मदिर है।

तिरुनेलवेल्ली सू नागरकोली पूग्या। अठ सू कन्याकुमारी पूचा। चावळ र खता नारियल ताडी अर खजूर र दरख्ता र बीच सडक चाल। उण दिन आकाश मैं बादळवाई छायोडी ही। समुद्र र कन हूण सू वातावरण म ठडक ही। 20 25 मिनटा मैं विवेकानन्द आश्रम री एक विशाल धमशाळा म पूग्या। व्यवस्थापक सू मिल र मात्र 2 र म साफ सुथरो वडो कमरो ठहरण ताई मिलग्यो। भारत रा अतिम किनारा कन्याकुमारी है। आ बाई जाग्या है जठ भारत र दक्षिण म हिन्द महासागर अरब सागर अर बगाल री खाडी मिल। स्वामी विवेकानन्द रो सबसू प्रिय स्थल जठ समुद्र र बीच किनार

सू नजीक। किलो मीटर दूर एक विशाल चट्टान है, जिण माथै बैठ'र विवेकानंद साधना करता। विवेकानंद आश्रम सू समुद्र 2 किलो मीटर दूर है। जिण टापू नुमा चट्टान पर स्वामी जी बिराजता आज बठै अत्यंत भव्य विवेकानंद स्मारक है। आश्रम सू समुद्र तट जावण खातर निःशुल्क बस सेवा रो परबंध है। अर समुद्रतट सू मोटर बोट मैं बैठ'र स्मारक ताईं जाणै री व्यवस्था है। चट्टान माथै ऊंची सीढ्यां चढ'र ऊपर बणे मंदिर में पूग्या। मांय स्वामी विवेकानंद जी री अष्टधातु री सुंदर आदम कद प्रतिमा ऊंचे चबूतरे पर प्रतिष्ठित है। मूर्ति रै चेहरे पर सौम्यता, गाम्भीर्य अर शांति रा अनुपम भाव बिराजै। इण मंदिर रै नीचे गर्भगृह में साधना वास्ते एक नीरव अर शांत सुंदर बडो कमरो है। मंदिर रै सामै विशाल खुले प्रांगण रो छोटी चार दीवारी सू घिर्‌यो विशाल आहतो है। अठै सू तीनूं समुद्रां रै मिलाण वाळे अंतरीप रो अनूठो दृश्य दीसै। औ स्थान आत्मिक शांति री इसी अनुभूति करावै जिकै नै शब्दां सू वर्णित नीं कर सका। मार्कोपोलो और टालेमी जिसा प्रसिद्ध यात्र्यां इण स्थान री आपरै यात्रावृत्तान्त में खूब प्रशंसा करी है। विवेकानंद स्मारक सू सूर्योदय अर सूर्यास्त रा मनोहर दृश्य दीसै।

कन्या कुमारी मन्दिर नाम रो ईं पवित्र मन्दिर है। पुराणां री कथा रै मुताबिक पर्वतराज हिमालय री पुत्री पार्वती रो शिवजी सू परिणय अठै इ हुयो हो। आज अठै कन्याकुमारी (पार्वती) रो मंदिर है जिको महत्व पूर्ण तीरथ मानीजै। सूर्य दर्शन स्थान अर स्नान घाट भी अठै रा आकर्षण है। विवेकानंद आश्रम में प्रदर्शनी हाल में नर पुंगव स्वामी जी रै जीवन सम्बन्धी विविध चित्रां अर उण द्वारा लिखित ग्रंथां रो संग्रह है। आज रै संदर्भ में इण रै माध्यम सू स्वयं विवेकानंद री वाणी फेर मुखरित हुती सुणीजै। दक्षिण भारत रा अनेकूं प्राचीन मन्दिर अर गुजरात रै सोमनाथ सरीखा दूजा मंदिर थान सैकडूं पीढ्यां सू घणो ज्ञान प्रदान करसी अर जातीय इतिहास रो आंतरिक सत्ता नै समरपण रो दीठ देसी। देखो इण मंदिरां माथै सैकडूं हमला अर सैकडूं पुनरुद्धार रा चिन्ह विद्यमान है। इण मंदिरां रा भग्नावशेषां मांय सू सदा उद्धार हुता रया अर ए सदा नुवा अर सुन्दर बणता रैया। औ ईं आपणै राष्ट्रीय मन अर राष्ट्रीय जीवन प्रवाह रो सच्चो स्वरूप है।



**अमरनाथ कश्यप**

| | |
|---|---|
| जलम | 23 मार्च 1935 बीकानेर राजस्थान |
| शिक्षा | एम ए इतिहास, हिन्दी एल एल बी |
| लेखन | सन् 1962 सू पत्रकारिता सू जुड्या (पटिओट), हिन्दी अर राजस्थानी री भिन्न भिन्न विधावा री पत्र पत्रिकावा म लेख आकाशवाणी सू चिंतन, कहाणी अर वार्तावा रो नियमित प्रसारण। |
| सम्पादन | अरुणिमा' सविद अर रचना |
| प्रकाश्य | बीच सफर के मुकाम समय की दस्तक |
| सम्प्रति | विभागाध्यक्ष<br>स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,<br>रामपुरिया महाविद्यालय<br>बीकानेर |